24-130

अप्सरा यक्षिणी रहस्य खंड

(सिद्धि सफलता विधान एवं गोपनीय साधना सूत्र)
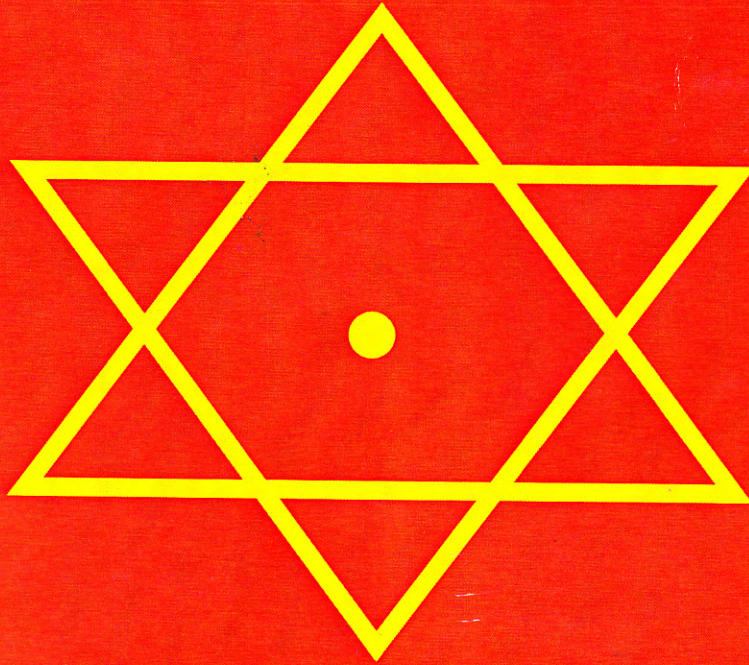
**** निखिल परा विज्ञान शोध इकाई ****

मनोद्गार ....

तंत्र और सौंदर्य एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं साधक जैसे जैसे साधना जगत में प्रवेश करते जाता है,वैसे वैसे उसे साधना जगत की गूढता का भान भी होते जाता है | हाँ ये सत्य है की तंत्र मात्र दर्शन नहीं है,अपितु एक विचार धारा है जो साधक को सतत क्रियाशील होने के लिए प्रेरित करता है | और जब इस विचारधारा से प्रेरित होकर साधक क्रिया पद्धति का सहयोग लेता है ,तब वो ना सिर्फ विलक्षणता की प्राप्ति करता है अपितु ब्रह्मांडीय रहस्यों का भी उसे ज्ञान होने लग जाता है| सतत किये जाने वाले मंत्र जप उसके कर्म बंधनों को शिथिल करते जाते हैं और तब विभिन्न चक्रदलों को स्पर्श कर मन्त्र वर्ण दीप्त होते चले जाते ही हैं ,और उनकी दीप्तता साधक को भी दिव्यत्व की प्राप्ति करा देती है | जब बात आती है तंत्र में सफलता प्राप्त करने की तो ये कोई मिथ्या शास्त्र नहीं है,बल्कि विज्ञान की सीमाओं से पार ज्ञान का वो क्षेत्र है,जहाँ कुछ भी असंभव नहीं है|

ग्रन्थ विषय से मात्र परिचित कराने का कार्य करते हैं,सफलता प्रदान करने के रहस्य और आशीर्वाद के प्रदाता मात्र और मात्र गुरु ही हैं | हम जिन षट्कर्मों के बारे में अध्ययन करते हैं,मात्र उन्हें तंत्र की संज्ञा देना उचित नहीं है,अपितु तंत्र के पाँच पीठों यथा–

अरण्य पीठ

शुन्य पीठ

शमशान पीठ

शव पीठ

श्यामा पीठ

को सफलतापूर्वक पार कर लेने के बाद ही तंत्र का प्रवेशद्वार साधक के लिए खुलता है **साधना जीवन को पतित करने वाले जितने भी प्रकार के भय हैं,काम का भय उनमे सबसे खतरनाक है** | गतिमान साधना से उत्पन्न ऊर्जा को प्रकृति की नकारात्मक शक्तियां चुटकी में बाह्यगामी करवा देती हैं,ब्रह्मचर्य का खंडन होते ही खेल खत्म,कभी स्वप्नदोष के माध्यम से तो साधना काल में कामभाव की तीव्रता की वजह से बिंदु आसन पर ही स्खलित हो जाता है| पारद विज्ञान के मर्मज्ञ जानते हैं की शरीर में पारद और गंधक का क्रामण तभी संभव हो पाता है,जब वीर्य एक निश्चित काल तक स्खलित नहीं हो | विवाहित जीवन को जीने वाला व्यक्ति धीरे धीरे काम भाव का नियमन करना भी सीख जाता है| एक रसायन शास्त्री के रस कर्मों में सहयोग देने के लिए काकिनी अनिवार्य होती थी| तंत्र की उच्च साधनाओं में सफलता के लिए भैरवी की आवशयकता अनिवार्य होती हैं,जो साधक के लिए सदैव मातृरूपा होती हैं|

अप्सरा यक्षिणी जैसे तीक्ष्ण सौंदर्य शक्तियां साधकों के लिए भैरवी रूप में ही सहायक होती हैं जो की साधक को काम भाव का नियमन कर बिंदु की उर्ध्वगति कैसे करनी है,ये सिखाती हैं | इनका साहचर्य समस्य साधक को भी असामान्य सफलता दिला देता है| इनका स्पर्ष साधक की मलिनता का नाश कर उर्ध्वगामी भावनाओं का साधक में संचार करता है| और जब साधक उर्ध्वगामिता की कला युक्त हो जाता है,तो उसका बिंदु वीर्य से ओजस् के रूप में परिवर्तित हो जाता है तब साधक,वासना देह से उठकर मनोमय शरीर तक पंहुच जाता है | उच्चस्तरीय साधनाओं में सफलता प्राप्ति के स्वप्न साकार होने लगते हैं,और साधक मनुष्यत्व से देवत्व तक की यात्रा पूरी कर लेता है| ये साधक के लिए हानिप्रद होती हैं,इस भ्रान्ति को मिटाने के लिए ही इस लघु ग्रन्थ की रचना की गयी है |

अप्सरा यक्षिणी रहस्य खंड

इस ग्रन्थ के संकलन हेतु मैंनेउन लेखों और विचारों को एकत्र कियें हैं,जो की मेरे **प्राणाधार सदगुरुदेव** ने समय समय पर मुझे तथा अपने गृहस्थ और सन्यासी शिष्यों को प्रदान किये थे, और ये मुझ अकिंचन के ऊपर उनकी महती कृपा ही है की जिन्हें उन्होंने ये ज्ञान दिया था वे सभी बिना किसी स्वार्थ के इस ज्ञान को मुझे देने को तत्पर भी हो गए| **बाबा जी,सौंदर्या माँ,स्वामी प्रज्ञानंद जी, काली दत्त शर्मा जी,पंचमी माँ,भैरवी माँ,धूर्जटा माँ,बंगाली माँ,शिवप्रिय स्वामी जी** और **स्वर्गीय अरुण कुमार शर्मा जी** का मैं आभारी हूँ की उन्होंने इन तथ्यों को देनें में कोई कृपणता नहीं बरती और मेरी जिज्ञासा का तब तक समाधान करते गए,जब तक मैं पूरी तरह संतुष्ट नहीं हो गया| **अनुराग सिंह गौतम भाई**और मेरे अनुज **रघुनाथ निखिल** जी के सहयोग के बिना मेरा ये कार्य पूरा नहीं हो सकता था| मैं आभारी हूँ मेरे भाइयों का जिनके सतत परिश्रम के कारण ये ज्ञान एक अमूल्य कृति के रूप में आप सब के सामने है|

हमने इस लघु ग्रन्थ में बहुत सी साधनाएं नहीं दी हैं क्योंकि यक्षिणी अप्सरा की साधनाएं तंत्र के विभिन्न ग्रंथों में प्रचुरता से दी हुयी हैं| हमनें मात्र उन सूत्रों और विचारों का संकलन किया हैजो इस विषय में सफलता प्रदायक हैं और जिनका प्रयोग कर साधकों ने सफलता पायी है| मैं एक बार फिर से अपने सदगुरुदेव के चरणों में अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ की उनके आशीर्वाद से ही मुझे ये ज्ञान मिल पाया और मैं उनके श्री चरणों में प्रार्थना करता हूँ की मेरा ये परिश्रम मेरे भाई बहिनों और इस विषय के साधकों के लिए सफलता प्रदान करने वाला हो| आप सभी अपने विचारों से जरुर अवगत करायें|इसी आशा के साथ...

"निखिल प्रणाम"

सदैव से आपका ही

"आरिफ खान निखिल"

लेख - तालिका

1. अप्सरा यक्षिणी परिचय

2. संस्कारित और विशिष्ट संस्कारित माला प्रक्रिया

3. यन्त्र संस्कार प्रक्रिया

4. दुर्लभतम लघु अप्सरा साधना विधान

5. पूर्ण सौंदर्य प्राप्ति हेतु रम्भा अप्सरा प्रयोग

6. आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु उर्वशी प्रयोग

7. तिलोत्तमा अप्सरा प्रत्यक्ष प्रयोग

8. अत्यंत दुर्लभतम जैन तंत्र पद्धति युक्त यक्षिणी साधना विधान

9. अप्सरा यक्षिणी साधना मे निश्चित सफलता प्राप्ति हेतु परम दुर्लभ गोपनीय रहस्य

10. पूर्ण यक्षिणी अप्सरा सायुज्ज्य षष्ठ मंडल

11. धनदा रति साधना रहस्य

12. मनोवांछित अप्सरा सिद्धि प्रयोग

13. यन्त्र चित्र

14. कठिन शब्द अर्थ

अप्सरा यक्षिणी परिचय ..

"सत्यम शिवम सुन्दरम" यह भारतीय संस्कृति का एक आधार भूत वाक्य मे से एक हैं.जीवन मे सौंदर्य तत्व को किसी भी तरह से नकारा नही जा सकता हैं,आज हम सब के जीवन से सौंदर्य तत्व कहीं खो सा गया हैं आज जिसको सौंदर्य के रूप मे परिभाषित किया जाता हैं या जिसे हम सौंदर्य शाली कहते हैं ,वह तो कितना सत्य हैं यह तो सभी जानते हैं . नकली सौंदर्य पदार्थो पर आधारित जिसे हम सौंदर्य कहते हैं वह तो किस आधार पर हैं यह भी सभी को भली भांती मालूम हैं पर जो भी आज समाज मे विसंगतियाँ पायी गयी हैं या आ रही हैं वह भूलभूत रूप से सौंदर्य तत्व को न समझना या उसको सही रूप से हमारे जीवन मे स्थान न मिलना या हम ही सौंदर्य को नही समझते हैं यही कुछ मुख्य कारण होते हैं

जितनी भी परिभाषाएं मुख्यता सौंदर्य को लेकर होती हैं उनके मूल मे कोई न कोई आकृति होना चहिये क्योंकि बिना कोई आकार के कैसे सामान्य व्यक्ति इन बातों को समझ सकेगा .दिव्य सुन्दरी या दिव्यता मे समाया सौंदर्य क्या हैं वह तो उच्च कोटि के योगियों को ही ज्ञात हैं पर सामान्य मानव को कोई न कोई प्रतीक चाहिये .इस हेतु नारी को ही सौंदर्य या उसके देह को ही सौंदर्य का प्रतीक माना गया हैं . इस कारण कवियों की कल्पना मे जिस नारी शरीर का वर्णन या महाकवि काली दास या अन्य कोई भी सौदर्य पर कविता लिखने वाले लेखक के मानस मे जो सौंदर्य होता हैं वह या उस जैसा पाया जाना आज तो संभव नही हैं.

निश्चय की जब बात नारी देह के सौंदर्य की होगी तो उसके वर्णन को श्लील या अश्लील रूप से देखा नही जा सकता हैं यह तो देखे जाने वाले व्यक्ति का भाव होता हैं .यह बात तो निश्चित हैं की जब भी अप्सरा या यक्षिणी का सौंदर्य की बात आएगी तो निश्चय ही उनके रूप को लेकर जो भी लिखा जाए और उसे साधक या साधिका किस रूप मे लेते हैं वह उनके मानस

,और उनकी विचार धारा पर कहीं जयादा निर्भर करता हैं .स्वामी आदि शंकराचार्य ने सौंदर्य लहरी मे भगवती माँ पार्वती और गोस्वामी तुलसी दास जी ने रामचरितमानस मे भगवती माँ सीता जो का जो भी रूप वर्णन किया हैं उसे हम सांसारिक रूप से किसी भी शब्दों या मानसिकता से नही बाँध सकते हैं .क्योंकि जब बात रूप और सौंदर्य को किसी से भी तुलना करने की होगी तो कुछ न कुछ प्रतीक तो लेने ही होंगे .साधक /साधिका जब भी किसी भी यक्षिणी अप्सरा के सौंदर्य की बात पढते हैं तो उन्हें अपना मानस इस हेतु स्पस्ट होना चाहियेन की किसी विकृत्ता की दृष्टी रखना चहिये ,जब बात सौंदर्य की हो जीवन के आवश्यक पुरुषार्थ-काम भाव की हो तो एक स्वस्थ दृष्टी साधक के पास होना ही चाहिये .

पर इन सौंदर्य की परिभाषा को पूर्णता देने के सक्षम अगर किसी का सौंदर्य हो सकता हैं तो वह अप्सरा,यक्षिणी , किन्नरी ,योगिनी आदि का कहा जा ता हैं ,पर इन सौदर्य की जीवित प्रतिमाओं कोजिनमे निश्छलता भी हैं, कैसे प्राप्त किया जाए . यह तो सबसे बड़ा प्रश्न हैं , व्यक्ति की दृष्टी मे शारीरिक सुख ही शायद सबसे बड़ा हो सकता हैं और इसे हेय दृष्टी से भी नही देखा जाना चहिये अगर यह नैतिक सामाजिक और प्रचलित कानूनी नियमों के अंतर्गत उच्क्ति हो .पर इसके अलावा भी सुख के प्रतिमान हो सकते हैं, हर सुख को केबल शरीर के धरातल मे ही नही देख जा सकता हैं.मित्र ,सखा , सखी, माँ बहिन के रूप मे भी जो स्नेह रूपी प्रेम रूपी सौंदर्य साधक या साधिका को प्राप्त होता हैं वह भी अपने आप मे विलक्षण होता हैं .हाँ यह सत्य हैं की साधक द्वारा इनको प्रेयसी के रूप मे सिद्ध करना कहीं ज्यादा आसान होता हैं और तंत्र ग्रन्थ इसका अनुमोदन भी करते हैं. क्योंकि प्रेयसी ही बिना आप से कुछ की भी बदले की इच्छा करे आपको प्रसन्न चित्त और आपके खुशी के लिए लिए सब कुछ कर सकती हैं.

इस लिए इनसे सबंधित साधनाए हमारे ग्रंथो मे प्रचुरता से लिखित हैं वर्णित हैं.वह इसलिए की काम तत्व की मर्यादा और उचितता साधक वर्ग समझे और इसको हेय न समझ कर उचित रूप के इसका उपभोग मर्यादित रूप से करते हुये जीवन मे चारों पुरुषार्थो को अनुभव करे और अपने जीवन को एक उच्च अर्थ दे.

उपनिषदो ने इस बात को स्पस्ट किया हैं की जब तक भोग भी पूर्ण न हुआ हो तब त्याग की बात कहाँ उचित हैं.एक अपूर्णता से पूर्णता कैसे बाहर निकल सकती हैं पूज्य पाद सुरुदेव जी ने अपनी एक रचना मे स्पस्ट किया की नर और नारी का स्वाभाव गत आकर्षण एक दूसरे के प्रति रहता ही हैं और यह युवावस्था मे कहीं और ज्यादा भी हो जाता हैं.तंत्र निरर्थक और जबरजस्ती संयम का विरोध मे हैं वह सारी क्रियाओं को स्वीकार करते हुयेउनके व्याप्त दिव्यता को लक्ष्य रखता हैं ,क्योंकि जब सारा जगत एक उसी दिव्य पूर्णता से उत्पन्न हैं तब दिव्यता कैसे न सभी पदार्थ मे होगी.

और आगे सदगुरुदेव समझाते हैं की जिस के पास अगर कुछ हैं तो उसे ही तो त्याग और संयम सिखाया समझाया जा सकता हैं .जिसके पास भोग ही न हो तो उसे कैसे संयम और अन्य इससे सबंधित बातें/क्रियाए सिखाया जाए या उनका क्या अर्थ होगा .

तब हम आज इस आधुनिकता मे पूर्णतः डूबे हुये अन्धकार युक्त युग मे कैसे निश्छलता, मधुर स्नेह , प्रेमपूर्ण वार्तालाप .माधुर्यता ,उत्साहता ,उमंगता आदि का अनुभव कर सकते हैं.क्योंकि जब इन तत्वों का हमें खुद ही अनुभव नही हैं, हमारे पास ये हैं कहाँ ? तब हम किसी दूसरे जो कैसे दे भी सकते हैं, तो इन्ही बातों को ध्यान मे रखते हुये तंत्र आचार्यों ने इन साधनाओ का का निर्माण किया ,ये उनकी उच्चप्रज्ञा का परिचायक हैं .अनेको ग्रंथो मे कुछ कुछ अप्सराओ और यक्षिणियो का विवरण मिलता हैं उन्ही मे से कुछ का सरल परिचय आप सभी के लिए.

जहाँ अप्सराये देव राज इन्द्र के आधीन हैं और रूप यौवन प्रधानता लिए हुये हैं नृत्य आदि क्रियाए मे पारंगतता लिए होती हैं वही दूसरी ओर यक्षिणी यक्षराज कुबेर के आधीन हैं स्वरुप मे अत्यधिक भोलापन और कामुकता का समावेश कहींज्यादा लिए हुये हैं .और साधक के जीवन को प्रचुर धन से युक्त कर देती हैं.

जहाँ अप्सरा अपने रूप माधुर्य से ,वहीँ यक्षिणी रूप यौवन के अतिरिक्त तंत्र आदि क्रियाओं मे भी साधक को दक्ष बना सकने मे समर्थ हैं .

अप्सरा ::::

तिल्लोतमा अप्सरा :इस अप्सरा का विवरण एक यौवन के उफनते हुये प्रवाह के रूप मे वर्णित किया गया हैं .शारीरिक सुडौलता और मोहक रूप राशि इस अप्सरा की विशेषता हैं ,यह अप्सरा सौंदर्य की जीवित प्रतिमान होती हैं अतः इनका शारीरिक विन्यास किसी भी तरह से कोई भी कमी लिए नही बल्कि इतनी पूर्णता लिए होता हैं की साधक यदि एक बार देख ले तो जीवन भर भूल ही नही सकता हैं और इस अप्सरा की साधना से भोग युक्तजीवन न केबल मिलता हैं बल्कि साधक उस को पूर्णता से साथ अपने जीवन मे पाता भी हैं.

धन प्रदाता अप्सरा :इस धन प्रदाता सुनयना अप्सरा वास्तव मे एक षोड्स वर्षीय अप्सरा या अनिद्य सुंदरी हैं,न केबल यह साधक के जीवन को भोग वह चाहे किसी भी प्रकार का हो से लेकर विभिन्न खाद्य पदार्थ भी ला कर और अनेको बहुमूल्य रत्न आदि भी लाकर साधक को देती हैं .यह वास्तव मे धन वैभव और कायकल्प देने वाली एक सौंदर्य का वह प्रवाह हैं जो साधक के जीवन की सभी न्युनताये दूर ही कर देता हैं और साधक के जीवन मे अपने मघुर्य और प्रेम से अद्भुत रसमयता उत्पन्न कर देती हैं

उर्वशी अप्सरा :इन्द्र के राज्य सभा की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी जिनको उर वशी अर्थात ह्रदय मे वशी या उर्वशी के नाम से सबोधित किया हैं सौंदर्य का वह प्रतिमान हैं जो अपने आप मे अद्भुत हैं जिसकी कोई सानी ही नही ,जिसकी तुलना संभव ही नही और जो पल पल बदलते हुये नित नूतन सौंदर्य का एक प्रमाण हैं क्योंकि उत्तेजक देह का प्रस्तुतीकरण औरअधिक मादकता होने का नाम हैं उर्वशी ,जो अपने साधको को अपने रूप माधुर्य और नृत्य से इतना सराबोर करदेती हैं की साधक को ये लगता हैं की वह स्वयं इन्द्र के समान सुख भोग उठा रहा हैं.

मेनका अप्सरा : इसके रूप सौंदर्य की तो बात ही नही लिखी जा सकती हैं जिसने अपने छलछलाते यौवन से ,नृत्य से , रूप माधुर्य से विस्वामित्र जैसे महा योगियों की साधना /तपस्या मे भी व्यवधान उत्पन्न कर दिया उसके रूप राशि सौंदर्य और शारीरिक गठन को कैसे समझाया जा सकता हैं या शब्दों मे बांधा जा सकता हैं .जो अपने सिद्ध साधक को अपने सौदर्य राशि के समुद्र मे ,अपने माधुर्यता ,अपने द्वारा प्रदान किये जाने वाले भोग मे उसके जीवन को इतना परिपूर्ण कर देती हैं की उसका जीवन सभी दृष्टी से कायाकल्प से सभी से परिपूर्ण हो जाता हैं.

रुपो ज्ज्वला अप्सरा : इस अप्सरा का नाम ही सारी कहानी स्वयम ही स्पस्ट कर रहा हैं जिसके सौंदर्य मे उज्ज्वलता हो ..भला क्या बात हैं सामान्य मनुष्य अगर इसके सौंदर्य को देख ले तो निष्प्राण सा हो जाए और सामान्य क्या देवता तक इस अप्सरा के सौन्दय की उज्ज्वलता से निष्प्राण हो गए , जो साधक को भोग की एक ऐसी अनुपम सौंदर्य राशि देती हैं जिसका तो साधक स्वयम ही अनुभव कर सकते हैं .

मृगाक्षी अप्सरा.:अप्सरा वर्ग मे सबसे भोली और सुरति वर्ग की अप्सरा ,यूँ तो रति शब्द का अर्थ सभी समझते हैं पर उसमे जब " सु " शब्द लगा हुआ हो तो वह तो अपने आप मे एक ऐसा माधुर्य युक्त,स्नेह युक्त और अपने निश्छलता से साधक को सम्पूर्णता से अपने स्नेह मे आप्लावित कर दे उस सौंदर्य की साकार किताब का नाम हैं जिसके हर पृष्ठ पर मानो जीवन का सौंदर्य का अर्थ छुपा हो और साधक पढते पढते उसी मे खो जाए . अब नाम ही इसका सारा परिचय दे रहा हैं जो नयनो की मधुरता से नैयनों की मधुर भाषा से साधक को अपना बना ले, साधक को अपने स्नेह मे समां ले वह केबल यही ही कर सकती हैं

शाशिदेव्या अप्सरा :मित्रता क्या होती हैं शायद "मित्र "शब्द से .... इससे स्नेह भरा कोई शब्द हो ही नही सकता हैं यह किसी के साथ भी हो सकती हैं पिता पुत्र पुत्री भाई बहिन,माँ ,पत्नी क्योंकि मित्रता का सबंध सबसे मधुर होता हैं,इसे हमेशा शारीरिक धरातल पर ही नही देखाजाना चहिये क्योंकि पति और पत्नी के बीच भी मित्रता संभव हैं....आज अच्छे और योग्य मित्र मिलना संभव सा ही नही रहा, जो इस शब्द की परिभाषा मे खरे उतरे.यह अप्सरा न केबल साधक को भोग ,रूप अपना सौंदर्य प्रदान करती हैं वरन जीवन भर उसके लिए एक मित्र का क्या स्थान होता हैं यह साकार कर देती हैं ,साधक का जीवन इस मधुरता से भर जाता हैं की की जीवन मे तृप्ति उसे हर पल यूँ ही अनुभव होती हैं

नाभि दर्शना अप्सरा :नारी शरीर तो सौन्दय का एक अद्भुत प्रतिमान होता हैं,और उसकी साकार मूर्ति होती हैं यह नाभि दर्शना अप्सरा ,जिसका नाम ही अत्यंत ही उत्तेजक नाभि प्रदेश और कामुक जंघाओं कनिमंत्रणका साकार स्वरुप हैं हर अप्सरा सौंदर्य मे तो एक दूसरे से अतुलनीय होती हैं पर सभी का कुछ न कुछ स्वरुप कोई न कोई विशेषता लिए हुये होता हैं .क्योंकि सौंदर्य को किसी भी सीमा मे बंधा नही जा सकता हैं यह अप्सरा अपने नाम के अनुरूप यही विशेषता लिए हुयेसाधक को अपने यौवन रूप राशि और माधुर्यता से उसके जीवन मे छाई कमिया न्युनताये दूर कर उसे मानो इन्द्र के सान वैभवशाली और सुखमय बना देती हैं.

पुष्प देहा अप्सरा:अनेको कवियों लेखकों ने सौंदर्य की विभिन्न विशेषताये लिखी हैं, और सौंदर्य जहाँ सम्पूर्ण होगा वहां हर अंग प्रत्यंग की सौन्दर्यता अपने आप मे बेमिसाल होगी ,निश्चय ही नारी शरीर का सबसे आकर्षण युक्त भाग उसका वक्ष स्थल ही होता हैं ,और यह अप्सरा इन वक्ष स्थल के अद्भुत सौंदर्य का ही दुसरा नाम हैं.

रत्नमाला अप्सरा :यदि कोई अप्सरा साधक को अपने रूप से यौवन से प्रसन्नता देती हैं ,और साधक को पूर्ण पौरुषता भी प्रदान करती हैं, तो एक ही ऐसी अप्सरा हैं जो इनके साथ धन दृव्य और आभूषण से भी पूर्ण तृप्ति प्रदान करती हैं, जैसा इसका नाम वैसे ही अपने नाम के अनुरूप मणि मुक्ताये,विभिन्न मूल्यवान रत्न तो यह साधक को प्रदान करके साधक के जीवन को भोग विलास के साथ साथ धन की दृष्टी से भी पूर्णता प्रदान करदेती हैं .

यक्षिणी ::

शास्त्रों मे अनेको यक्षिणीयों का विवरण मिलता हैं .इनकी कुल कितनी संख्या हैं इस बारे मे विभिन्न तंत्र ग्रंथो मे भी विभिन्न मत हैं .कुछ ग्रथो मे मुख्यता आठ यक्षिणी मानी गयी हैं.सुरसुन्दरी,रतिप्रिया ,मनोहारिणी ,पद्मिनी ,कनाकावती ,महानटी ,कामेश्वरी ,अनुरागिनी यक्षिणी .

रतिप्रिया यक्षिणी :यह यक्षिणी प्रचुर भोग की भाव भूमि साधक साधिका के लिए प्रस्तुत करती हैं इसका नाम ही इस बात का परिचायक हैं की यह भोग सबंधो की एक उचित मर्यादित अवस्था साधक साधिका के जीवन मे लाती हैं ,साथ ही साथ साथ जिनका जीवन किसी भी कारण वश शारीरिक न्यूनता या उम्रगत कारणों से नीरसता युक्त हो गया हैं उसे पुनः रस युक्त उन्हें बना ही देती हैं.यह यक्षिणी मानो अपने को पूर्ण रूप से साधक साधिका को समर्पित कर देती हैं .तन मन के सम्पूर्ण रूप से, यौवन वान बनाने की साधना हैं .

कनकावती यक्षिणी : साधक के जीवन से दरिद्रता रूपी शत्रु का समूल नाश कर साधक को पूर्ण धनवान बनाना इस यक्षिणी का प्रमुख गुण हैं वहीँ स्वर्ण निर्माण की कुछ और बेहद महत्वपूर्ण क्रियाओं मे इस यक्षिणी का सिद्ध होना अति आवश्यक हैं ,इनकी साधना सात्विक मतलब मांत्रिक के साथ साथ तांत्रिक तरीके से भी की जा सकती हैं और वाम मार्गी विधियां भी प्राप्त हैं .यह तो निश्चित हैं की इस साधना से व्यक्ति स्वर्ण निर्माण और पारद विज्ञानं मे काफी उन्नति कर सकता हैं इस साधना के अनेको प्रभेद भी हैं जो सिर्फ योग्य अधिकारियों तक ही सीमित हैं .

सप्त यक्षिणी :कामेश्वरी, महामाया,सुरसुन्दरी,महाभया ,विलासिनी ,मनोहरा ,महेन्द्री .एक साथ इन सभी की साधना तो दुर्लभतम विधान युक्त हैं सदगुरुदेव जी ने एक समय सिर्फ इस साधना के बारे मे कुछ तथ्य दिए थे पर साधना का पूर्णविवरण तो उन्होंने भी पत्रिका मे नही दिया पर इस साधना को सम्पन्न करने पर कायाकल्प , तेजोमय सौंदर्य , वाक् सिद्धि , वशीकरण सिद्धि , अतुलित बल , विपुलित धन , अदृश्य सिद्धि .यह लाभ उन्होंने समझाए रहे .इसका मतलब यह वास्तव मे अपने आप मे एक दुर्लभतम साधना हैं जिसको करने के बाद कहाँ,कोई और इच्छा शेष रह जायेगी .

वट यक्षिणी : इस नाम से सभी पारद तंत्र के लोग भली भांती परिचित हैं एक ओर जहाँयह भोग विलास और अत्याधिक को लिए होती हैं वह ये तंत्र की कुछ अद्भुत क्रियाओं की अपने आप मे एक मात्र जानकार होती हैं,इसके माध्यम से साधक न केबल भोग विलास की पूर्णता बल्कि वह पारद तंत्र मे भी पूर्णता पा सकता हैं यह यक्षिणी तो साधक के लिएतंत्र जीवन का एक आधार ही हैं .महान रस सिद्ध नागार्जुन ने अनेको गुप्त रहस्य प्राप्त किये थे.

चंडिका यक्षिणी :आनंद प्रद और प्रचुर धन प्रदायकएक ऐसी यक्षिणी की साधना हैं जिसे सामान्य गृहस्थ और साधु दोनों यह साधना कर सकते हैं विदेश यात्रा , भोग विलास के साथ साधक को प्रबल यौवन भी प्रदान कर देती हैं .मतलब यह कायाकल्प और अचूक सौंदर्य युक्त होती हैं और यही गुण साधक मे रख देती हैं या उसे इनसे युक्त कर देती हैं

विशाला यक्षिणी :रूप सौंदर्य और भोग विलास के साथ यह यक्षिणी साधक के शरीर मे यदि कोई रोग होतो उसे भी पूर्णता के साथ दूर कर देती हैंयूँ तो सभी यक्षिणी अपने आप मे कायाकल्प का अद्भुत गुण लिए ही होती हैं,और साथ ही साथ तंत्र क्षेत्र के किसी न किसी एक भाग की आधिस्ठार्थी भी होती हैं .

स्वर्ण रेखा यक्षिणी :अपने नाम के अनुरूप यह यक्षिणी साधक को स्वर्ण आदि से परिपूर्णता देती हैं और साधक की शारीरिक न्युनताये दूर कर उसे पौरुषता और कायाकल्प भी कर देती हैं .स्वर्ण के सामान आभायुक्त यह यक्षिणी अपने रूप सौंदर्य मे किसी भी अन्य यक्षिणी को लजा सकती हैं .

होलिका यक्षिणी : इस यक्षिणी का रूप सौंदर्य तो अपने आप मे बेमिसाल हैं ,लाल रंग के वस्त्रों से आच्छादित यह यक्षिणी की साधना सिर्फ वर्ष मे एक दिन, वह भी प्रबल तंत्र की रात अर्थात होलिका दहन की रात मे ही सम्पन्न की जा सकती हैं .साधक को अपने अवर्णीय रूप से , क्योंकि इस यक्षिणी का स्वरुप तो अत्यंत ही विलासी हैं ,और साधक मे इतना अधिक काम भाव की ऊर्जा व्यापत होने लगती हैं की स्वतः ही साधक का कायाकल्प प्राम्भ हो जाता हैं .

धनदा रति यक्षिणी :इस साधना की महत्वता और प्रभाव के बारे मे अनेको ग्रंथो मे उल्लेखित हैं ,यह साधना अपने आप मे एक सामान्य यक्षिणी की नही बल्कि अपने आप मे भोग विलास रूप सौंदर्य , कायाकल्प और अनेको दुर्लभ तथ्य इस साधना के माध्यम से आसानी से प्राप्त की जा सकती हैं वही दूसरी ओर आध्यात्मिक जीवन मे उच्चता और अत्यंत तीव्र गति से उन्नति भी इस साधना का एक आवशययक भाग कहा जा सकता हैं इस साधना की उपयोगिता इसी बात से आंकी जा सकती हैं की पूज्य सदगुरुदेव जी ने एक पूरा शिविर इस साधना पर आयोजित किया था और इस साधनाके सन्दर्भ मे जो जो रहस्य उल्लेखित किये थे वह तो अन्यतम हैं अतः इस साधना को सिर्फ भोग विलास या रूप या काम भाव तक ही सीमित नही माना जा सकता .हाँ इस यक्षिणी का स्वरुप भी अन्य यक्षिणियों की भांति अपने आप मे निर्दोष और सौंदर्य शास्त्र की परिभाषा के अनुसार बेजोड हैं .

सुरसुन्दरी यक्षिणी :इस वर्ग की सभी विशेषताए लिए इस यक्षिणी का स्वरुप भी यक्षिणी वर्ग की अनुसार अपने आप मे एक प्रमाण हैं साधक को प्रसन्न हो कर यह मनोवांछित वरदान प्रदान करती हैं और यक्षिणी साधना को यदि शारीरिक सुख और सिर्फ काम के निम्नतम रूप तक ही सीमित नही करके देखा जाए तो साधक या साधिका को ये तन्त्र जगत मे एक उच्चता

,आध्यात्मिक जगत मे एक उच्च स्थान और तीव्र प्रगति कराने का आधार भी माना जा सकता साथ ही साथ , नृत्य और अन्य कलाओं मे व्यक्ति को स्वत ही निपुणता भी कहीं आसानी से प्राप्त हो सकती हैं .

इन साधनाओ के बारे मे जन सामान्य मे बहुत अधिक भ्रम की अवस्था हैं लोग भयभीत होते हैं इसके बारे मे,क्योंकि एक से एक भयावह विवरण .जिसमे कल्पना कहीं अधिक होती हैं आज बाज़ार मे उपस्थित हर ग्रन्थ मे मिल जायंगे .पूज्य सदगुरुदेव ने प्रथम बार सामान्यजन को इन साधनाओ के सत्य पक्ष से अबगत कराया .और उन्हें इन साधनाओ को करने के लिए प्रोत्साहित भी किया ,और इन साधनाओ से सबधित विशेष शिविर जैसे धनदा रति यक्षिणी साधना शिविर , स्वर्ण देहा अप्सरा साधना शिविर का भी आयोजन किया , जिसमे उन्होने कई कई उदाहरण दे कर यह स्पस्ट किया की इन साधनाओ को केबल अपनी वासना पूर्ति का माध्यम न समझे , न ही ये आपके घर परिवार या आपके वैवाहिक जीवन को किसी प्रकार का व्यवधान दे सकती हैं .बल्कि सत्य तो यह हैं की यह और उच्चता प्रदान कर ने मे समर्थ हैं .और इन तथ्यों को उन्होंने हर पत्रिका के अंक मे एक से एक अप्सरा और यक्षिणी विधान न केबल समझाए बल्कि मुक्त ह्रदय से इनके बरे मे तथ्य रखे , न केबल सात या आठ दिवसीय साधना शिविर बल्कि उन्होने एक एक दिवसीय साधना शिविर भी इन साधनाओ के आयोजित किये ,और आज भी यक्षिणी साधना और अप्सरा साधना के अनेको केसेट्स उपलब्ध हैं जिनमे उन्होंने अनेको तथ्यों समझाए और इन साधनाओ की उपयोगिता के बारे मे विस्तृत चर्चा की .

अब और क्या प्रमाण चाहिये सदगुरुदेव प्रदत्त हर साधना हर मंत्र तंत्र विधान यदि सदगुरुदेव के बताए हुये तथ्य को ध्यान मे रख कर किया जाए तो पूर्ण सफलता दायक हैं बल्कि किसी भी प्रकार की हानि की संभावना भी नही हैं.

सदगुरुदेव द्वारा स्पस्ट किये गए इन साधना सूत्रों, गोपनीय क्रियाओं , आवश्यक मुद्राये , अनिवार्य विधान और साधना रहस्य जो उन्होंने अपने सन्यासी शिष्य और शिष्याओ के सामने स्पस्ट किये , वह आज हमारे उन्ही वरिष्ठ गुरू भाई बहिनों के आशीर्वाद से आपके सामने इस एक दिवसीय सेमीनार मे जो यक्षिणी अप्सरा साधना के दुर्लभतम रहस्य पर आधारित हैं आपके सामने रखे जायेंगे, इनकी तथ्यों प्रमाणिकता पर क्या कहा जाए ...अगर आप एक शिष्य हैं एक साधक हैं, तो पुरे मनोयोग विश्वास , एकाग्रता , सदगुरुदेव चिंतन और पूर्ण समर्पण भाव रख कर करें..आपके प्रयास जितना गंभीर होंगे सफलता उतनी ही आपके करीब होगी क्योंकि यह तथ्य समझले की साधना मे सफलता सिद्धि पाना एक बहुत ही जटिल और गंभीर विषय हैं इसे कभी भी हलके मे नही लिया जाना चहिये . एक साधना की सिद्धि सारे जीवन को सजा संवार सकती हैं .इन बातों को आप गंभीरता से अपने जीवन मे स्थान दे और साधनारत हो ...

संस्कारित और विशिष्ट संस्कारित माला निर्माण प्रक्रिया

तंत्र हो या मंत्र साधना हर प्रक्रिया मे मंत्र जप के लिए कोई न कोई माध्यम तो चाहिये ही ,की किस तरह किये जा रहे मंत्र जप की गणना भी होती जाए .इस हेतु जो सर्वश्रेष्ठ उपाय हैं वह हैं मंत्र जप..जप माला की सहायता से किया जाए. यामल ग्रंथो मे यह लिखा हुआ हैं की बिना गिने या गिनती किये जाने वाले मंत्र कोराक्षस ग्रहण करते हैं .अक्षत ,हाथ के पोर ,पुष्प, मिटटी ,चन्दन के द्वारा भी मंत्र गिनना वर्जित बताया गया हैं .लाख, लाल चन्दन ,सिंदूर शुद्ध गोबर को मिलाकर उसकी गोलिया बना कर उपयोग मे ली जा सकती हैं .

तंत्र ग्रंथो मे विभिन्न प्रयोग के लिए विभिन्न मनको की माला का उपयोग होता हैं , कभी 51 तो कभी 31 पर अधिकांश प्रयोग और साधना में 108 मनको से युक्त माला का प्रयोग होता हैं. यह मालाये भी तरह तरह की ओर विचित्र विचित्र प्रकार की होती हैं , कहीं स्फटिक तो ,कहीं हकीक से लेकर सर्प अस्थिया और मानव हड्डियों तक से निर्मित्त होती हैं, यह तो हुयी निर्माण की बात .पर इस माला को क्या ऐसे ही उपयोग मे लाना हैं .?

नही

क्योंकि अभी यह असंस्कारित अवस्था मे हैं और असंस्कारित अवस्था वाली माला से किये जाने वाले जप से सम्बंधित देवता रुष्ट हो जाते हैं .पच्चीस दानो की माला मोक्ष दायिनी ,तीस दानो की धन प्रदायिनी ,चौदह दानो की मोक्ष दात्री कही जाती हैं .साधरणतः हर साधना मे किस तरह की माला का प्रयोग किया जाना हैं और उसके उपलब्ध ना होने पर कौन सी और माला का उपयोग किया जा सकता हैं ,यह दिया ही होता हैं . और जिस माला का प्रयोग बताया गया हैं उसी माला का प्रयोग किया जाना चाहिये .यह भी शास्त्र निर्देशित हैं की जप माला को किसी अन्य की दृष्टी मे नही आना देना चाहिये मतलब इसको छिपा कर ही मंत्र जप करे .

पर 108 ही मनको क्यों यूं तो सभी का एक विशेष अर्थ हैं हैं पर सदगुरुदेव ने कहा हैं की मानव शरीर में 7 चक्र नहीं बल्कि 108 चक्र होते हैं , और उन्होंने इस संदर्भ में विभिन्न उदाहरण भी दिए हैं साथ ही साथ इस हेतु एक बार एक विशिष्ट दीक्षा

108 चक्र जागरण दीक्षा भी उन्होंने प्रदान की थी, तो जब भी हम 108 मनको की माला से मंत्र जप करते हैं तब हर मनके के माध्यम से एक विशेष चक्र पर स्पंदन होता ही हैं फिर उसे हम महसूस चाहे या न चाहे करे .यही एक गोपनीय तथ्य हैं इन मनको का 108 होने का तभी तो 108 मनको वाली माला सर्वार्थ सिद्धि प्रदायक कही जाती हैं

और यह माला ही तो इस साधना की एक विशेष उपकरण हैं, सदगुरुदेव कहते हैं की की क्यों एक छोटी छोटी से बात पर अपने सदगुरुदेव पर भी निर्भर रहना ,उन्होंने ही तो अनेक बार माला और यंत्रो को प्राण प्रतिष्ठित करने की विधियाँ बताई , उस समय के अनेक साधक इस बात के प्रमाण हैं, और जब हम आगे बढ़ कर सिद्धाश्रम तक जाने की बात करते हैं और हम खुद एक सामान्य सी माला प्राण प्रतिष्ठित न कर पाए तो आप ही सोच सकते हैं हम हैं कहाँ, अतः इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए इस प्रक्रिया को आपके सामने रखा जा रहा हैं .

शास्त्रगत माला के भी प्रकार बताये गए हैं .

- वर्णमाला – अक्षर माला
- मणियों की माला – मनको की माला
- कर माला – अंगुली के पर्वो की सहायता से गिनना..माला

यहाँ तक और भी सूक्ष्म दृष्टी से देखनेपर वर्णमाला के भी दो भेद हैं शती माला, अष्टो त्तर शती माला माला , तंत्र ग्रन्थ उल्लेखित करते हैं की नित्य का जप ,कर माला से किया जा सकता हैं पर जो जप किसी भी कामना के साथ किया जाए उसे करमाला से नही करना चाहिये.तंत्र मर्मग्य और तंत्राचार्य इस बात से भली भांती परिचित हैं या रहे की यदि कभी कोई स्थान विशेष या परिस्थिति विशेष आन पड़े तो कर माला से भी जप किया जा सकता हैं . साधारण रूप मे रुद्राक्ष माला या गुरू माला का प्रयोग कर सकते हैं .शक्ति संगम तंत्र मे इस बात की पुष्टि की हैं.पर जिस साधना मे जिस माला का जो विवरण दिया जाता हैं साधक वर्ग को उसी माला का प्रयोग करना यथासंभव उचित होता हैं क्योंकि अनेको अति सूक्ष्म तत्वके कारण किसी किसी पदार्थ की माला का निर्णय किया जाता हैं , न केबल पदार्थ की महत्वता हैं बल्कि साधक किस महाविद्या की साधना कर रहा हैं उस पर भी बहुत निर्भर करता हैं .अनेक साधक रुद्राक्ष माला का प्रयोग शक्ति या देवी सबंधित मंत्रो मे करते हैं पर यह ध्यान मे रखना चाहिए की दिन मे रुद्राक्ष माला सेशक्ति मंत्र जप करने से साधक को अनेको अनिष्ट से सामना करना पड़ सकता हैं .

महाविद्याओ की साधना क्रम मे किस माला का प्रयोग किया जाना हैं यह भी एक सुनिश्चित किया हुआ हैं

- महाकाली महाविद्या साधना मे दन्त माला
- तारा महाविद्या साधना मे नरशंख माला
- छिनमस्ता साधना मे नर हड्डियों की माला
- त्रिपुरा साधना मे लाल चन्दन की माला
- भैरवी की साधना मे स्वयम्भू माला
- मातंगी साधना मे रत्ती की माला
- धूमावती साधना मे खर दन्त की माला
- बगलामुखी मे हल्दी की माला
- कमला साधना मे कमल गट्टे की माला
- भुवनेश्वरी साधना मे स्फटिक की माला

का विवरण तंत्र ग्रन्थ देते हैं .

इन मालाओ की महत्वता इसी बात से हैं की यदि कोई साधक महाशंख माला से मंत्र जप करता हैं तो यह माला अभीष्ट सिद्धि प्राप्त करने मे सहायक होती हैं .इसी तरह अगर किसी को भाग्यवश दन्त माला मिल जाए तो उसे समस्त सिद्धियाँ हस्तगत हो जाती हैं .अस्थि माला सदैव से शत्रु विनाशक कार्यों मे सर्वश्रेष्ठ मानी गयी हैंइस तरह माँ धुमावती मे जप मे प्रयुक्त खर दन्त की माला भी शत्रु को नष्ट करने मे सर्वश्रेष्ठ हैं.इसी तरह स्वयम्भू माला से साधक को सर्व सिद्धि प्राप्त होती हैं.

ध्यान रहे यहाँ हम माला निर्माण की प्रक्रिया नहीं बता रहे हैं वह एक और ही अलग विषय हैं .

प्रथम तरीका : ज्योतिर्लिंग और शक्तिपीठ की महत्वता से कौन नही परिचित हैं ,ये तो शक्ति तत्व के साक्षात् विग्रह हैं .इनसे एक अद्व्तीय उर्जा का प्रवाह तो अनादी काल से बना हुआ हैं अतः सर्वाधिक सरल तरीका तो यह हैं की आप किसी भी माला /मालाओं को किसी भी ज्योतिर्लिंग या शक्ति पीठ में उसके मुख्य विग्रह से स्पर्श करा ले, उनकी प्राण उर्जा से माला स्वतः हो प्राण प्रतिष्ठित हो जाती हैं .यह आसान तरीका हैं और एक बार मे कई कई माला भी इस तरीके से प्राण प्रतिष्ठित की जा सकती हैं .

द्वितीय तरीका : तंत्र के आदि गुरू भगवान रूद्र की महत्वता से सभी परिचित हैं और जब भी उनका अभिषेक किया जाता हैं ,तब यह दो प्रकार की प्रक्रिया की जाती हैं .प्रथम तो यह की यदि आप से रुद्राभिषेक करते बनता हैं तो आपके सामने किसी भी पात्र मे या आप के घर में किसी से या कोई पंडित द्वारा आपके घर में रुद्राभिषेक किया जा रहा हो उस समय काल में किसी भी पात्र में यह माला जिसे प्राण प्रतिष्ठित किया जाना हैं उसे रख दे , यह स्वत ही प्राण प्रतिष्ठित हो जाती हैं , रुद्राभिषेक की विधि आप गीता प्रेस की किताबों में पा सकते हैं .

तृतीय तरीका :गुरू तत्व की गरिमाँ और महिमा से तो सारा तंत्र जगत भरा हुआ हैं,और यह सारी प्रक्रिया सारा ज्ञान तो गुरू मुख से भी प्राप्त हुआ हैं.अगर तंत्र मे से गुरू शब्द एक तरफ कर दिया जाए तो फिर शेष बचेगा ही क्या.और गुरू तत्व जिनमे भी आपकी श्रद्धा , बिस्वास , हैं जो की एक योग्य हो जो शक्तिपात के आचार्य हो उनके संकल्प मात्र से या उनके हाथो के स्पर्श मात्र से भी यह प्रक्रिया सुगमता पूर्वक संपन्न हो जाती हैं .

चतुर्थ तरीका :कई बार यह भी संभव हैं की ऊपर बताये गए किसी भी तरीके को कर पाना किसी भी कारण से संभव न हो पा रहा हो .तो एक और प्रक्रिया तंत्र मर्मग्य सामने रखते हैं वह की माला को गंगा जल से स्नान कराये और निम्न मन्त्र उसी माला से 108 बार जप कर ले , यह भी एक सुगम तरीका हैं .

माले माले महामाले सर्व तत्त्व स्वरूपिणी |

चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्त स्तस्मंमे सिद्धिदा भव ||

शास्त्रीय प्रक्रिया :

पवित्रीकरण :अपने उलटे हाथ की हथेली मे थोडा सा जल लेकर निम्न मंत्र बोलते हुये जल अपने चारों ओर छिडके

ॐअपवित्र: पवित्रो वा सर्वास्थाम गतोऽपि वा |

य : स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स: बाह्यआभ्यान्तर: शुचि ||

इसके बाद

आचमन : आंतरिक तत्वों की शुद्धि के लिए यह प्रक्रिया अत्यंत ही आवश्यक हैं सीधे हाँथ में जल ले कर चार बार यह मन्त्र पढ़ें . और उस अभिमंत्रित जल को स्वयम जल को पी ले.

ॐ आत्म तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ विद्या तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ ज्ञान तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ शिव तत्वं शोधयामि स्वाहा |

इसके बाद दिग बंधन का स्थान आता हैं .

दशो दिशाओ मे से विघ्न आपको आपकी साधना मे वाधा न डाले इसलिए .

ॐ अपसर्प यन्तु ये भूता ये भूता भूमि संस्थिता|

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाग्या||

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम|

सर्वेषाम विरोधेन पुजाकर्म समारभे||

इसके बाद

अब सबसे पहले अपने सीधे हाथ मे जल लेकर संकल्प करे की" **मैं अमुक नाम,,मेरे पिता /पति का नाम अमुक हैं और अमुक स्थान की निवासी ,अमुक गोत्र उत्पन्न ,आज इस माला संस्कारित करने सदगुरुदेव आपके सामने यह प्रयोग सम्पन्न करने जा रहा /रही हूँ ,मुझे इस कार्य मे पूर्ण सफ्लता आप अपनी कृपा दृष्टी से प्रदान करें** "

इन संकल्प को लेने के बाद अपने सीधे हाथ की हथेली मे लिया जल को जमींन पर डाल दे.

इसके बाद भगवान गणेश पूजन करें पूरे भक्ति भाव से

सुमुखश्चेकदन्त , कपिलो गजकर्णक:|

लम्बोदरश्च विकटो विघ्न नाशो विनायकः |

,धुर्मकेतु गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन:

द्वादाशैतानी नामानी य :पठेस्चचछुणुयादपि||,

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा|

संग्रामे रिपुसंकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते||.

अब अपनी साधना का पूर्ण फल आपको प्राप्त हो .और आपकी साधना पूर्ण रूप से कवचित हो .इस हेतु **निखिलेश्वरानंद कवच का एक पाठ अवश्य करे.**

इसके बाद सदगुरुदेव से सबंधित किसी भी श्लोक या गुरू पूजन से सबंधित किसी भी श्लोक का उच्चारण करें.

गुरु ध्यान :

गुरुर्ब्रम्हा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर: ,

गुरु साक्षात् पर ब्रम्ह तस्मै श्री गुरवे नमः ||

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः ध्यान समर्पयामि|

इसके बाद पंचोपचार से सदगुरुदेव पूजन करें, पंचोपचार मतलब गंध पुष्प धूप दीप,नैवेद्य (भोग पदार्थ अर्पण).

पूजन :

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि |(श्री चरणों में जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः अर्ध्य समर्पयामि ||(हांथों में जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः कुंकुम तिलकं च समर्पयामि |(तिलक ओर अक्षत चढ़ाएं)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः धूपं दीपं दर्शयामि |(धुप और दीप जलाएं)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि |(नैवेद्य प्रसाद चढ़ाएं)

इसके बाद एक गोल सुपाड़ी को भगवान भैरव का प्रतीक मान कर उसका सिंदूर आदि से पूजन करें

इसके बाद आप कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप जरुर करे इसके बाद

निम्न वामदेव मन्त्र से चन्दन माला पर लगा यें

बलाय नमो बल प्रमथनाय नमः सर्व भूतदहनाय नमो मनोन्मथाय नमः ||

पीपल के नौ पत्ते को इस तरह से रखे की एक पत्ता बीच में और और अन्य पत्ते उसे केंद्र मानते हुए इस प्रकार रखे मानो एक अष्ट दल कमल सा बन जाये , बीच के पत्ते पर आप अपनी माला रख दे और हिंदी वर्ण माला से वर्ण ॐ अं से लेकर क्षं तक सभी का उच्चारण करते हुए उस माला को पंचगव्य से स्नान कराये. फिर सद्योजात मंत्र का उच्चारण करते हुए

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः |

भवे भवे नाति भवे भवस्य माँ भवो द्वावाय नमः ||

धुपबत्ती अघोरमंत्र से दिखाए

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः सर्वेभ्य : सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्य :

फिर तत्पुरुष मंत्र से लेपन करे

ॐ तत्पुरुषाय विद्म्हे महादेवी धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात |

फिर इसके एक एक दाने पर एक बार या सौ सौ बार इशान मंत्र का जप करे

ॐ ईशानः सर्व विद्यानामिश्वर : सर्व भूतानां ब्रह्मा धिपतिरब्रह्मणो ऽ धिपतिर्ब्रह्मा शिवो में अस्तु सदाशिवो ऽ म |

देवता स्थापन :

अब बात आती हैं कि कैसे देवता की स्थापना की जाए तो यदि आप इस माला को शक्ति कार्यों में उपयोग करना चाहते हैं तो **"ह्रीं"** इस मंत्र के पहले लगा कर और लाल रंग के पुष्पों से इसका पूजन करें.

और वैष्णवों को निम्न मन्त्र का उपयोग करें

ॐ ऐं श्रीं अक्षमाला यै नमः ||

फिर हर वर्ण मतलब अं से लेकर क्षं तक लेकर इनसे संपुटितकरके १०८ /१०८ बार अपने इष्ट मन्त्र का उच्चारण करे .

फिर यह प्रार्थना करे

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां सर्व सिद्धिप्रदा मता |

तें सत्येन में सिद्धिं देहि मातर्नामो ऽ स्तू ते ||

अब इस माला को हर के सामने दिखाए नहीं , इस का मतलब इस माला को आप जब भी जप कर रहे हो तब भी और अन्य समय भी अन्य किसी की नज़रों से बचाए .आपको जो भी विधि उचित लगे उसका उपयोग करके एक प्राण प्रतिष्ठित माला का निर्माण आप कर सकते हैं उसे साधना में प्रयोग करसकते हैं .
पर यह तो प्रकिया मणि माला को संस्कारित करने की हैं .

विशेष शक्ति युक्त तांत्रिक माला का निर्माण::

इस विशिष्ट माला के निर्माण के आपको इस विशिट मंत्र का जप करना हैं .

ॐ सर्व माला मणि माला सिद्धि प्रदात्रयि शक्ति रुपिंयै नमः|

योग्य साधक मंत्र जप पूर्ण होने के बाद पुनः सद्गुरुदेव पूजन और कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप करते हैं और इसके बाद किये हुये जप को सदगुरुदेव जी के श्री चरण कमलों मे को समर्पित कर देना चाहिए.

ॐ गुह्याति गुह्य गोप्ता तवं गृहणास्मत्क्रतं जपं|

सिद्धिर्भवतु मे देव! त्वत प्रसादान्महेश्वर||

इस बात का ध्यान रहे की यह सभी विधिया अपने आप मे बेहद सटीक और दुर्लभ हैं इन सभी को करते समय , दिन और समय का बेहद ध्यान रखे ,और संभव हो तो सदगुरुदेव जी की प्रसिद्ध किताब ज्योतिष और काल निर्णय के अनुसार महेंद्र या अमृत काल का सदुपयोग करे तो कहीं और उचित परिणाम संभव होंगे ,साथ ही साथ यदि किसी कारण से कोई महूर्त न मिल पा रहा हो या जिस महूर्त की इच्छा हो उसके आने मे कुछ समय हो तो आप हर दिन मे दिन के ११.३० am से १२.३० pm तक के समय जो की अभिजीत महूर्त कहलाता हैं उसका प्रयोग करसकते हैं.

संस्कारित और प्राण प्रतिष्ठित माला का प्रयोग हमेशा किया जाना चाहिये और ,तंत्र की कुछ उच्च कोटि की साधना मे तो जिन मालाओ का निर्माण किया जाता हैं उनका पहले संस्कारित होना आवश्यक विधान हैं उसके बाद ही उच्च और विधान इन पर सम्पन्न किये जा सकते हैं.

यन्त्र संस्कार प्रक्रिया
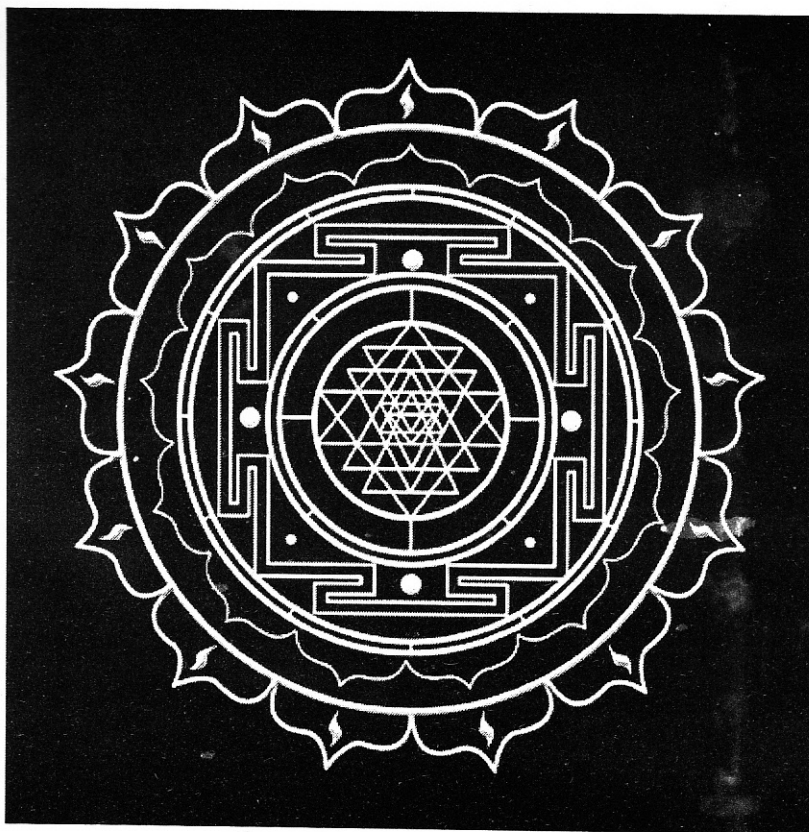
साधना जगत मे तीन शब्द का अर्थ तो सभी जानते हैं प्रथम तो मंत्र, द्वितीय तंत्र और तीसरा यन्त्र ,इन तीन आवश्यक स्तंभ पर ही हैं साधक की तंत्र साधना का आधार .मंत्र जहाँ एक ओर कुछ विशिष्ट शब्द का संयोजन हैं जिनका भौतिक स्तर पर कोई अर्थ निकाल पाना शायद ही संभव हो जाए पर आध्यात्मिक अर्थ समझ पाना सबसे कठिन कार्य हैं .क्योंकि इन मंत्र के निर्माण मे जिन बीज मंत्रो का उपयोग हुआ रहता हैं उसके बारे मे तो कभी परमहंस स्वामी विशुद्धानंद जी ने कहा था की ब्रम्हा विष्णु महेश की भी समर्थ नही हैं की इनका अर्थ भली भांती बता दें तो सामनेसामान्य मनुष्य की सामर्थ्य ही क्या हैं.अब बात आते हैं तन्त्र की . इसकी अनेको परिभाषाये हैं .सामन्यतः यही हैं की एक सुवस्थित व्यवस्था .उसको तंत्र कह सकते हैं .अन्य परिभाषाओ मे अपने शरीर मे छुपी अनेको गुप्त क्षमताए आदि को जाने समझने और हस्त गत करने का विज्ञान .तृतीय हैं यन्त्र.यह वास्तव मे एक किले नुमा आकृति हैं जिसमे मुख्य शक्तिके साथ उसके विभिन्न गण ,सेवक सेविका और अन्य उप शक्तियां स्थित रहती हैं. अद्भुतता और अत्यंत ही गहनता का विषय हैं यन्त्र विज्ञानं,जितना गहन अध्ययन होगा उतना ही जायद आश्चर्य और नवीन तथ्यों सामने आते जायेंगे .

इन यंत्रों के भी अनेक प्रकार हैं सिर्फ अंक वाले यन्त्र, सिर्फ बीज मन्त्र वाले यन्त्र और तीसरा अंक और बीज मंत्र संयुक्त यन्त्र .उदाहरण के लिए श्री यन्त्र को ही ले ले इसमें इतनी शक्तियों का समावेशीकरण हैं की आज भी वैज्ञानिक कम्पुटर की सहायता से भी इसके रहस्यों का अनावार्तिकरण कर सकने मे असमर्थ हैं और नए और नूतन तथ्यों से इसके बारे मे जो भी उन्हें प्राप्त होते जा रहे हैं अचरज से भर उठे है.और यह तो एक यन्त्र के रहस्य अन्वेषण करने की बात हैं पर भारतीय साधना ग्रंथो मे तो इन यंत्रों की सीमा ही नही हैं. यह सारा विश्व ही यंत्र मय हैं ओर इस सम्पूर्ण ब्रम्हांड मेंजिस चेतना को महा योगियों ने अनुभव किया उसे ही यंत्र के रूप में परिणित कर साधारण मानवो के हितार्थ प्रस्तुत किया , यन्त्र केबल मा कल्पना नहीं हैं की कुछ विशेष आकृति अपने मन से बना ली ओर उसे प्रस्तुत कर दिया , यंत्र महा विज्ञानं तो इतना विस्तृत हैं की सारा जीवन भी इसमें लगा दे तो भी बूँद मात्र भी समझ पानां संभव नहीं हैं, साधरणतः साधक गण इस विज्ञानं की बारीकियों

के प्रति अनिभिग से रह ते हैं , पर जब साधना काल आता हैं तो सोच में पड जाते हैं की कैसे इन यंत्रोंको जल्द से प्राप्त कर लिया जाये . पर कभी समयाभाव तो कभी अर्था भाव के कारण यह संभव नहीं रहता हैं.

सदगुरुदेव कहते हैं की `क्यों छोटी छोटी से बातों पर गुरु पर भी निर्भर रहना , ओर जब हम उनके ही आत्मंश हैं तो क्यों नहीं इस बात को ह्रदय गम करते हैं की ज्ञान कीसभी विधियाँ , प्रक्रिया जो भी गुरुमुख से प्राप्त हैं, सदगुरुदेव से प्राप्त हैं वह तो हम सब के लिए हैं ही . क्यों नहीं हम कुछ तो सबल बने , ओर अपने सदगुरुदेव जी कागौरव प्रवर्धित करे ,पर हम चाह के भी यन्त्र को चेतना कैसे दे सकते हैं क्योंकि यह एक आसान कार्य तो हैं नही की ताम्बे के एक टुकड़े पर दिव्य शक्तियों का आरोहण किया जा सके और वह तांबे के टुकड़ा मात्र ताम्बे का टुकड़ा न रह कर एक जीवित पूर्ण व्यक्तित्व का प्रतीक हो जाए , न केबल उसमे प्राण संचरण बल्कि, चैतन्यता का भी पूर्ण समावेश हो जाए और सिद्धि दात्री गुण भी .क्योंकि यन्त्र भी दो तरह से कार्य करते हैं एक तो जो आपके द्वारा किये गए मंत्र जप को देव वर्ग तक परावर्तित कर दे और दूसरा वर्ग वे यन्त्र आते हैं जो सच मे उन्ही देव शक्तियों पूर्ण स्वरुप अपने आप मे उन रेखा चित्रों के माध्यम से और अन्य क्रियाओं के माध्यम से हमारे सामने रख सके .और हमें ततकाल ही अनुकूलता दे सकने मे समर्थ हो

पर इन क्रियाये को संपादित कैसे करें.यह सत्य हैं की हर यंत्र की विशेषता को ध्यान मे रखते हुये और वह किस मार्ग का प्रतिनिधित्व कर रहा हैं और उसने किस देव या देवता वर्ग का अबरोहण किया गया हैं उसकी प्राण प्रतिष्ठा करने का विधान सर्वथा अलग हो होता हैं जो की कई कई बार उन कुछ विशिष्ट ग्रंथो मे निर्देशित किया ही रहता हैंजो आज उपलब्ध ही नही हैं .तो इस लेख मे उन सारी प्रक्रिया की बात तो नही पर कुछ प्रक्रिया जो की सामान्य रूप से आसानी से की जा सके और और यन्त्र हमारे लिए उपयोगी हो सके वह क्रिया क्या हम कर सकते हैं . वह हमें दे सके जबकि हम स्वयं उतने सक्षम नहीं हैं , तो फिर इतना कहना हैं की सदगुरुदेव जी का शिष्यओर असक्षम , संभव ही नहीं हैं.....

सारे देवी देवता भी यंत्रों के माध्यम से प्रदर्शित किये जा सकते हैं क्योंकि प्रारंभ स्तर पर साधक की चेतना इतनी प्रखर नहीं होती की वह सीधे ही अंपने इष्ट को प्रत्यक्ष कर उनसे अपने हेतु कार्य संपन्न करवा सके, तो साधक की मन की बात कैसे ,उसके इष्ट तक कैसे पहुचे , की क्या कोई भी माध्यम नहीं हैं ?हाँ क्यों नहीं , सदगुरुदेव जी ही एक मात्र माध्यम हैं पर उनके द्वारा दिए गए यन्त्र रूपी भीं ज्ञान भी क्या उनका का प्रतीक नहीं हैं.तो अब तो यन्त्र भी एक माध्यम न हुआ,साधक के किये जा रहे जप को परावर्तित कर ,प्रवर्धित कर उसके इष्ट तक पंहुचा देता हैं, वही इष्ट के आशीर्वाद को साधक तक पहुचने का सेतु/हेतु भी बनता हैं

किसी भी साधना मे चाहे कोई साधक माने या न माने पर सफलता मे विगत जीवनों के कर्म फलो का बहुत योगदान रहता हैं ,और जब तक इनका एक निश्चितता मे अशुभ फल हटाये नही जाए सफलता मे वाधा आती हैं ही.पर यह कर्म तो हमारे द्वारा ही किये गए हैं तो उनका मार्जन भी हमें ही करना हैं अतः इस कार्य मे निश्चय ही उच्च्व चेतना और उच्च्व प्रज्ञा के बिना कैसे सफलता मिल सकती हैं .

कर्म फलों की कालावधि को कैसे कम किया जाये , कैसे साधना की जटिलता को कम करके मानव जीवन को उसके लक्ष्य तक पहुचाया जाये . यही साधना क्षेत्र के महत योगियों,मनीषियों और मर्मज्ञों का स्वप्न रहा हैं . इस यन्त्र रूपी उनके आशीर्वाद को चेतना कैसे दी जाये वही इस लेख की विषय वस्तु रही हैं . मैं आगे की पंक्तियों में ऐसे ही कुछ प्रक्रिया आपके सामने रख रहा हूँ. क्योंकि कैसे अपने प्राणों को अपने इष्ट से जोड़ दिया जाये .

1. **गुरू तत्व** ही सारे साधना पथ का एक आधार हैं , यही जीवन वायु हैं ,यही प्राण, यही आत्मा हैं बिना गुरू तत्व **के साधना पथ** का कोई अर्थ ही नही .क्योंकि यह सारा तंत्र और साधना मार्ग गुरू गम्य और गूरू मुख से प्राप्त ज्ञान **विज्ञानं पर** ही तो आधारित हैं.इसलिए गुरू तत्व की महिमा और गरिमा और उपयोगिता से तो सारा तंत्र साहित्य ओत प्रोत हैं इसलिए जब गुरू तत्व की महिमा इतनी हैं तो सदगुरुदेव तत्व का क्या कहना ....वह तो सारे तंत्र के

जनक और सारी सिद्धियों के प्रदाता हैं उनकी एक कृपा कटाक्ष पाने के लिए तो सारे देवी देवता और सिद्धाश्रम के सभी योगी भी इंतज़ार करते हैं,जो साधना वर्षों मे न संभव हो पाए वह उनके एक मधुर मुस्कान से एक क्षण के अंश मे यूँ ही संभव हैं तो साक्षात्भगवान शंकर के स्वरुप और यही ही नही बल्कि साक्षात् पार ब्रम्ह स्वरुप ही हैं. सदगुरुदेव जी से प्राप्त कोई धुल का भी कण भी उतना ही प्रभावशाली हैं जितना की कोई पूर्ण निर्माणित यन्त्र.उनका स्पर्श हो जाये और उनके श्री मुख से उस धुल के कण के लिए भी यदि बोल दिया जाये की यह तेरे लिए शंकर ही हैं तो वह भगवान शंकर ही होंगे उस साधक के लिए

2. आज वैदिक और एक योग्य तंत्र के ज्ञाता का चारो ओर अभाव देखा जाता हैं,एक ओर जहाँ वैदिक कमर्काण्ड मे दक्ष व्यक्तित्व और दूसरी ओर तंत्र की गोपनीय और रहस्मय प्रक्रियाओ का ज्ञाता किसी भी यन्त्र का चैतैन्यी करण कर सकता हैं हालकी वह किस स्तर तक यह कर सकता हैं वह तो उसके ज्ञान की सीमा पर आधारित हैं पर ऐसे किसी शास्त्राग्य से पूर्ण प्रमाणिक पद्धति से यदि प्रक्रिया संपन्न कर दी जाये तो भी उस यन्त्र में चैन्त्यता आ जाती हैं.

3. मानव जीवन की उपयोगिता और सार्थकता तभी हैं की उसकी कुण्डलिनी नाम की शक्ति का जागरण हो सके अन्यथा कुछ बातें सिर्फ छोड़ दी जाए तो मानव और पशु जीवन मे कोई बहुत बड़ा अंतर नही हैं.पर यह जागरण बहुत ही दुर्लभ प्रक्रियाओं के माध्यम से हो जाता हैं या किया जाता हैं,षट चक्र और सहस्त्रधार से युक्त यह विज्ञन अपने आप ने असीम संभावनाए लिए हुये हैं वास्तव मे जो हम मंत्र जप करते हैं वह भी इसी शक्ति को जगानेका एक माध्यम हैं और मंत्र मे लिखित शब्द या अक्षर रूपी ऊर्जा जा कर किसी विशेष चक्र मे जाकर उसके किसी विशेष पटल या दल मे उपस्थित किसी विशेष शक्ति को जाग्रत करने की कोशिश हैं. कई कई बार तो व्यक्ति का पूरा का पूरा जीवन लग जाता हैं और वह मुश्किल से ही कुछ उन्नति ही कर पाता हैं. यह कुण्डलिनी जागरण का विज्ञानं अत्यन्त ही जटिल और श्रम साध्य हैं.किसी पूर्ण कुंडलिनी जाग्रत साधक के मुख सेउच्चरित शब्द या संकल्प मात्र से भी वह यन्त्र प्राण प्रतिष्ठित बन जाता हैं

पर जब यह भी संभव न हो पा रहा हो चाहे कारण कोई और भी हो तब उस अवस्था के लिए एक सरल सी दुर्लभ प्रक्रिया आपके लिए भी ...

प्रातः ४ से ६ बजे के मध्य उठे , स्नान कर स्वेत वस्त्र धारण कर ,उतर दिशा की और मुह करके, सामने भगवान् रूद्र ओर सदगुरुदेव जी के चित्र के सामने बैठे सामने बजोट पर भी स्वेत वस्त्र बिछाएं.

पवित्रीकरण :अपने उलटे हाथ की हथेली मे थोडा सा जल लेकर निम्न मंत्र बोलते हुये जल अपने चारों ओर छिडके

ॐअपवित्र: पवित्रो वा सर्वास्थाम गतोऽपि वा|

य : स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्यआभ्यान्तर: शुचि||

इसके बाद

आचमन : आंतरिक तत्वों की शुद्धि के लिए यह प्रक्रिया अत्यंत ही आवश्यक हैं सीधे हाँथ में जल ले कर चार बार यह मन्त्र पढ़ें. और उस अभिमंत्रित जल को स्वयम जल को पी ले.

ॐ आत्म तत्वं शोधयामि स्वाहा|

ॐ विद्या तत्वं शोधयामि स्वाहा|

ॐ ज्ञान तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ शिव तत्वं शोधयामि स्वाहा |

इसके बाद दिग बंधन का स्थान आता हैं.

दशो दिशाओ मे से विघ्न आपको आपकी साधना मे वाधा न डाले इसलिए.

ॐ अपसर्प यन्तु ये भूता ये भूता भूमि संस्थिता|

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाग्या||

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम|

सर्वेषाम विरोधेन पुजाकर्म समारभे||

इसके बाद

अब सबसे पहले अपने सीधे हाथ मे जल लेकर संकल्प करे कीं" **मैं अमुक नाम,,मेरे पिता /पति का नाम अमुक हैं और अमुक स्थान की निवासी ,अमुक गोत्र उत्पन्न ,आज इस यन्त्र संस्कारित करने सदगुरुदेव आपके सामने यह प्रयोग सम्पन्न करने जा रहा /रही हूँ ,मुझे इस कार्य मे पूर्ण सफलता आप अपनी कृपा दृष्टी से प्रदान करें"**

इन संकल्प को लेने के बाद अपने सीधे हाथ की हथेली मे लिया जल को जमींन पर डाल दे.

इसके बाद भगवांन गणेश पूजन करें पूरे भक्तिभाव से

सुमुखश्चैकदन्त , कपिलो गजकर्णक:|

लम्बोदरश्च विकटो विघ्न नाशो विनायकः |

,धुर्मकेतु गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन:

द्वादशैतानी नामानी य :पठेस्चचछुणुयादपि||,

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा |

संग्रामे रिपुसंकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते||.

अब अपनी साधना का पूर्ण फल आपको प्राप्त हो .**और आपकी साधना पूर्ण रूप से कवचित हो .इस हेतु निखिलेश्वरानंद कवच का एक पाठ अवश्य करे.**

इसके बाद सदगुरुदेव से सबंधित किसी भी श्लोक या गुरू पूजन से सबंधित किसी भी श्लोक काउच्चारण करें.

गुरु ध्यान :

गुरुर्ब्रम्हा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर: ,

गुरु साक्षात् पर ब्रम्ह तस्मै श्री गुरवे नमः ||

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः ध्यान समर्पयामि |

इसके बाद पंचोपचार से सदगुरुदेव पूजन करें, पंचोपचार मतलब गंध पुष्प धूप दीप,नैवेद्य (भोग पदार्थ अर्पण).

पूजन :

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि |(श्री चरणों में जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः अर्ध्य समर्पयामि ||(हांथों में जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः कुंकुम तिलकं च समर्पयामि |(तिलक ओर अक्षत चढ़ाएं)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः धूपं दीपं दर्शयामि |(धुप और दीप जलाएं)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि |(नैवेद्य प्रसाद चढ़ाएं)

इसके बाद एक गोल सुपाड़ी को भगवान भैरव का प्रतीक मान कर उसका सिंदूर आदि से पूजन करें

इसके बाद आप कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप जरुर करे इसके बाद

यंत्र की चांदी या तांबे के पात्र में रख कर स्नान करवाए . इसके बाद 108 बार यन्त्र गायत्री मन्त्र पढ़े .

ॐ यंत्रराजाय विद्महे महा यंत्राय धीमहि तन्नो यन्त्र : प्रचोदयात |

निम्न मन्त्र का 108 बार उच्चारण करे .

ॐ आं क्रों ह्रीं असि आ उ सा य र ल व् श ष हंस अमुकस्य (यन्त्र का नाम यहाँ पर ले)त्वाग्र शास्त्र मांसमेदोऽस्थि मज्जा शुक्राणि धातव: अमुकस्य (पुनः नाम ले)यंत्रस्य

काय वाड.मन श्चाक्शु: गोत्र घ्राण मुख जिव्हा सर्वाणि इन्द्रियाणि शब्द स्पर्श गंध प्राणा यान समानोदान व्याना: सर्वे प्राणा: ज्ञान दर्शन प्राण श्च इहेब आशु आगच्छत आगच्छत संवोषटस्वाहा | अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ: ठ: स्वाहा | अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट वषट स्वाहा |अत्र सर्वजन सौख्याय चिरकालं नन्दतु वद्धातां वज्र मय भवन्तु | अहं वज्रमयान करोमि स्वाहा |

हाँथ में फूल लेकर यंत्र पर डाले

"नाना सुगंध पुष्पाणि यथा कालोद भवानी च

पुष्पान्जलीर मया दत्ता गृहाण परमेश्वरा "

प्रार्थना :

आह वानं न जानामि न जानामि विसर्जनं

पूजां चैव न जानामि क्षम्यता पमेश्वर

मंत्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वर

यत पूजितं मया देव परि पूर्णं तदस्तु में |

जंप समर्पण : हाँथ में फूल सदगुरुदेव् के चरणों ओर यन्त्र में अर्पित करे

ॐ गुह्यति गुह्य गोप्ताग्रहाण स्मत कृतं जपं सिद्धि : भवतु में देव त्वत प्रसादन महेश्वर ||

प्रार्थना :

ॐ पूर्ण मद : पूर्णमिदं पूर्णात पूर्णमुदच्यते पूर्णस्य पुर्णामादाय पूर्ण मेवाव शिष्यते ||

फिर जल को अपने पर छिणकते हुए उठ जाये

ॐ शांति: शांति: शांति:

इस प्रक्रिया को सफलता पूर्वक करते ही आपके द्वारा प्रक्रिया मे उपयोग मे लाया हुआ यन्त्र अपने आप मे चैतन्य हो जाता हैं और उसका आप अपनी साधना मे प्रयोग कर सकते हैं या अन्य उच्चतर क्रियाओं के लिए प्रयोग मे लिया जा सकता हैं क्योंकि उच्च क्रियाओं के लिए भी कई कई बार यन्त्र का सामान्य चैतन्यीकरण अव्रश्यक होता हैं ...

दुर्लभतम लघु अप्सरा साधना विधान

सौंदर्य शब्द का अर्थघटन करना या परिभाषित करना शायद ही संभव हो. सौंदर्य की परिभाषा और मापदंड हर एक व्यक्ति के लिए अलग अलग हो सकती है लेकिन जो क्रिया आकर्षण तत्व को जन्म देता है, प्रकृति की वही क्रिया सौंदर्य है चाहे वह किसी भी रूप में हो. अगर सौंदर्य तत्व के बारे में कहा जाए तो वह एक ऐसा तत्व होगा जो की पूर्ण हो, प्रकृति सम्पन्न हो और अपने मूल रूप में हो. विकृतियों से मुक्त हो तथा अपने आंतरिक तथा बाह्य आकर्षण क्षमता से युक्त हो हमने अपने पूर्वजो के बारे में सुना और पढ़ा है की हमारे पूर्वज सभी द्रष्टि से पूर्ण थे चाहे वह सौंदर्य हो या सम्पन्नता,वह अपने जीवन के सभी पक्षों में पूर्ण थे. वह विकृति से युक्त नहीं थे और इसी कारण तंत्र मर्मज्ञों ने तंत्र आचार्यों ने अप्सरा साधना का निर्माण किया,निश्चित रूप से इसका कारण उनका कोई काम भाव की ओर अग्रसर नही होना था वेसे भी यह तो व्यक्ति की दृष्टी पर निर्भर हैं की वह उसे किस दृष्टी से लेता हैं .क्योकि काम भाव तो जीवन के आवश्यक चार पुरुषार्थो मे से एक हैं ,जिसका परिपूर्ण होना भी अत्यावश्यक हैं और किसी भी दृष्टी से अपूर्णता होना ,यह जीवन के सर्वांगीण विकास के मार्ग मे वाधा हैं ,

जो सच मे सौंदर्य की ऊष्मा से युक्त होते हैं वह जीवन के हर क्षेत्र मे सफल होते जाते हैं .क्योंकि सौंदर्य के आकर्षण से कोई नही बच सकता हैं .अर्थात सौंदर्य की प्राप्ति का अर्थ होता है अपनी आतंरिक तथा बाह्य विकृतियों से मुक्ति तथा आतंरिक एवं बाह्य रूप से पूर्णता प्राप्त करने की और एक कदम बढ़ाना किसी भी तत्व का विशुद्ध रूप, उसका सबसे श्रेयस्कर रूप होता है जिसमे किसी भी प्रकार की अशुद्धि नहीं हो. हमारे आंतरिक अशुद्धियो को दूर कर विशुद्धता की प्राप्ति करना ही साधना हैऔर इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुये हमारे ऋषिमुनियों ने सौंदर्य साधनाओ को महत्वता दी. उन्होंने ऐसी साधनाओ के माध्यम से

मनुष्य के सामने भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों पक्षों को समान रूप से संपन्न बनने की क्रिया प्रस्तुत हमारे सामने रखी . सौंदर्य साधनाओ के माध्यम से ना सिर्फ उन्होंने अपने जीवन में आध्यात्मिक उन्नति की बल्कि उन्होंने पूर्ण सुख तथाभोग की प्राप्ति भी की.

जब ऐसे विशुद्ध सौंदर्य तत्व की संज्ञा, किसी को देनी हो तो उसे ही दी जा सकती है जिसके पास सही अर्थों में पूर्ण आतंरिक तथा बाह्य आकर्षण हो. जिनकी देह विशुद्ध हो, पूर्ण हो, विकृति का जहां पर दूर दूर तो कोई निशान भी नहीं होजो ब्रम्हांड में सब से सर्व श्रेष्ठ सौंदर्य युक्त हो. और अगर ऐसा सौंदर्य किसी में है तो वह अप्सरा है. अप्सरा को मात्र भोग्या के रूप में देखा जाना किसी भी रूप से योग्य नहीं है, यह हमारी न्यूनता है की हम ऐसी दिव्य साधना को मात्र शारीरिक तुष्टि के रूप में देखे वरन अप्सरा तो साधक को संसार में सर्वस्व प्रदान करने में समर्थ होती है. फिर वह चाहे शारीरिक सौंदर्य हो, चाहे वह आर्थिक लाभ हो, चाहे वह मानसिक तुष्टि हो. स्त्री तत्व से परिपूर्ण होने के कारण वह साधक के मनोभाव के अनुसार उसको सब कुछ प्रदान कर सकती है जिस प्रकार कोई देवी देवता को इष्ट स्वरुप में हम साधनारत हो कर उनके माध्यम से हम हमारी न्यूनताओ को दूर कर सकते है ठीक उसी प्रकार से अप्सरा साधनाओ के माध्यम से भी हम अपनी न्यूनताओ को दूर कर सकते है

अप्सरा की साधना के भी दो प्रकार है. एक प्रकार में साधक अप्सरा से सबंधित साधना कर के उसको अपनी प्रिया या दूसरे रूप(माँ या बहिन) में सिद्ध करता है तथा जीवन भर उससे कई प्रकार के लाभों की प्राप्ति कर सकता है. इस साधना का दूसरा प्रकार है अप्सरा से सबंधित लघु प्रयोग इन प्रयोगों के माध्यम से साधक जिस विषय हेतु साधना करता है अप्सरा साधक को उससे सबंधित समाधान तथा अनुकूलता प्रदान करती है और अप्सरा वर्ग मे उर्वशी, मेनका , रम्भा , तिलोत्तमा ,म्रिगाक्षी ऐसे कई सौंदर्य की अद्भुत जीवित प्रतिमाये हैं जिन पर मानो सारा सौंदर्य शास्त्र आधारित हैं जिनके रूप वर्णन के वृतातं से सभी साधक वर्ग कुछ हद तक परिचित भी हैं ,और इनका सौंदर्य इतना निर्दोष हैं के आज भी कोई रूपवती स्त्री को लोग देखकर यही कहते हैं की क्या अपने को अप्सरा समझती हैं .इसका मतलब स्पस्ट हैं की सौंदर्य की जो श्रेष्ठतम परिभाषा कही जा सकती हैं वह अप्सरा होती हैं . कई लघु प्रयोग गुप्त है जो की दिखने में तो सामान्य है लेकिन उसका प्रभाव अचूक होता है. ऐसे दुर्लभ प्रयोग गुरुमुखी प्रथा से ही हस्तांतरित होते है जिससे की ऐसे प्रयोगों की गरिमा बनी रहे क्यों की यह प्रयोग तीव्र होते है तथा साधक का अभीष्ट तुरंत ही पूरा करने की सामर्थ्य रखते है ऐसे ही कुछ गुप्त तथा सरल किन्तु तीव्र विधान आगे के पृष्ठों में स्पष्ट है जिनके माध्यम से साधक सबंधित लाभ प्राप्त कर सकते है तथा अपने जीवन को एक नया ही आयाम दे सकते है.

साधक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए की मन्त्र जप के वक्त अपने मानस में सौंदर्य से परिपूर्ण नारी अर्थात अप्सरा का बिम्ब रखे तथा उसी बिम्ब पर ध्यान एकाग्र करते हुवे मन्त्र जाप करे.

अप्सरा यक्षिणी रहस्य खंड

मनुष्य के सामने भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों पक्षों को समान रूप से संपन्न बनने की क्रिया प्रस्तुत हमारे सामने रखी . सौंदर्य साधनाओ के माध्यम से ना सिर्फ उन्होंने अपने जीवन में आध्यात्मिक उन्नति की बल्कि उन्होंने पूर्ण सुख तथाभोग की प्राप्ति भी की.

जब ऐसे विशुद्ध सौंदर्य तत्व की संज्ञा, किसी को देनी हो तो उसे ही दी जा सकती है जिसके पास सही अर्थो में पूर्ण आतंरिक तथा बाह्य आकर्षण हो. जिनकी देह विशुद्ध हो, पूर्ण हो, विकृति का जहां पर दूर दूर तो कोई निशान भी नहीं होजो ब्रम्हांड में सब से सर्व श्रेष्ठ सौंदर्य युक्त हो. और अगर ऐसा सौंदर्य किसी में है तो वह अप्सरा है. अप्सरा को मात्र भोग्या के रूप में देखा जाना किसी भी रूप से योग्य नहीं है, यह हमारी न्यूनता है की हम ऐसी दिव्य साधना को मात्र शारीरिक तुष्टि के रूप में देखे वरन अप्सरा तो साधक को संसार में सर्वस्व प्रदान करने में समर्थ होती है. फिर वह चाहे शारीरिक सौंदर्य हो, चाहे वह आर्थिक लाभ हो, चाहे वह मानसिक तुष्टि हो. स्त्री तत्व से परिपूर्ण होने के कारण वह साधक के मनोभाव के अनुसार उसको सब कुछ प्रदान कर सकती है जिस प्रकार कोई देवी देवता को इष्ट स्वरुप में हम साधनारत हो कर उनके माध्यम से हम हमारी न्यूनताओ को दूर कर सकते है ठीक उसी प्रकार से अप्सरा साधनाओ के माध्यम से भी हम अपनी न्यूनताओ को दूर कर सकते है

अप्सरा की साधना के भी दो प्रकार है. एक प्रकार में साधक अप्सरा से सबंधित साधना कर के उसको अपनी प्रिया या दूसरे रूप(माँ या बहिन) में सिद्ध करता है तथा जीवन भर उससे कई प्रकार के लाभों की प्राप्ति कर सकता है. इस साधना का दूसरा प्रकार है अप्सरा से सबंधित लघु प्रयोग इन प्रयोगों के माध्यम से साधक जिस विषय हेतु साधना करता है अप्सरा साधक को उससे सबंधित समाधान तथा अनुकूलता प्रदान करती है और अप्सरा वर्ग मे उर्वशी, मेनका , रम्भा , तिलोत्तमा ,म्रिगाक्षी ऐसे कई सौंदर्य की अद्भुत जीवित प्रतिमाये हैं जिन पर मानो सारा सौंदर्य शास्त्र आधारित हैं जिनके रूप वर्णन के वृतातं से सभी साधक वर्ग कुछ हद तक परिचित भी हैं ,और इनका सौंदर्य इतना निर्दोष हैं के आज भी कोई रूपवती स्त्री को लोग देखकर यही कहते हैं की क्या अपने को अप्सरा समझती हैं .इसका मतलब स्पस्ट हैं की सौंदर्य की जो श्रेष्ठतम परिभाषा कही जा सकती हैं वह अप्सरा होती हैं . कई लघु प्रयोग गुप्त है जो की दिखने में तो सामान्य है लेकिन उसका प्रभाव अचूक होता है. ऐसे दुर्लभ प्रयोग गुरुमुखी प्रथा से ही हस्तांतरित होते है जिससे की ऐसे प्रयोगों की गरिमा बनी रहे क्यों की यह प्रयोग तीव्र होते है तथा साधक का अभीष्ट तुरंत ही पूरा करने की सामर्थ्य रखते है ऐसे ही कुछ गुप्त तथा सरल किन्तु तीव्र विधान आगे के पृष्ठों में स्पष्ट है जिनके माध्यम से साधक सबंधित लाभ प्राप्त कर सकते है तथा अपने जीवन को एक नया ही आयाम दे सकते है.

साधक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए की मन्त्र जप के वक्त अपने मानस में सौंदर्य से परिपूर्ण नारी अर्थात अप्सरा का बिम्ब रखे तथा उसी बिम्ब पर ध्यान एकाग्र करते हुवे मन्त्र जाप करे.

पूर्ण सौंदर्य प्राप्ति हेतु रम्भाअप्सरा प्रयोग

अप्सरा वर्ग मे रम्भा अप्सरा का अपने आप मे एक महत्वपूर्ण स्थान हैं और इन्द्र की राज सभा मे इनकी महत्वर्पूर्णता से सभी अवगत हैं हर अप्सरा का एक विशेष रूप सौंदर्य हैं जो उस वर्ग की अन्य अप्सरा से उसे एक अलग ही स्थान देता हैं .और मित्र के रूप मे प्रेयसी के रूप मे इनका सानिध्य मिल पाना अपने आप मे सौभाग्य के कई कई द्वार खोल देने जैसा हैं .पर उसके लिए एक निश्चित साधना प्रक्रिया सम्पूर्ण क्रियाओं द्वारा की जाएतभी यह संभव हैं पर अगर साधक इन अप्सरा की शक्तियों का लाभ उठाना चाहे भले ही वह आज पूर्ण विधान कर उन्हें मित्र के रूप मे न पा पाए.यह भी संभव हैं और इस तरह प्राप्त की गयी अनुकूलता भविष्य की पूर्ण सफलता इस साधना को जब किया जाए उसमे सहयोगी होती हैं.

हर व्यक्ति आज सुन्दर बनना या दिखना चाहता हैं जो की न केबल भौतिक बल्कि आज व्यवसायिक जीवन मे भी सफलता का आधार हैं, भले ही आंतरिक सौंदर्य का अपना अर्थ हो पर बाह्य सौंदर्य की अपनी ही एक उपमा हैं, बाह्य सौंदर्य ही तो आंतरिक सौंदर्य जानने और समझने का एक आधार बनता हैं.आज के युग मे सभी विभिन्न सौंदर्य वस्तुओ का उपयोग करके सौन्दर्यवान दिखने का प्रयत्न कर ही रहे हैं.पर जो अस्थायी हैं.और अत्यधिक उपयोग करने पर अनेको प्रतिकूलताए उत्पन्न भी कर रहे हैं.क्योंकि इनके निर्माण मे अत्याि धक रासायनिक पदार्थो का भी तो ज्यादा उपयोग तो कहीं जंतु जगत के शरीर का भी उपयोग हो रहा हैं. इसके विपरीत यदि तंत्र जगत के इन प्रयोगों को समपन्न किया जाए तो की बहुत बड़े नही हैं,तो कहीं ज्यदा उच्चता सौंदर्य मापदडों के अनुसार मे पायी जा सकती हैं.

यह प्रयोग एक सरल प्रयोग हैं और मात्र तीन दिवस का प्रयोग है. इसको सम्पन्न करने पर साधक/साधिका के सौंदर्य में आश्चर्यजनक परिवर्तन आता है और यह परिवर्तन साधक /साधिका स्वयम अनुभव भी कर सकती हैं तथा साधक/साधिका को सभी प्रकार से उन्नति लाभ प्राप्त होता है.

साधक को यह प्रयोग किसी भी शुक्रवार की रात्रि में करना है. साधक रात्रि में १० बजे के बाद स्नान कर किसी भी प्रकार के सुसज्जित वस्त्रों को धारण करे साधक को गुलाब का इत्र अपने वस्त्रों और अपने शरीर पर लगाना चाहिए

इसके बाद साधक उत्तर दिशा की तरफ मुख कर पीलेरंग आसन पर बैठ जाए तथा अपने सामने 'पूर्ण यक्षिणी अप्सरा सायुज्जय षष्ठ मंडल' को किसी बाजोट पर स्थापित कर दें .

पवित्रीकरण :अपने उलटे हाथ की हथेली मे थोडा सा जल लेकर निम्न मंत्र बोलते हुये जल अपने चारों ओर छिडके

ॐअपवित्र: पवित्रो वा सर्वास्थाम गतोऽपि वा |

य : स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्यआभ्यान्तर: शुचि ||

इसके बाद

आचमन : आंतरिक तत्वों की शुद्धि के लिए यह प्रक्रिया अत्यंत ही आवश्यक हैं सीधे हाँथ में जल ले कर चार बार यह मन्त्र पढ़ें . और उस अभिमंत्रित जल को स्वयम जल को पी ले.

ॐ आत्म तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ विद्या तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ ज्ञान तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ शिव तत्वं शोधयामि स्वाहा |

इसके बाद दिग बंधन का स्थान आता हैं.

दशो दिशाओ मे से विघ्न आपको आपकी साधना मे वाधा न डाले इसलिए.

ॐ अपसर्प यन्तु ये भूता ये भूता भूमि संस्थिता|

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाग्या||

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम|

सर्वेषाम विरोधेन पुजाकर्म समारभे||

इसके बाद

अब सबसे पहले अपने सीधे हाथ मे जल लेकर संकल्प करे की" **मैं अमुक नाम,,मेरे पिता /पति का नाम अमुक हैं और अमुक स्थान की निवासी ,अमुक गोत्र उत्पन्न ,आज इस अमुक दिवस , अमुक प्रयोग करने सदगुरुदेव आपके सामने यह प्रयोग सम्पन्न करने जा रहा /रही हूँ ,मुझे इस कार्य मे पूर्ण सफलता आप अपनी कृपा दृष्टी से प्रदान करें "**

इन संकल्प को लेने के बाद अपने सीधे हाथ की हथेली मे लिया जल को जमींन पर डाल दे.

इसके बाद भगवान गणेश पूजन करें पूरे भक्ति भाव से

सुमुखश्चैकदन्त , कपिलो गजकर्णक:|

लम्बोदरश्च विकटो विघ्न नाशो विनायक: |

,धुर्मकेतु गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन:

द्वादशैतानी नामानी य :पठेस्चचछुणुयादपि||,

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा |

संग्रामे रिपुसंकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते||.

अब अपनी साधना का पूर्ण फल आपको प्राप्त हो .और आपकी साधना पूर्ण रूप से कवचित हो .इस हेतु निखिलेश्वरानंद कवच का एक पाठ अवश्य करे.

इसके बाद सदगुरुदेव से सबंधित किसी भी श्लोक या गुरू पूजन से सबंधित किसी भी श्लोक का उच्चारण करें.

गुरु ध्यान :

गुरुर्ब्रम्हा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर: ,

गुरु साक्षात् पर ब्रम्ह तस्मै श्री गुरवे नम: ||

श्री गुरु चरणे भ्यो नम: ध्यान समर्पयामि |

इसके बाद पंचोपचार से सदगुरुदेव पूजन करें, पंचोपचार मतलब गंध पुष्प धूप दीप,नैवेद्य (भोग पदार्थ अर्पण).

पूजन :

श्री गुरु चरणे भ्यो नम: पाद्यं समर्पयामि |(श्री चरणों में जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नम: अर्ध्य समर्पयामि ||(हांथों में जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नम: कुंकुम तिलकं च समर्पयामि |(तिलक ओर अक्षत चढ़ाएं)

श्री गुरु चरणे भ्यो नम: धूपं दीपं दर्शयामि |(धुप और दीप जलाएं)

श्री गुरु चरणे भ्यो नम: नैवेद्यं निवेदयामि |(नैवेद्य प्रसाद चढ़ाएं)

इसके बाद एक गोल सुपाड़ी को भगवान भैरव का प्रतीक मान कर उसका सिंदूर आदि से पूजन करें.

इसके बाद आप कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप जरुर करे इसके बाद
उस यन्त्र पर गुलाब के पुष्प अर्पित करे

इसके बाद साधक किसी भी मिठाई का भोग लगाए तथा स्फटिक माला से या अप्सरा माला से मन्त्र जप शुरू करे साधक को २१ माला मन्त्र जाप करना है.

ॐ श्रीं ह्रीं रम्भा अप्सरा प्रत्यक्ष सौंदर्य सिद्धिं ह्रीं श्रीं फट|

(OM SHREEM HREEM RAMBHAA APSARAA PRATYAKSH SAUNDARY SIDDHIM HREEM SHREEM PHAT)

मन्त्र जप पूर्ण होने पर साधक वह माला स्वयं अपने गले में धारण कर ले तथा मिठाई का भोग खुद ग्रहण करे

योग्य साधक मंत्र जप पूर्ण होने के बाद पुनः सदगुरुदेव पूजन और कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप करते हैं और इसके बाद किये हुये जप को सदगुरुदेव जी के श्री चरण कमलों मे को समर्पित कर देना चाहिए.

प्रार्थना :

आह वानं न जानामि न जानामि विसर्जनं

पूजां चैव न जानामि क्षम्यता पमेश्वर

मंत्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वर

यत पूजितं मया देव परि पूर्णं तदस्तु में |

जप समर्पण : हाँथ में फूल सदगुरुदेव् के चरणों ओर यन्त्र में अर्पित करे

ॐ गुह्यतिगुह्य गोप्ताग्रहाण स्मतकृतं जपं सिद्धि : भवतु में देव त्वतप्रसादन महेश्वर ||

साधक को वह माला रात्रि भर धारण करनी चाहिए तथा सुबह के समय वह माला पूजा स्थान में रख दे इस प्रकार ३ दिन तक करे. निश्चित रूप से इन तीन दिनों में ही साधक अपने सौंदर्य में परिवर्तन अनुभव करेगा. तीन दिन के पश्चात साधक उस माला को 7 दिन तक धारण करे. अगर साधक के लिएयदि दिन में माला को पहिनना संभव नहीं हो तो रात्रिकालसे सुबह तक यहमाला को ज़रूर धारण करना चाहिए. 7 दिन बाद इस माला को नदी, समुद्र या तालाब में प्रवाहित कर दे

आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु उर्वशी प्रयोग

धन का निरंतर आगमन होना तो जीवन को सुचारू रूप से गतिशील बनाये रखने के लिए आवश्यक हैं ही क्योंकि यह तो जीवन के चार पुरुषार्थो मे से एक हैं ,इसकी उपयोगिता तो काम तत्व के पहले हैं ,पर यह भी सत्य हैं की जिस तरह से आज महंगाई बढती जा रही हैं जीवन के लिए आवश्यक चीजों के मूल्य आकाश को छु रहे हैंउसके कारण धन और अधिक आवश्यकता आज सामने आ रही हैं,इस हेतु लक्ष्मी साधनाए की अपनी उपयोगिता तो हैं ही और साधक वर्ग इस बारे मे परिचित हैं पर अप्सरा साधना के लघु प्रयोग के माध्यम से ऐसा होना यह पहली बार इस तरह से आपके के सामने आरहा हैं .अभी तक तो साधको को यही ज्ञात रहा हैं की इस साधना के पूर्ण रूप से सफल होने पर हीआर्थिक लाभ संभव हो सकता हैं .और अप्सरा यक्षिणी साधनाओ के दुर्लभ रहस्य पहली बार इतनी सम्पूर्णता से आप सभी के सामने इस एक दिवसीय सेमीनार और इस पुस्तक के माध्यम से आ रहे हैं जिसके माध्यम से साधना करने पर निश्चित ही सफलता प्राप्ति के कई कई गुणा असार बढ़ जाते हैं.

उर्वशी का तो नाम ही इस बात का परिचायक हैं की ये कितनी यौवन गर्विता होगी और इन्द्र सभा की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी से सबंधित साधना वह भी धन प्राप्ति का यह दुर्लभ लघु प्रयोग अपनी सम्पूर्णता के साथ आपके सामने हैं आप इसे मनोयोग पूर्वक कर् सफलता पाए.

साधक यह प्रयोग शुक्रवार की रात्रि में १० बजे के बाद करे. साधक स्नान आदि से निवृत हो कर सुसज्जित वस्त्रों को धारण करे तथा इत्र लगाए. साधक को गुलाबी आसन पर बैठना चाहिए. साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ हो.

पवित्रीकरण :अपने उलटे हाथ की हथेली मे थोडा सा जल लेकर निम्न मंत्र बोलते हुये जल अपने चारों ओर छिडके

ॐअपवित्र: पवित्रो वा सर्वास्थाम गतोऽपि वा |

य : स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्यआभ्यान्तर: शुचि||

इसके बाद

आचमन : आंतरिक तत्वों की शुद्धि के लिए यह प्रक्रिया अत्यंत ही आवश्यक हैं सीधे हाँथ में जल ले कर चार बार यह मन्त्र पढ़ें . और उस अभिमंत्रित जल को स्वयम जल को पी ले.

ॐ आत्म तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ विद्या तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ ज्ञान तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ शिव तत्वं शोधयामि स्वाहा |

इसके बाद दिग बंधन का स्थान आता हैं.

दशो दिशाओ मे से विघ्न आपको आपकी साधना मे वाधा न डाले इसलिए.

ॐ अपसर्प यन्तु ये भूता ये भूता भूमि संस्थिता|

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाग्या||

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम|

सर्वेषाम विरोधेन पुजाकर्म समारभे||

इसके बाद

अब सबसे पहले अपने सीधे हाथ मे जल लेकर संकल्प करे की" **मैं अमुक नाम,,मेरे पिता /पति का नाम अमुक हैं और अमुक स्थान की निवासी ,अमुक गोत्र उत्पन्न ,आज इस अमुक दिवस , अमुक प्रयोग करने सदगुरुदेव आपके सामने यह प्रयोग सम्पन्न करने जा रहा /रही हूँ ,मुझे इस कार्य मे पूर्ण सफलता आप अपनी कृपा दृष्टी से प्रदान करें "**

इन संकल्प को लेने के बाद अपने सीधे हाथ की हथेली मे लिया जल को जमींन पर डाल दे.

इसके बाद भगवान गणेश पूजन करें पूरे भक्ति भाव से

सुमुखश्चैकदन्त , कपिलो गजकर्णक:|

लम्बोदरश्च विकटो विघ्न नाशो विनायकः |

,धुर्मकेतु गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन:

द्वादाशैतानी नामानी य :पठेस्चचछुणुयादपि||,

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा |

संग्रामे रिपुसंकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते|| .

अब अपनी साधना का पूर्ण फल आपको प्राप्त हो .**और आपकी साधना पूर्ण रूप से कवचित हो .इस हेतु निखिलेश्वरानंद कवच का एक पाठ अवश्य करे.**

इसके बाद सदगुरुदेव से सबंधित किसी भीश्लोक या गुरू पूजन से सबंधित किसी भी श्लोक का उच्चारण करें

गुरु ध्यान :

गुरुर्ब्रम्हा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर: ,

गुरु साक्षात् पर ब्रम्ह तस्मै श्री गुरवे नमः ||

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः ध्यान समर्पयामि |

इसके बाद पंचोपचार से सदगुरुदेव पूजन करें, पंचोपचार मतलब गंध पुष्प धूप दीप,नैवेद्य (भोग पदार्थ अर्पण).

पूजन :

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि |(श्री चरणों में जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः अर्ध्य समर्पयामि ||(हांथों में जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः कुंकुम तिलकं च समर्पयामि |(तिलक ओर अक्षत चढ़ाएं)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः धूपं दीपं दर्शयामि |(धुप और दीप जलाएं)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि |(नैवेद्य प्रसाद चढ़ाएं)

इसके बाद एक गोल सुपाड़ी को भगवान भैरव का प्रतीक मान कर उसका सिंदूर आदि से पूजन करें

इसके बाद आप कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप जरुर करे इसके बाद

साधक अपने सामने 'पूर्ण यक्षिणी अप्सरा सायुज्ज्य षष्ठ मंडलं को किसी बाजोट पर गुलाबी वस्त्र बिछा कर उस पर स्थापित करे. यन्त्र के ऊपर एक सफ़ेद रंग का हकीक पत्थर रख दे. साधक को केसर में दूध मिला कर उसकी स्याही जैसी बनानी चाहिए इस हकीक पत्थर पर उस स्याही से चांदी की या अनार की शलाका से 'श्रीं' लिखे. उस पर पुष्प अर्पित करे तथा मिठाई का भोग लगाए.

इसके बाद साधक निम्न लिखित मंत्र का 51 माला मन्त्र जप करे. यह मंत्र जप साधक स्फटिक माला से ,गुलाबी हकीक माला से या फिर अप्सरा माला से कर सकता है.

ॐ श्रीं उर्वशि सिद्धिं श्रीं फट्|

(OM SHREEM URVASHI SIDDHIM SHREEM PHAT)

योग्य साधक मंत्र जप पूर्ण होने के बाद पुनः सदगुरुदेव पूजन और कम से कम एक माला गु मंत्र जप करते हैं और इसके बाद किये हुये जप को सदगुरुदेव जी के श्री चरण कमलों मे को समर्पित कर देना चाहिए.

योग्य साधक मंत्र जप पूर्ण होने के बाद पुनः सदगुरुदेव पूजन और कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप करते हैंऔर इसके बाद किये हुये जप को सदगुरुदेव जी के श्री चरण कमलों मे को समर्पित कर देना चाहिए.

प्रार्थना :

आहवानं न जानामि न जानामि विसर्जनं

पूजां चैव न जानामि क्षम्यता पमेश्वर

मंत्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वर

यत पूजितं मया देव परि पूर्णं तदस्तु में |

जप समर्पण : हाँथ में फूल सदगुरुदेव् के चरणों ओर यन्त्र में अर्पित करे

ॐ गुह्यतिगुह्य गोप्ताग्रहाण स्मतकृतं जपं सिद्धि : भवतु में देव त्वतप्रसादन महेश्वर ||

मन्त्र जप पूर्ण होने पर साधक उस मिठाई का भोग खुद ही ग्रहण कर ले यन्त्र को पूजा स्थान में रख दे तथा हकीक पत्थर को जिस गुलाबी वस्त्र पर यन्त्र रखा गया था उस गुलाबी वस्त्र में रख कर पोटली बना ले इस पोटली को धूप दीप दिखाकर और तिजोरी या जहां धन रखा जाता है ऐसी जगह पर रख दे. इस प्रयोग को सफलता पूर्वक करने पर साधक को कही न कही से धन की प्राप्ति होती रहती है तथा साधक को धन से सबंधित सभी समस्याओ से मुक्ति मिलती है साधक को यह प्रयोग हर साल में एक बार कर लेना चाहिए. यह प्रयोग एक साल तक अपना पूर्ण प्रभाव दिखाता रहेगा. इसके बाद जब साधक वापस प्रयोग करना चाहे उस दिन

साधक उसी वस्त्र को बिछा कर उस पर यन्त्र रखे तथा हकीक पत्थर को उस पर रख दे. वस्त्र को धोना नहीं है और बदलना भी नहीं है. वस्त्र तथा हकीक पत्थर वही रहे. हकीक पत्थर के ऊपर वापस 'श्रीं' बीज का अंकन करना है और मन्त्र जप करना है. फिर पोटली बना कर धूप दे कर उसे वापस स्थापित कर देना है इस प्रकार हर साल एक बार यह प्रयोग करने पर उस वर्ष ,धन से सबंधित समस्या साधक को नहीं सताती है.

तिलोत्तमा अप्सरा प्रत्यक्ष प्रयोग
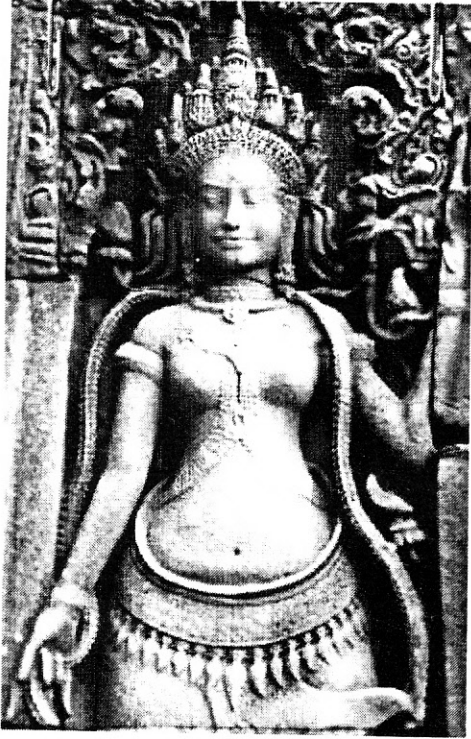
किसी भी अप्सरा को प्रत्यक्ष रूप से देखना और उसका साहचर्य पाना तो आदि काल से सभी का स्वप्न रहा हैं यूँ तो अप्सरा की संख्या कतिपय ग्रंथो मे 108 तक बताई गयी हैं और अनेको प्रयोग इन अप्सराओ का साहचर्य प्राप्त करने के लिए तंत्र ग्रंथो मे वर्णित हैं, सभी की महत्वता हैं पर सभी प्रयोग अपने आप मे कुछ न कुछ ऐसी कुंजिया और गुप्त रहस्य छुपाये हुये हैं जिनके न ज्ञात होने पर कितनी बार भी इस प्रकार के प्रयोग साधक वर्ग करता हैं और जब कई कई बार करने पर सफलता नही प्राप्त होती तब निश्चय ही निराशा का भाव आना स्वाभाविक हैं साधक समझ नही पाता की उससे गलती कहाँ पर हो रही हैं , इस सेमीनार मे आपके सामने इन्ही अति गोपनीय रहस्य का अनावृतिकरण होने जा रहा हैं ,और इन गुप्त सूत्रों ,कुंजियो और अभी तक प्रकाश मे नही आये इन रहस्यों को प्रयोग मे लाते हुये पूर्ण मनोयोग,विश्वास और एकाग्र चित्ता से इस साधना को करने पर सफलता तो आपके सामने होगी .

इन्द्र सभा की प्रमुख अप्सरा मे से एक तिलोत्तमा अप्सरा हैं और इसे अपने मित्र,प्रेयसी या सखी को रूप मे पाना तो जीवन का सौभाग्य हैं और इस देव दुर्लभ प्रयोग को सम्पन्न करना तो मानो जीवन की सफलता हैं और इस साधना मे पूर्णत्तपाना जीवन को एक उच्च अर्थ देना हैं .

यह 8 दिवसीय प्रयोग है. साधक को यह प्रयोग शुक्रवार की रात्रि से शुरू करना चाहिए समय रात्रिकाल में 10बजे के बाद का होना चाहिए . साधक स्नान करके सुसज्जित वस्त्र पहने तथा इत्र लगाए, साधक को उत्तर या पूर्व दिशा की तरफ मुख कर के सफ़ेद आसन पर बैठना चाहिए. इसके बाद साधक अपने सामने **'पूर्ण यक्षिणी अप्सरा सायुज्य षष्ठ**मंडल' को किसी बाजोट पर वस्त्र बिछा कर या कोई पात्र में स्थापित करे तथा यन्त्र का पूजन करे.

यह इस प्रकार से करें

पवित्रीकरण :अपने उलटे हाथ की हथेली मे थोडा सा जल लेकर निम्न मंत्र बोलते हुये जल अपने चारों ओर छिडके

ॐअपवित्र: पवित्रो वा सर्वास्थाम गतोऽपि वा |

य : स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्यआभ्यान्तर: शुचि ||

इसके बाद

आचमन : आंतरिक तत्वों की शुद्धि के लिए यह प्रक्रिया अत्यंत ही आवश्यक हैं सीधे हाँथ में जल लेकर चार बार यह मन्त्र पढ़ें . और उस अभिमंत्रित जल को स्वयम जल को पी ले.

ॐ आत्म तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ विद्या तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ ज्ञान तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ शिव तत्वं शोधयामि स्वाहा |

इसके बाद दिग बंधन का स्थान आता हैं.

दशो दिशाओ मे से विघ्न आपको आपकी साधना मे वाधा न डाले इसलिए.

ॐ अपसर्प यन्तु ये भूता ये भूता भूमि संस्थिता|

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाग्या||

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा: सर्वतो दिशम|

सर्वेषाम विरोधेन पुजाकर्म समारभे||

इसके बाद

अब सबसे पहले अपने सीधे हाथ मे जल लेकर संकल्प करे कीं" मैं अमुक नाम,,मेरे पिता /पति का नाम अमुक हैं और अमुक स्थान की निवासी ,अमुक गोत्र उत्पन्न ,आज इस अमुक दिवस , अमुक प्रयोग करने सदगुरुदेव आपके सामने यह प्रयोग सम्पन्न करने जा रहा /रही हूँ ,मुझे इस कार्य मे पूर्ण सफलता आप अपनी कृपा दृष्टी से प्रदान करें "

इन संकल्प को लेने के बाद अपने सीधे हाथ की हथेली मे लिया जल को जमींन पर डाल दे.

इसके बाद भगवान गणेश पूजन करें पूरे भक्ति भाव से

सुमुखश्चैकदन्त , कपिलो गजकर्णक:|

लम्बोदरश्च विकटो विघ्न नाशो विनायकः |

,धुर्मकेतु गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन:

द्वादशैतानी नामानी य :पठेस्चचछुणुयादपि||,

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा |

संग्रामे रिपुसंकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते|| .

अब अपनी साधना का पूर्ण फल आपको प्राप्त हो .और आपकी साधना पूर्ण रूप से कवचित हो .इस हेतु निखिलेश्वरानंद कवच का एक पाठ अवश्य करे.

इसके बाद सदगुरुदेव से सबंधित किसी भी श्लोक या गुरू पूजन से सबंधित किसी भी श्लोक का उच्चारण करें.

गुरु ध्यान :

गुरुर्ब्रम्हा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर: ,

गुरु साक्षात् पर ब्रम्ह तस्मै श्री गुरवे नमः ||

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः ध्यान समर्पयामि |

इसके बाद पंचोपचार से सदगुरुदेव पूजन करें, पंचोपचार मतलब गंध पुष्प धूप दीप,नैवेद्य (भोग पदार्थ अर्पण).

पूजन :

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि ||(श्री चरणों में जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः अर्ध्य समर्पयामि |||(हांथों में जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः कुंकुम तिलकं च समर्पयामि ||(तिलक ओर अक्षत चढ़ाएं)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः धूपं दीपं दर्शयामि |(धुप और दीप जलाएं)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि ||(नैवेद्य प्रसाद चढ़ाएं)

इसके बाद एक गोल सुपाड़ी को भगवान भैरव का प्रतीक मान कर उसका सिंदूर आदि से पूजन करें

इसके बाद आप कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप जरुर करे इसके बाद पूजन के बाद साधक मिठाई का भोग लगाए, तथा यन्त्र पर गुलाब के पुष्प

'ॐ ऐं नमः'|

(OM AING NAMAH)

बोल कर अर्पित करे. इस प्रकार ११ गुलाब के पुष्पों को साधक अर्पित करे यह क्रिया नित्य होनी चाहिए.इसके बाद साधक को निम्न मन्त्र स्फटिक, सफ़ेद हकीक या अप्सरा माला से २१ माला मन्त्र जप करे.

ॐ ऐं तिलोत्तमा प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष ठः ठः|

(OM AING TILOTTAMAA PRATYAKSH PRATYAKSH THAH THAH)

मन्त्र जप क्रोध मुद्रा में हो. साधक की मुट्ठी बंधी हुई हो इस प्रकार २१ माला हो जाने पर साधक भोग में लगाई गई मिठाई को खुद ग्रहण करे. तथा गुलाब पुष्पों को एकत्रित कर के रख दे रोज़ जो पुष्प एकत्रित होते है उनको साधना पूर्ण होने के बाद एक साथ विसर्जित किया जा सकता है.

इस प्रकार नित्य मन्त्र जप होना चाहिए. साधना के अंतिम दिन साधक को मिठाई के साथ साथ एक लगा हुआ पान का बीड़ा जिसमे इलाइची डाली गई हो उसे भी भोग में प्रस्तुत करे साथ ही साथ साधक को दो पुष्प मालायें को भी रख ले.

२१ माला पूर्ण होते होते अप्सरा साधक के सामने प्रत्यक्ष होती है लेकिन साधक को मन्त्र जप पूर्ण करना ही है २१ माला पूर्ण होने के बाद साधक अप्सरा से वचन ले की वह जीवनभर साधक को प्रिया रूप में सिद्ध रहेगी तथा पूर्ण रूप से सहयोग प्रदान करती रहेगी और जब भी साधक इस मन्त्र का ११ बार उच्चारण करेगा तब वह प्रत्यक्ष हो जाएगी. ऐसा करने पर अप्सरा वचन देती है तथा पुष्पमाला उठा कर साधक के गले में पहिना देती है तब साधक को दूसरी माला उठा कर उसके गले में पहिना देनी चाहिए. इस प्रकार साधना पूर्ण होती है

योग्य साधक मंत्र जप पूर्ण होने के बाद पुनः सदगुरुदेव पूजन और कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप करते हैंऔर इसके बाद किये हुये जप को सदगुरुदेव जी के श्री चरण कमलों मेको समर्पित कर देना चाहिए.

प्रार्थना :

आह वानं न जानामि न जानामि विसर्जनं

पूजां चैव न जानामि क्षम्यता पमेश्वर

मंत्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वर

यत पूजितं मया देव परि पूर्णं तदस्तु में |

जप समर्पण : हाँथ में फूल सदगुरुदेव् के चरणों ओर यन्त्र में अर्पित करे

ॐ गुह्यतिगुह्य गोप्ताग्रहाण स्मतकृतं जपं सिद्धि : भवतु में देव त्वतप्रसादन महेश्वर ||

तथा साधक जब भी इस मन्त्र का ११ बार उच्चारण करता है तब अप्सरा प्रत्यक्ष उपस्थित होती है तथा साधक की जो भी इच्छा होती है उसे पूर्ण करतीहै. साधक को यन्त्र तथा माला को पूजा स्थान में रख देना है साधक दूसरे दिन पुष्पमाला और दूसरे पुष्पों को तथा पान को विसर्जित कर दे.

अत्यंत दुर्लभतम जैन तंत्र पद्धति युक्त यक्षिणी साधना विधान

भारतीय साधना पद्धिति मे अनेको मार्ग और धर्मगत पद्धिति हैं ,इनमे एक जैन धर्म से सबंध रखने वाली पद्धति हैं यूँ तो सामान्यतः जैन धर्म मे तंत्र गत चर्चा नही होती हैं पर अत्यंत ही गुप्त रूप से इस तंत्र जगत का एक विशालसाहित्य जैन धर्म मे हैं .जो सिर्फ इनके आचार्यों द्वारा सिर्फ अति योग्य अधिकारी सुपात्रो के मध्य ही रहता हैं. क्योंकि जैन तंत्र पद्धति अपने आप में एक अत्याधिक गूढ़ और तीव्र पद्धति है बहुत ही गुप्त रूप से जैन धर्म में कई सदियों से तंत्र का अभ्यास होता आया है तथा कई जैन मुनियो ने तंत्र मार्ग में कीर्तिमान कायम किये है उच्चतम रस सिद्ध मुनि जिन्नसूरी से ले कर नागार्जुन को आकाशगामिनी विद्या का ज्ञान कराने वाले पाद् लिप्त सूरी जैसे कई महान सिद्धो के कहानिया जन मानस के मध्य में प्रचलित है ही. जैन धर्म से सबंधित पुरातन साहित्य का अध्ययन किया जाए तो निर्विवादित रूप से ये निष्कर्ष निकाला जा सकता है की निश्चित रूप से इस धर्म का घनिष्ठ सबंध यक्ष लोक, यक्ष तथा यक्षिणियों से रहा है. 'त्रिलोकप्रज्ञाप्ति' में यक्ष लोक से सबंधित बहुत ही सूक्ष्म विवरण दिया गया है इसके साथ ही साथ यक्ष लोक की शासकीय व्यवस्था के बारे में भी प्रकाश डाला गया है. जैन धर्म में यक्षों को देवता का पद प्राप्त है और कई लोगो ने यक्षों और यक्षिणियों की उपासना कर कई प्रकार की सिद्धि प्राप्त की है ऐसे कई उदाहरण सबंधित साहित्य में प्राप्त होते है इस प्रकार के कई प्रकार के तंत्र प्रयोग तथा श्राप निवारण के लिए मणिभद्र यक्ष की उपासना तथा त्रिकालज्ञान के लिए घंटीका उपासना का विवरण प्राप्त होता है.

किसी भी प्रकार की साधना में अगर व्यक्ति को उससे सबंधित गुप्त प्रक्रियाओ का ज्ञान न हो तो उस साधना मे सफलता प्राप्त करना संभव नहीं होता है व्यक्ति को साधना की प्रक्रिया चाहे कहीं से भी मिल जाए लेकिन जब तक उसके मूल रहस्य या मूल क्रियाओ के बारे में ज्ञान नहीं होता साधक को पूर्ण सफलता की प्राप्ति नहीं होती है

लेकिन इसी दुर्लभता को इस सेमीनार के माध्यम से हम संभव करने का मानस बनाने जा रहे हैं, क्योंकि इस युग मे जब साधको को सफलता मिलेगी ही नही तो इस तंत्र जगत पर विश्वास कैसे कर पायेंगे .और इस विसंगति को दूर करने के लिए प्रायोगिक रूप मे साधक /साधिकाओ के सामने इन तथ्यों को सामने रखने के लिए इस एक दिवसीय सेमीनार का आयोजन किया गया हैं .जो की इस युग की आवश्यकता हैं ,कारण यह भी हैं की अब आधुनिक जीवन शैली के कारण व्यस्तता इतनी अधिक बढ़ गयी हैं की अगर उसी पुराने युग के माप दंड यदि आज सीखने वालों पर लगाए जायेंगे तो जो भी सुपात्र आज हो रहे हैं वह भी आज पात्र नही हो पायेंगे.इस कारण सदगुरुदेव जी के सन्यासी शिष्य शिष्याओ ने द्वारा यह अनुमति प्रदान की गयी की अब युग अनुकूल व्यवस्था का होना अब बहुत ही आवश्यक हैं.

कहा भी गया हैं की जैन तंत्र से सबंधित सभी साधनाए तीव्र होती है तथा तुरंत फलप्रदान करने वाली होती है लेकिन यक्ष और यक्षिणी की साधना के बारे में इस पद्धति में भी अत्याधिक गुप्तता बनी हुई है जैन तांत्रिक साधनाओ के बारे में कहा जाता है की कोई एक साधना भी व्यक्ति अगर योग्य रूप से कर लेगा और उसमे पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेगा तो उसे जीवन भर किसी भी क्षेत्र में पीछे मुड कर नहीं देखना पड़ता है. तो फिर यक्षों की तो देव श्रेणी है. और उनका प्रत्यक्षीकरण और उनकी साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त करने का विधान निश्चित रूप से कई प्रकार के रहस्यों को अपने आप में समाहित किया हुआ है.यक्ष योनी निश्चित रूप से मानव योनी के ऊपर की योनी हैं यह एक अलग तथ्य हैं की वे चतुर्थ भुतात्मक हैं और मानव पञ्च भुतात्मक हैं

यह तथ्य भी साधको को जानना समझना चाहिए की किसी अन्य साधना की तरह इस साधना को किसी भी पुरुष या स्त्री के द्वारा बिना हिचक समपन्न किया जा सकता हैं , इसमें किसी भी प्रकार की वाधा या अड़चन या हिचकिचाहट नही होना चाहिए .बल्कि यक्षिणी साधना तो जीवन का सौंदर्य हैं . और जिसने भी इन साधनाओ को सफलता पूर्वक समपन्न किया उसने एक अलग ही श्रेष्ठता अपने जीवन मे पायी हैं एक ओर इस साधना मे सफलता पाकर उसका विश्वास तंत्र जगत की साधनाओ की ओर बढ़ता हैं तो दूसरी ओर वह भी सफलता पाकर यह जान जाता हैं की वह किसी भी साधना मे अब सफलता पा सकता हैं .

साथ ही साथ यह भी समझ लेना चाहिए की अप्सरा और यक्षिणी मे क्या सामान्यतः अंतर होता हैं .क्योंकि यह एक दिवसीय सेमीनार इस दोनों साधनाओ पर ही मुख्यतः केंद्रित हैं. अप्सरा यौवन गर्विता कही ज्यादा होती हैं .और इनकी अनुकूलता पाने केलिए कई कई बार साधना करनी पड़ सकती हैं पर यक्षिणी तो लावण्य पक्ष से अपने आप मे एक मिसाल होती हैं . ये स्वयम ही मानव वर्ग से संपक करने के लिए उतावली होती हैं.इस कारण इनकी साधना मे सफलता पाना अपेक्षाकृत कहीं ज्यादा आसानी हैं .यक्षिणी यक्ष वर्ग से सबंधित होती हैं .इस कारण ये साधक धन आदि से आपूरित कर देती हैं.और चूँकि ये काम और विलासी वर्ग से सबंधित होने के कारण जब इनकी साधना की जाती हैं तब साधक के मन मे इन भावना की प्रबलता होना स्वाभाविक हैं पर जैन धर्म चूँकि स्व नियंत्रण पर कहीं जयादा ध्यान रखता हैं.इस कारण इनके माध्यम से जो साधनाए बनायीं गयी उनमे इस बात का विशेष ध्यान रखा गया

जैन तंत्र के माध्यम से किसी भी यक्ष या यक्षिणी की साधना शुरू करने से पूर्व अगर व्यक्ति यक्ष यक्षिणी काम्य तंत्र प्रयोग कर ले तो सफलता निश्चित रूप से प्राप्त होती है. ऐसे कई विधान है जो मात्र गुरु मुखी प्रणाली से ही शिष्यों को प्राप्त होते थे और ऐसे विधानों को मात्र कुछ योग्य शिष्यों को ही गुप्त रूप से बताया जाता था

इस अद्भुत विधान में तीन चरण है

इसका प्रथम चरण है क्रोधबीज युक्त आकाशमंडल यन्त्र का निर्माण करना

सम्पूर्ण विश्व पांच तत्वों के संयोग से बना हैं ये हैं धरती ,आकाश , जल ,वायु अग्नि ,और इनमे आकाशतत्व पञ्च तत्वों में प्रमुख है क्योंकी उसी तत्व से दूसरे तत्वों की संरचना हुई हैयह तत्व सर्व व्यापी है इस प्रकार आकाश तत्व के माध्यम से ही हमारा सबंध लोक लोकान्तरो से हो सकता है. अगर हम क्रोधबीजयुक्त आकाश मंडल यन्त्र का निर्माण कर लेते है तो आकाशतत्व के माध्यम से उस लोक लोकान्तरो का संपर्क बन जाता है और क्रोधबीज होने के कारण यह संपर्क और आवाहन ,वीर भाव से युक्त हो जाता हैयह बीर भाव का होना अपने आप मे एकविशिष्ट तथ्य हैं .इस कारण इस मंडल का साधक के पास होना या निर्माण करना अपने आप मे एक सौभाग्य हैं .

इसके बाद साधक को मंत्रजप करना ही शेष रहता है जिससे की यक्षिणी का स्थापन उस मंडलयंत्र में हो सके

इसका द्वितीय चरण मणिभद्रप्रसन्न प्रयोग है.

देव मणिभद्र, यक्षों की सेना के सेनापति माने गए है तथा उनके आशीर्वाद से किसी भी साधना में सफलता प्राप्त हो सकती है. अतः देव मणिभद्र के विशेष यन्त्र का निर्माण करना आवश्यक है. तथा उस यन्त्र के सामने मणिभद्र मन्त्र का जप करना होता है. इसके फल स्वरुप देव मणिभद्र साधक को आशीष प्रदान करते है तथा साधक को सफलता की ओर अग्रसर करते है.इसके अतिरिक्त भविष्य में अगर साधक किसी भी प्रकार का काम्य प्रयोग करता है तो उसे उस प्रयोग में सफलता मिलती है.इस तरह से देखा जाए तो देव मणि भद्र की अनुकूलता उसे हर काम्य प्रयोग मे प्राप्त होना यह भीअपने आप मे एक सौभाग्य शाली तथ्य हैं .

इसका तृतीय चरण अत्यधिक महत्वपूर्ण है इसे यक्ष मंडल स्थापन प्रयोग कहा जाता है.

इस प्रक्रिया में यक्ष तथा यक्षिणी मंडल को आकाशमंडल यन्त्र में स्थापित किया जाता है. सर्व प्रथम स्थापन मंत्रो से २४ महायक्ष, महायक्षिणी तथा २४ तीर्थंकरों का यन्त्र के मध्य आवाहन और स्थापन किया जाता है. इसके बाद यन्त्र में इन सब देव शक्तियों को स्थायित्व देने के लिए एक विशेष मंत्र का जप किया जाता है जिससे की समस्त यक्षयक्षिणी मंडल यन्त्र के मध्य स्थायी रूप से स्थापित हो जाए. इस प्रक्रिया के बाद एक और विशेष मंत्र का जप करना रहता है जो की यक्षराज से सबंधित है इस मंत्र के माध्यम से यक्षिणीयाँ साधक की तरफ आकर्षित होने लगती है. इस प्रकार यह विधान पूर्ण होता है अब जब भी साधक को प्रयोग करना हो तब साधक मूल विधान को शुरू करने से पहले यक्षिणी वशीकरण प्रयोग कर ले तो वह यक्षिणी का वशीकरण हो जाता है और यक्षिणी तीव्र आकर्षण से युक्त हो कर साधक को अपना साहचर्य देने के लिए आतुर हो जाती हैअतः यह देव दुर्लभ विधान लगता अपने आप मे बड़ा जरुर हैं पर इसकी उपयोगिता एक साधक के लिए शब्दों मे बाँधी नही जा सकती हैं .और इस तरह का प्रयोग अपनी पूर्णता के साथ आज आपके सामने आ रहा हैं यह भी सदगुरुदेव जी की विशेष कृपा का एक उदहरण हैं क्योंकि ऐसे दुर्लभतम विधान बहुत ही कम लोगों को ज्ञात हैं और जिन्हें भी ज्ञात हैं वह किसी भी कीमत मे इस तरह से इस रहस्य को सभी के लिए उपलब्ध कराए ऐसा होना या ऐसा अवसर होना अपने आप मे ही दुर्लभ हैं.

1.क्रोधबीज युक्त आकाशमंडल यन्त्र

साधक को सर्व प्रथम क्रोधबीज युक्त आकाश मंडल का निर्माण करना चाहिए

यह कार्य साधक किसी भी शुक्रवार की रात्रि में करना चाहिए, साधक को दिन में कुछ नहीं खाना चाहिए **(अर्थात वह पानी आदि पी सकता हैं ,इस बात का ध्यान रहे की अगर कोई आपको चिकित्सीय समस्या हैं आपके स्वास्थ्य के लिए यह या अन्य कोई भी प्रक्रिया आपको अनुकूल न लग रही हो तो अपने स्वास्थ्य के साथ खिलवाड ना करें ,इस बात को हर साधना के लिए आवश्यक माना जाना चहिये)**तथा रात्रिकाल में भोजन में मात्र खीर लेनी चाहिए. इसके बाद साधक १० बजे के बाद स्नान करे सफ़ेद वस्त्रों को धारण करे. साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ होना चाहिए, साधक को पुरे उत्साह और पूरी प्रसन्न चित्तता के साथ सफ़ेद उनी आसन पर बैठना चाहिए.

सर्व प्रथम साधक गुरुपूजन करे और सदगुरुदेव से कार्य सफलता के लिए आशीर्वाद के लिए प्राथना करे.यह इस प्रकार से करें

पवित्रीकरण :अपने उलटे हाथ की हथेली मे थोडा सा जल लेकर निम्न मंत्र बोलते हुये जल अपने चारों ओर छिड़के

ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वास्थाम गतोऽपि वा |

य : स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्यआभ्यन्तर: शुचि ||

इसके बाद

आचमन : आंतरिक तत्वों की शुद्धि के लिए यह प्रक्रिया अत्यंत ही आवश्यक हैं सीधे हाँथ में जल ले कर चार बार यह मन्त्र पढ़ें . और उस अभिमंत्रित जलको स्वयम जल को पी ले.

ॐ आत्म तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ विद्या तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ ज्ञान तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ शिव तत्वं शोधयामि स्वाहा |

इसके बाद दिग बंधन का स्थान आता हैं.

दशो दिशाओ मे से विघ्न आपको आपकी साधना मे वाधा न डाले इसलिए .

ॐ अपसर्प यन्तु ये भूता ये भूता भूमि संस्थिता|

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाग्या||

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम|

सर्वेषाम विरोधेन पुजाकर्म समारभे||

इसके बाद

अब सबसे पहले अपने सीधे हाथ मे जल लेकर संकल्प करे कीं" **मैं अमुक नाम,,मेरे पिता /पति का नाम अमुक हैं और अमुक स्थान की निवासी ,अमुक गोत्र उत्पन्न ,आज इस अमुक दिवस , अमुक प्रयोग करने सदगुरुदेव आपके सामने यह प्रयोग सम्पन्न करने जा रहा /रही हूँ ,मुझे इस कार्य मे पूर्ण सफलता आप अपनी कृपा दृष्टी से प्रदान करें "**

इन संकल्प को लेने के बाद अपने सीधे हाथ की हथेली मे लिया जल को जमींन पर डाल दे.

इसके बाद भगवान गणेश पूजन करें पूरे भक्ति भाव से

सुमुखश्चैकदन्त , कपिलो गजकर्णक:|

लम्बोदरश्च विकटो विघ्न नाशो विनायकः |

,धुर्मकेतु गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन:

द्वादाशैतानी नामानी य :पठेस्चचछ्रुणुयादपि||,

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा|

संग्रामे रिपुसंकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते||.

अब अपनी साधना का पूर्ण फल आपको प्राप्त हो .और आपकी साधना पूर्ण रूप से कवचित हो .इस हेतु निखिलेश्वरानंद कवच का एक पाठ अवश्य करे.

इसके बाद सदगुरुदेव से सबंधित किसी भी श्लोक या गुरू पूजन से सबंधित किसी भी श्लोक का उच्चारण करें.

गुरु ध्यान :

गुरुर्ब्रम्हा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर: ,

गुरु साक्षात् पर ब्रम्ह तस्मै श्री गुरवे नमः ||

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः ध्यान समर्पयामि|

इसके बाद पंचोपचार से. सदगुरुदेव पूजन करें, पंचोपचार मतलब गंध पुष्प धूप दीप,नैवेद्य (भोग पदार्थ अर्पण).

पूजन:

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि |(श्री चरणों में जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः अर्ध्य समर्पयामि ||(हांथों में जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः कुंकुम तिलकं च समर्पयामि |(तिलक ओर अक्षत चढ़ाएं)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः धूपं दीपं दर्शयामि |(धुप और दीप जलाएं)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि |(नैवेद्य प्रसाद चढ़ाएं)

इसके बाद एक गोल सुपाड़ी को भगवान भैरव का प्रतीक मान कर उसका सिंदूर आदि से पूजन करें

इसके बाद आप कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप जरुर करे इसके बादसाधक कुमकुम (लाल सिन्दूर) को पानी में घोल कर स्याही बनाए. इसके बाद किसी भी भोजपत्र को (जो कटा फटा न हो)अपने सामने रख कर उसमे यन्त्र निर्माण का कार्य शुरू करे. इस यन्त्र को बनाने के लिए साधक को चांदी की शलाका का उपयोग करना चाहिए, अगर यह किसी भी रूप में संभव ना हो पाए तो साधक को अनार की कलम का उपयोग करना चाहिए.

सर्व प्रथम साधक भोजपत्र के मध्य में बीज मंत्र 'हूं' लिखे.

इसके बाद साधक इसके ऊपर वर्तुल बनाए, वर्तुल बनाने के किसी चीज़ का सहारा लेना चाहे तो ले सकते है. लेकिन ये अंकन उसी कलम से और कुमकुम की स्याही से ही होना चाहिए. इसके बाद साधक इसके ऊपर एक और वर्तुल का निर्माण करे जो की पहले वर्तुल की अपेक्षा बड़ा हो तथा दोनों के मध्य में थोड़ी जगह बनी रहे. यह वर्तुल बाएँ से दाएँ तरफ या दूसरे शब्दों में घडी के कांटे की दिशा में बनाना चाहिए, उलटी तरफ से नहीं बनाना चाहिए.

इसके बाद साधक दोनों वर्तुलो के मध्य में जो जगह है उसमे चारों दिशाओ में 'ह ह' अंकित करे. यह अंकन सर्व प्रथम उत्तर फिर दक्षिण फिर पूर्व और फिर पश्चिम में होना चाहिए.

जब इस यन्त्र का निर्माण हो जाए तब साधक को उस यन्त्र के पास दीपक प्रज्वलित करना चाहिए. इसमें शुद्ध घी का दीपक जलाया जाता है. इसके बाद साधक को निम्न मंत्र की 11 माला मंत्र जाप करे. साधक को यह मंत्र सफ़ेद हकीक माला से या स्फटिक माला से करना चाहिए. साधक का ध्यान यन्त्र की तरफ होना चाहिए.

हर एक माला मंत्र जप पूर्ण होने पर साधक कुछ अक्षत को अपने हाथो में ले तथा ११ बार इसी मंत्र का उच्चारण कर वह चावल यन्त्र के ऊपर अर्पित करे. अक्षत समर्पित करने के बाद साधक वापस से मंत्र जप की माला करे. इस प्रकार साधक को ११ माला मंत्र जप करना है और ११ बार अक्षत को समर्पित करना है.

ॐ हूं सर्वयक्षिणी स्थापय किलय हूं फट्

(om hoom sarvyakshinee sthapay kilay hoom phat)

११ माला मंत्र जप हो जाने पर साधक उठे.

योग्य साधक मंत्र जप पूर्ण होने के बाद पुनः सदगुरुदेव पूजन और कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप करते हैंऔर इसके बाद किये हुये जप को सदगुरुदेव जी के श्री चरण कमलों मे को समर्पित कर देना चहिए.

प्रार्थना :

आहवानं न जानामि न जानामि विसर्जनं

पूजां चैव न जानामि क्षम्यता पमेश्वर

मंत्रहीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वर

यत पूजितं मया देव परि पूर्णं तदस्तु में |

जप समर्पण : हाँथ में फूल सदगुरुदेव् के चरणों ओर यन्त्र में अर्पित करे

ॐ गुह्यतिगुह्य गोप्ताग्रहाण स्मतकृतं जपं सिद्धि : भवतु में देव त्वतप्रसादन महेश्वर ||

तथा यन्त्र को किसी कांच की तैयार फ्रेम में रख ले जिससे की वह खराब ना हो. साधक को जो अक्षत यन्त्र के ऊपर अर्पित किये गए है उनको ले कर नदी में, समुद्र में या तालाब में विसर्जित कर देने चाहिए.

2. मणिभद्र प्रसन्न प्रयोग :

दूसरे दिन शनिवार को किसी भी शनिवार को साधक१० बजे के बाद स्नान करे तथा लाल वस्त्र को धारण करे. इसके बाद साधक लाल आसन पर बैठ जाए. साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ हो. अपने सामने साधक स्वयं के द्वारा निर्मित "क्रोधबीज युक्त आकाशमंडल यन्त्र" को स्थापित करे.

साधक सर्व प्रथम गुरु पूजन करे तथा गुरु मंत्र का जप करे.

यह इस प्रकार से करें

पवित्रीकरण :अपने उलटे हाथ की हथेली मे थोडा सा जल लेकर निम्न मंत्र बोलते हुये जल अपने चारों ओर छिडके

ॐअपवित्र: पवित्रो वा सर्वास्थाम गतोऽपि वा |

य : स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्यआभ्यन्तर: शुचि ||

इसके बाद

आचमन : आंतरिक तत्वों की शुद्धि के लिए यह प्रक्रिया अत्यंत ही आवश्यक हैं सीधे हाँथ में जल ले कर चार बार यह मन्त्र पढ़ें . और उस अभिमंत्रित जल को स्वयम जल को पी ले.

ॐ आत्म तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ विद्या तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ ज्ञान तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ शिव तत्वं शोधयामि स्वाहा |

इसके बाद दिग बंधन का स्थान आता हैं.

दशो दिशाओ मे से विघ्न आपको आपकी साधना मे वाधा न डाले इसलिए.

ॐ अपसर्प यन्तु ये भूता ये भूता भूमि संस्थिता|

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाग्या||

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम|

सर्वेषाम विरोधेन पुजाकर्म समारभे||

इसके बाद

अब सबसे पहले अपने सीधे हाथ मे जल लेकर संकल्प करे की" **मैं अमुक नाम,,मेरे पिता /पति का नाम अमुक हैं और अमुक स्थान की निवासी ,अमुक गोत्र उत्पन्न ,आज इस अमुक दिवस , अमुक प्रयोग करने सदगुरुदेव आपके सामने यह प्रयोग सम्पन्न करने जा रहा /रही हूँ ,मुझे इस कार्य मे पूर्ण सफलता आप अपनी कृपा दृष्टी से प्रदान करें "**

इन संकल्प को लेने के बाद अपने सीधे हाथ की हथेली मे लिया जल को जमींन पर डाल दे.

इसके बाद भगवान गणेश पूजन करें पूरे भक्ति भाव से

सुमुखश्चैकदन्त , कपिलो गजकर्णक:|

लम्बोदरश्च विकटो विघ्न नाशो विनायकः |

,धुर्मकेतु गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन:

द्वादाशैतानी नामानी य :पठेस्चचछ्रुणुयादपि||,

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा |

संग्रामे रिपुसंकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते|| .

अब अपनी साधना का पूर्ण फल आपको प्राप्त हो **.और आपकी साधना पूर्ण रूप से कवचित हो .इस हेतु निखिलेश्वरानंद कवच का एक पाठ अवश्य करे.**

इसके बाद सदगुरुदेव से सबंधित किसी भी श्लोक या गुरू पूजन से सबंधित किसी भी श्लोक का उच्चारण करें.

गुरु ध्यान :

गुरुर्ब्रम्हा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर: ,

गुरु साक्षात् पर ब्रम्ह तस्मै श्री गुरवे नमः ||

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः ध्यान समर्पयामि|

इसके बाद पंचोपचार से सदगुरुदेव पूजन करें, पंचोपचार मतलब गंध पुष्प धूप दीप,नैवेद्य (भोग पदार्थ अर्पण).

पूजन:

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि |(श्री चरणों में जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः अर्ध्य समर्पयामि ||(हांथों में जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः कुंकुम तिलकं च समर्पयामि |(तिलक ओर अक्षत चढ़ाएं)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः धूपं दीपं दर्शयामि |(धुप और दीप जलाएं)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि |(नैवेद्य प्रसाद चढ़ाएं)

इसके बाद एक गोल सुपाड़ी को भगवान भैरव का प्रतीक मान कर उसका सिंदूर आदि से पूजन करें

इसके बाद आप कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप जरुर करे इसके बाद साधक को अपने सामने मणिभद्र देव की कोई तस्वीर स्थापित करनी चाहिए तथा उनको लाल पुष्प समर्पित करने चाहिए, साधक को संभव हो तो मानसिक या पंचोपचार पूजा करना चाहिए. इसके बाद साधक आगे की प्रक्रिया को करे.
साधक अपने सामने यन्त्र को स्थापित करे तथा किसी दूसरे भोजपत्र को ले तथा अष्टगंध में पानी को मिला कर उसकी स्याही बनाए.

अब चांदी की कलम से साधक सर्व प्रथम साधक '**ॐ मणिभद्राय नमः**' लिखे.

इसके बाद साधक इसके ऊपर एक वर्तुल बनाये. वर्तुल के ऊपर साधक एक उर्ध्वमुखी त्रिकोण बनाए त्रिकोण के ऊपर साधक को फिर से एक वर्तुल बनाना है इसके बाद साधक को चोरस बनाना है. यह सभी आकृतियों का निर्माण साधक को बाएँ से दाएँ तरफ या दूसरे शब्दों में घडी के कांटे की दिशा में बनाना चाहिए जब यह कार्य हो जाए तब साधक को इस यन्त्र के चोरस के चारों कोण में बीज मंत्रो का अंकन करना है

साधक को सर्व प्रथम बीज मंत्र 'ह्रीं' लिखना है, फिर 'क्लीं', फिर 'श्रीं' तथा इसके बाद 'हूं' इस प्रकार चारो बीज का अंकन करना है.

'ह्रीं' बीज का अंकन वायव्य कोण में

'क्लीं' बीज का अंकन अग्नि कोण में

'श्रीं' बीज का अंकन इशान कोण में

'हूं' बीज का अंकन नैऋत्य कोण में करना है.

इस प्रकार इस यन्त्र निर्माण का कार्य समाप्त होने पर साधक को निम्न मंत्र की २१ माला मंत्र जप करना चाहिए, मंत्र जप के लिए जिस माला से आकाशमंडल यन्त्र के मंत्र जप किया गया है उसी माला का उपयोग करना चाहिए.

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं हूं मणिभद्राय यक्षाधिपतिये नमः|

(om hreem kleem shreem hoom manibhadraay yakshaadhipatiye namah)

हर एक माला मंत्र जप पूर्ण होने पर यन्त्र पर लाल पुष्प समर्पित करे पुष्प कोई भी हो लेकिन लाल रंग का हो इस प्रकार २१ माला मंत्रा जप करना हैं. तथा २१ पुष्प को समर्पित करना है

योग्य साधक मंत्र जप पूर्ण होने के बाद पुनः सदगुरुदेवपूजन और कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप करते हैं और इसके बाद किये हुये जप को सदगुरुदेव जी के श्री चरण कमलों मे को समर्पित कर देना चाहिए.

प्रार्थना :

आह वानं न जानामि न जानामि विसर्जनं

पूजां चैव न जानामि क्षम्यता पमेश्वर

मंत्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वर

यत पूजितं मया देव परि पूर्णं तदस्तु में |

जप समर्पण : हाँथ में फूल सदगुरुदेव् के चरणों ओर यन्त्र में अर्पित करे

ॐ गुह्यतिगुह्य गोप्ताग्रहाण स्मतकृतं जपं सिद्धि : भवतु में देव त्वतप्रसादन महेश्वर ||

3.यक्ष मण्डल स्थापन प्रयोग:

साधक को यह प्रयोग तीसरे दिन रविवार को या किसी भी रविवार को करना चाहिए. समय १० बजे के बाद का रहे.

साधक को सर्व प्रथम स्नान कर पीले या सफ़ेद वस्त्रों को धारण करना चाहिए. तथा जिस रंग के वस्त्र धारण किये हुए उसी रंग के आसान पर ऊतर दिशा की तरफ मुख कर बैठना चाहिए, अपने सामने साधक मणिभद्रयन्त्र तथा आकाशमंडल यन्त्र को रख ले.

अब साधक सर्वप्रथम गुरुपूजन करे

यह इस प्रकार से करें

पवित्रीकरण :अपने उलटे हाथ की हथेली मे थोडा सा जल लेकर निम्न मंत्र बोलते हुये जल अपने चारों ओर छिडके

ॐअपवित्र: पवित्रो वा सर्वास्थाम गतोऽपि वा |

य : स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्यआभ्यान्तर: शुचि ||

इसके बाद

आचमन : आंतरिक तत्वों की शुद्धि के लिए यह प्रक्रिया अत्यंत ही आवश्यक हैं सीधे हाँथ में जल ले कर चार बार यह मन्त्र पढ़ें . और उस अभिमंत्रित जल को स्वयम जल को पी ले.

ॐ आत्म तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ विद्या तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ ज्ञान तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ शिव तत्वं शोधयामि स्वाहा |

इसके बाद दिग बंधन का स्थान आता हैं.

दशो दिशाओ मे से विघ्न आपको आपकी साधना मे वाधा न डाले इसलिए.

ॐ अपसर्प यन्तु ये भूता ये भूता भूमि संस्थिता|

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाग्या||

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम|

सर्वेषाम विरोधेन पुजाकर्म समारभे||

इसके बाद

अब सबसे पहले अपने सीधे हाथ मे जल लेकर संकल्प करे की" **मैं अमुक नाम,,मेरे पिता /पति का नाम अमुक हैं और अमुक स्थान की निवासी ,अमुक गोत्र उत्पन्न ,आज इस अमुक दिवस , अमुक प्रयोग करने सदगुरुदेव आपके सामने यह प्रयोग सम्पन्न करने जा रहा /रही हूँ ,मुझे इस कार्य मे पूर्ण सफलता आप अपनी कृपा दृष्टी से प्रदान करें "**

इन संकल्प को लेने के बाद अपने सीधे हाथ की हथेली मे लिया जल को जमींन पर डाल दे.

इसके बाद भगवान गणेश पूजन करें पूरे भक्ति भाव से

सुमुखश्चैकदन्त , कपिलो गजकर्णक:|

लम्बोदरश्च विकटो विघ्न नाशो विनायकः |

,धुर्मकेतु गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन:

द्वादशैतानी नामानी य :पठेस्चचछुणुयादपि||,

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा |

संग्रामे रिपुसंकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते|| .

अब अपनी साधना का पूर्ण फल आपको प्राप्त हो .और आपकी साधना पूर्ण रूप से कवचित हो .इस हेतु **निखिलेश्वरानंद कवच का एक पाठ अवश्य करे.**

इसके बाद सदगुरुदेव से सबंधित किसी भी श्लोक या गुरू पूजन से सबंधित किसी भी श्लोक का उच्चारण करें.

गुरु ध्यान :

गुरुर्ब्रम्हा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर: ,

गुरु साक्षात् पर ब्रम्ह तस्मै श्री गुरवे नमः ||

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः ध्यान समर्पयामि |

इसके बाद पंचोपचार से सदगुरुदेव पूंजन करें, पंचोपचार मतलब गंध पुष्प धूप दीप,नैवेद्य (भोग पदार्थ अर्पण).

पूजन:

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि |(श्री चरणों में जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः अर्ध्य समर्पयामि ||(हांथों में जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः कुंकुम तिलकं च समर्पयामि |(तिलक ओर अक्षत चढ़ाएं)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः धूपं दीपं दर्शयामि |(धुप और दीप जलाएं)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि |(नैवेद्य प्रसाद चढ़ाएं)

इसके बाद एक गोल सुपाड़ी को भगवान भैरव का प्रतीक मान कर उसका सिंदूर आदि से पूजन करें

इसके बाद आप कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप जरुर करे इसके बाद

इसके बाद साधक कुमकुम में रंगे हुवे चावल को निम्न मंत्र बोलते हुये आकाशमंडल यन्त्र पर समर्पित करता जाए

ॐ ह्रीं यक्षराजाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते |

(om hreem yaksharaajaay aavaahayaami bhav bhav sthaapitam Namostute)

ॐ ह्रीं गौमुखाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं महायक्षाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं त्रिमुखाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं नायकाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं तुंबचार्य आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं कुसुमाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं मातंगाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं विजयाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं अजिताय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं ब्रह्माय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं मनुजाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं सुरकुमाराय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं षणमुख्य आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं पातालय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं किन्नाराय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं गरुडाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं गान्धर्वाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्राय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं कुबेराय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं वरुणाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं भृकुटयै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं गोमेधाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं पार्श्वाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं मातंग्यै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं चक्रेश्वर्याय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं अजितबलायै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं दुरितायै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं काल्यै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं महाकाल्यै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं अच्युतायै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं शान्तायै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं ज्वालायै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं सुतारिकायै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं अशोकायै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं वस्तायै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं प्रचण्डायै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं विजयायै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं अन्कुशायै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं पन्नगायै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं निर्वाणयै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते |

ॐ ह्रीं अच्युतायै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं धारिण्यै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं वैरोटयायै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं नरदत्तायै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं गान्धायै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं अम्बिकायै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं पद्मावत्यै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं सिद्धिकायै आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं आदिनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं अजितानाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं संभवनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं अभिनन्दनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं सुमतिनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं पद्मप्रभुनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते |

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभुनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं सुविधिनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं शीतलनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं श्रेयांशनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं वासुपूज्यनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं विमलनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं अनंतनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं धर्मनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं शांतिनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं कुन्थुनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं अरनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं मल्लिनानाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं सुव्रतस्वामीनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं नमिनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं नेमीनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

ॐ ह्रीं महावीराय आवाहयामि भव भव स्थापितं नमोस्तुते|

२४ महायक्ष, २४ महायक्षिणी तथा २४ तीर्थंकर स्थापन मंत्र के बाद साधक श्रद्धा से यन्त्र को नमस्कार करे. इसके बाद साधक निम्न मंत्र की ३ माला मंत्र जप करे. मंत्र जप उसी माला से हो जिससे आकाशमंडल तथा मणिभद्र प्रयोग में मंत्रजप किया गया था मंत्रजप से पूर्व साधक कोई सुगन्धि अगरबत्ती ज़रूर जलाये.

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लों ऐं यक्षराजाय मणिभद्राय सर्व यक्षयक्षिमण्डलाय अवतर अवतर स्थापय स्थापय तिष्ठ तिष्ठ हूं फट् स्वाहा|

(om hreem shreem kleem blom aim yaksharaajaay manibhadraay yakshayakshimandalaay avatar avatar sthaapay sthaapay tishth tishth hoom phat swaha)

इस मंत्र के जप के समय का ध्यान यन्त्र के ऊपर हो.

इस मंत्र की 3 माला मंत्र जप हो जाने के बाद साधक को निम्न मंत्र की 7 माला मंत्र जप करना चाहिए

ॐ श्रीं यक्षराजाय यक्षिणी सिद्धिं देहि देहि नमः |

(om shreem yaksharaajaay yakshinee siddhim dehi dehi namah)

मंत्र जप हो जाने पर इस आकाशमंडल यन्त्र को पुनः कुमकुम अक्षत, धुफ्दीप, पुष्प तथा खीर का भोग समर्पित करे

इसके बाद पुनः गुरुपूजन करे तथा आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करे

योग्य साधक मंत्र जप पूर्ण होने के बाद पुनः सद्गुरुदेव पूजन और कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप करते हैं और इसके बाद किये हुये जप को सदगुरुदेव जी के श्री चरण कमलों मे को समर्पित कर देना चाहिए.

प्रार्थना :

आह वानं न जानामि न जानामि विसर्जनं

पूजां चैव न जानामि क्षम्यता पमेश्वर

मंत्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वर

यत पूजितं मया देव परि पूर्णं तदस्तु में |

जप समर्पण : हाँथ में फूल सदगुरुदेव् के चरणों ओर यन्त्र में अर्पित करे

ॐ गुह्यतिगुह्य गोप्ताग्रहाण स्मतकृतं जपं सिद्धि : भवतु में देव त्वतप्रसादन महेश्वर ||

जो खीर का भोग लगाया गया था उसे स्वयं ग्रहण करे.

इसके बाद यन्त्र को पूजा स्थान में रख दे

जो चावल पुष्प आदि यन्त्र पर अर्पित किये गए हैं उसे दूसरे दिन किसी नदी समुद्र या तालाब में प्रवाहित कर दे किसी गरीब व्यक्ति को सफ़ेद वस्त्र तथा चावल अपनी सामर्थ्य अनुसार भेंट करे.

इस प्रकार यह विधान पूर्ण होता है

यक्षिणी वशीकरण प्रयोग:

साधक भविष्य में कभी भी जैन पद्धति से कोई भी यक्षिणी साधना करे तो अपने सामने सिद्ध आकाशमंडलयन्त्र को रख कर

यह इस प्रकार से करें

पवित्रीकरण :अपने उलटे हाथ की हथेली मे थोडा सा जल लेकर निम्न मंत्र बोलते हुये जल अपने चारों ओर छिडके

ॐअपवित्र: पवित्रो वा सर्वास्थाम गतोऽपि वा |

य : स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्यआभ्यान्तर: शुचि ||

इसके बाद

आचमन : आंतरिक तत्वों की शुद्धि के लिए यह प्रक्रिया अत्यंत ही आवश्यक हैं सीधे हाँथ में जल ले कर चार बार यह मन्त्र पढ़ें . और उस अभिमंत्रित जल को स्वयम जल को पी ले.

ॐ आत्म तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ विद्या तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ ज्ञान तत्वं शोधयामि स्वाहा |

ॐ शिव तत्वं शोधयामि स्वाहा |

इसके बाद दिग बंधन का स्थान आता हैं.

दशो दिशाओ मे से विघ्न आपको आपकी साधना मे वाधा न डाले इसलिए.

ॐ अपसर्प यन्तु ये भूता ये भूता भूमि संस्थिता|

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाग्या ||

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम|

सर्वेषाम विरोधेन पुजाकर्म समारभे||

इसके बाद अब सबसे पहले अपने सीधे हाथ मे जल लेकर संकल्प करे कीं' **मैं अमुक नाम,,मेरे पिता /पति का नाम अमुक हैं और अमुक स्थान की निवासी ,अमुक गोत्र उत्पन्न ,आज इस अमुक दिवस , अमुक प्रयोग करने सदगुरुदेव आपके सामने यह प्रयोग सम्पन्न करने जा रहा /रही हूँ ,मुझे इस कार्य मे पूर्ण सफलता आप अपनी कृपा दृष्टी से प्रदान करें "**

इन संकल्प को लेने के बाद अपने सीधे हाथ की हथेली मे लिया जल को जमींन पर डाल दे .

इसके बाद भगवान गणेश पूजन करें पूरे भक्ति भाव से

सुमुखश्चैकदन्त , कपिलो गजकर्णक:|

लम्बोदरश्च विकटो विघ्न नाशो विनायकः |

,धुर्मकेतु गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन:

द्वादाशैतानी नामानी य :पठेस्चचछुणुयादपि||,

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा |

संग्रामे रिपुसंकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते|| .

अब अपनी साधना का पूर्ण फल आपको प्राप्त हो .**और आपकी साधना पूर्ण रूप से कवचित हो .इस हेतु निखिलेश्वरानंद कवच का एक पाठ अवश्य करे.**

इसके बाद सदगुरुदेव से सबंधित किसी भी श्लोक या गुरू पूजन से सबंधित किसी भी श्लोक का उच्चारण करें

गुरु ध्यान :

गुरुर्ब्रम्हा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर: ,

गुरु साक्षात् पर ब्रम्ह तस्मै श्री गुरवे नमः ||

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः ध्यान समर्पयामि|

इसके बाद पंचोपचार से सदगुरुदेव पूजन करें, पंचोपचार मतलब गंध पुष्प धूप दीप,नैवेद्य (भोग पदार्थ अर्पण).

पूजन :

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि |(श्री चरणों में जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः अर्ध्यं समर्पयामि ||(हांथों में जल समर्पित करे)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः कुंकुम तिलकं च समर्पयामि |(तिलक ओर अक्षत चढ़ाएं)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः धूपं दीपं दर्शयामि |(धुप और दीप जलाएं)

श्री गुरु चरणे भ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि |(नैवेद्य प्रसाद चढ़ाएं)

इसके बाद एक गोल सुपाड़ी को भगवान भैरव का प्रतीक मान कर उसका सिंदूर आदि से पूजन करेंइसके बाद आप कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप जरुर करे इसके बादउसके सामने निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जाप मूल साधना शुरू करने से पहले करे.

ॐ ह्रीं यक्षिणीसिद्धिं वश्य वश्य हूं हूं हूं फट्

(om hreem yakshineesiddhim vashy vashy hoom hoom hoom phat)

इस प्रयोग में वस्त्र दिशा आदि वही रहेगी जिसका उल्लेख मूल साधना में हो मूल साधना में उपयोग में लाने वाली माला से ही इस प्रयोग को करे. इस प्रयोग के बाद मूल साधना को शुरू करे तो सफलता की प्राप्ति निश्चितहोती है क्यों की इस मन्त्र के माध्यम से यक्षिणी का पूर्ण वशीकरण हो जाता है

योग्य साधक मंत्र जप पूर्ण होने के बाद पुनः सदगुरुदेव पूजन और कम से कम एक माला गुरू मंत्र जप करते हैंऔर इसके बाद किये हुये जप को सदगुरुदेव जी के श्री चरण कमलों मे कोसमर्पित कर देना चाहिए.

प्रार्थना :

आह वानं न जानामि न जानामि विसर्जनं

पूजां चैव न जानामि क्षम्यता पमेश्वर

मंत्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वर

यत पूजितं मया देव परि पूर्णं तदस्तु में |

जप समर्पण : हाँथ में फूल सदगुरुदेव् के चरणों ओर यन्त्र में अर्पित करे

ॐ गुह्यतिगुह्य गोप्ताग्रहाण स्मतकृतं जपं सिद्धि : भवतु में देव त्वतप्रसादन महेश्वर ||

यक्षिणी अप्सरा साधना में निश्चित सफलता प्राप्ति के

परम दुर्लभ गोपनीय सूत्र

विद्याः समस्तासत्व देवि ! भेदाः

स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु |

त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्

का ते स्तुतिः स्तव्यपरापरोक्तिः ||

अर्थात "हे देवि ! तुम्ही ज्ञानरूपिणी हो,जगत में उच्चावच जितने भी प्रकार की विद्याएँ हैं,जिनके द्वारा लोगो के अज्ञान का अन्धकार दूर होता है और उस प्रकाश में वे सत्यासत्य को पहचान पाते हैंवे सभी तुम्हारा ही रूप है जो प्रकाशित हो रहा होता है,तुम्ही जगत की सभी स्त्रियों में विद्यमान हो,तुम्ही एकाकिनी समग्र जगत को पूर्ण करती हुयी उसके सर्वत्र में वर्तमान हो| तुम अतुलनीया हो,वक्यातीता हो,स्तुति करते हुए तुम्हारे अनंत गुणों का उल्लेख किसने ही कब कर पाया है या कब कर पाने में समर्थ हो सका है ???"

और कहा भी गया है की ये स्त्री तत्व ही तो है,ये नारी ही तो है जो साक्षात् शक्तिस्वरूपा है और उनकी सादर और अनुग्रह्यु प्राप्ति साधक को जीवन में सर्वोच्चता प्रदान करा देती है और वो स्वयं ही साधक को पवित्र करने में सक्षम है,क्योंकि –

"यस्या अंगे महेशानि सर्वतीर्थानि सन्ति वै |"

- स्त्री के अंगों में सभी तीर्थों का वास होता है,इसलिए वो सदा सर्वदा पवित्र तीर्थ स्वरुप है और स्वयं के साधक को भी स्वयं के अनुग्रह से पवित्र कर देती है| यहाँ ये तथ्य ध्यान रखने योग्य है की तंत्र में स्वयं के अनुग्रह की बात कही है अर्थात कुत्सित भाव या भोग्य समझ कर आचरण करने से जीवन में विनाश ही प्राप्त होगा और कुछ नहीं |

जब बात सौंदर्य की आती है,या फिर पूर्णता की तो मन स्वतः ही प्रकृति की ओर गतिशील हो जाता है,और प्रकृति को स्त्री ही कहा गया है| प्रकृति और शिव मिलकर ही तो पूर्णता की उत्पत्ति करते हैं| बात चाहे पुरुषोचित गुणों की हो या फिर आंतरिक सौंदर्य की,इस हेतु स्त्री तत्व ही हमें पूर्णत्वका बोध कराती हुयी पूर्णत्व के स्वप्न को साकार कर देती है|

मैंने कभी ये पढ़ा था की " यदि पुरुष में थोड़े से गुण स्त्री के आ जाएँ तो वो देवत्व की ओर अग्रसर हो जाता है,साथ ही स्त्री यदि पूर्ण स्त्रीत्व का बोध कर ले तो वो स्वयं ही प्रकृति रूपा होकर अपने प्रेमऔर स्नेह से पुरुष को पूर्णत्व प्रदान कर देती है| अर्धनारीश्वर होने का बहुत ही गहन अर्थ है, अर्थात जिसमें वीरता हो,साहस हो,चुनौतियों को परास्त करने का बल हो वहीं साथ ही साथ निर्बलों की रक्षा करते हुए प्राणिमात्र के लिए करुणा की लहर उठाने वाला ह्रदय भी हो, दूसरों के दु :ख से स्वयं भी दु खी होकर उन दु खों को दू र करने वाले भाव भी हो

अप्सरा,यक्षिणी उन्ही श्रेष्टतम वर्गों की स्त्री शक्तियां हैं जो साधक को जहाँ प्रेम,काम और सौंदर्य तत्व से परिपूर्ण करती हैं तो वही विभिन्न विधाओं,कला,शक्ति,रहस्य और ऐश्वर्य से भी परिपूर्ण करती हैं| इनके सहयोग से साधक काम भाव का धार्मिक और नैतिक महत्त्व भी समझता है और मोक्ष की भी प्राप्ति कर लेता है | **मोक्ष का अर्थ मर जाना नहीं होता है,अपितु मोक्ष का अर्थ है की चित्त की बैचेनी का जहाँ पूरी तरह अंत हो जाए और मन अथाह शांति और ब्रह्मानंद की अनुभूति से भर जाये |**

काम मात्र ऐन्द्रियक सुख नहीं है| अपितु काम की पूर्ण आत्मिक तृप्ति ही साधक का उत्थान करती है और उसे अध्यात्मिक उचाईयों की और अग्रसर करती है | अप्सरा और यक्षिणी सौंदर्यबोध,आकर्षण और अभिव्यक्ति के गुणों से साधक को परिपूर्ण कर देती हैं | इनकी साधना के द्वारा व्यक्ति को मात्र काम की शारीरिक तृप्ति ही नहीं होती है,अपितु काम भाव की सत्यता और उनके आनंद से ये आत्मिक योग की क्रिया भी संपन्न कर देती हैं,तब मन की उद्विग्नता तो रह ही नहीं सकती है |

बहुधा अप्सरा और यक्षिणी साधनाओं में सफलता प्रप्ति की की कामना साधकों को असंभव सी लगती है और उन्हें ये कपोल कल्पना ही लगती है,किन्तु जिन लोगो को सफलता मिली या उन्होंने सफलता का आस्वादन लिया वो कैसे कपोल कल्पित हो गए ??

वास्तव में साधना शब्द ही अपने आपको रहस्यों से भरे हुए है और यदि साधक कैसे भी इस परदे को खींच कर स्व प्रयत्नों से अलग कर दे तो साधक और साध्य के मध्य सिद्धि का प्रत्यक्षीकरण होता ही है | यूँ तो तंत्र साधना के लिए विभिन्न कुंजियों का प्रयोग सिद्ध साधक करते हैं और इसका तंत्र और आगम शास्त्रों में वर्णन भी है,किन्तु उसे इतनी जटिल भाषा में लिख गया है की उसका वास्तविक अर्थ समझना और उसका प्रयोग कर पाना इतना आसान तो नहीं है|

अप्सरा और यक्षिणी साधनाओं में सफलता के लिए बहुत सी क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है किन्तु सामान रूप से दोनों ही साधनाओं यदि निम्न क्रियाओं का प्रयोग किया जाए तो असफलता की संभावना ही नहीं रहती है | ये सभी क्रियाएँ गुरु मुख से ही शिष्यों को प्राप्त होती रही हैं,और इनके प्रयोग के द्वारा साधकों ने सफलता प्राप्त कर अपने गौरव ध्वज को और ऊँचाइयों तक पंहुचाया है|

- देह उत्थापन
- शिवशक्ति स्थापन
- नाभि मंत्र संस्कार
- माला संस्कार और देव सायुज्यीकरण
- सुमेरु शक्ति स्थापन
- आसन संस्कार
- वीर स्थापन - १. अप्सरा साधना हेतु –इन्द्र स्थापन

  २. यक्षिणी साधना हेतु - कुबेर स्थापन
- भैरव स्थापन
- भैरव उत्थापन
- मूलाधार इष्ट स्थापन
- मणिपुर इष्ट स्थापन
- अशुद्ध उच्चारण संस्कार
- जिव्हा संस्कार
- उत्थापन न्यास
- यन्त्र अंकन
- यन्त्र उत्थापन
- यन्त्र दीपन
- यन्त्र कीलन
- अप्सरा/यक्षिणी हृदय कीलन
- त्रिलोही मुद्रा
- सिद्ध मुद्रा

अप्सरा यक्षिणी रहस्य खंड

- **काम मुद्रा**

- **सिद्ध प्रयोग**

पढ़ने में भले ही ये जटिल क्रिया लग रही हो,किन्तु है नहीं,अपितु यदि साधक इन क्रियाओं को भली भांति समझ ले तो,उसे क्रियात्मक रूप से करना बहुत सरल हो जाता है| और वैसे भी जब हम सामान्य जीवन में विवाह संस्कार संपन्न करते हैं तो हम ना जाने अपने धर्म और सामाजिक मान्यताओं से बंधे हुए कितने नियमों को पूरा करते ही हैं,बस भी वैसा ही समझिए फिर आप देखेंगे की कैसे अत्यधिक दुष्कर कही जाने वाली सौंदर्य साधनाओं में आपको सफलता प्राप्त होती है|

१९८४-८५ में सदगुरुदेव ने धनदा यक्षिणी शिविर में इनमे से बहुत सी क्रियाओं को प्रायोगिक रूप से शिष्यों को ज्ञान दिया था और ठीक वैसे ही सम्पूर्ण तंत्र साधनाओंमें सफलता प्राप्ति के रहस्यों को **तंत्र साधना शिविर** में उजागर किया था और उसी का परिणाम है की इन कुंजियों का प्रयोग कर विभिन्न दुष्कर और दुसाध्य साधनाओं में सैकडो साधकों को सफलता प्राप्त हुयी ही | साथ ही हमने इन क्रियाओं के साथ संपादन कर उन क्रियाओं का भीउल्लेख किया है जिनका विवरण हम **तंत्र कौमुदी** के **यक्षिणी साधना विशेषांक** में दे चुके हैं| ये अनिवार्य भी था क्यूंकि कई साधकों और भाई बहनों के पत्र और सन्देश हमें मिले थे की उन्होंने पहले की अपेक्षा इन सूत्रों का प्रयोग कर कही ज्यादा अनुकूलता प्राप्त की है औरअब उनमे इन साधनाओं में सफलता प्राप्ति की कही ज्यादा आशा जाग्रत हुयी है | उन्ही सूत्रों का प्रयोग थोडा परिवर्तित रूप में अप्सरा साधना हेतु भी किया जाता है क्यूंकि वे सूत्र मुख्यतः सभी प्रकार की सौंदर्य शक्ति साधनाओं में सफलता हेतु उपयोगी हैंअतः उनका प्रयोग कैसे दोनों ही वर्ग की साधनाओं में किया जा सकता हैउपयोगी समझ कर हमने इस लेख में भी उनका वर्णन किया है|

वास्तव में असफलता का सबसे बड़ा कारण होता है,विषय के प्रति साधक का पूर्ण अज्ञान| यदि सूत्रों की प्राप्ति हो भी जाए तो भी साधक उनका प्रयोग नहीं करता है और यदि करता भी है तो मात्र ओपचारिकता के रूप में | और आप स्वयं ही सोचिये की यदि प्रेम की अभिव्यक्ति बेमन से की जाए तो भला कौन प्रभावित होगा ??? कोई नहीं ना |

ठीक इसी प्रकार साधना काल में आपके विचारों का आपके द्वारा संपन्न की जा रही क्रिया के साथ पूरा योगहोता ही है, और परा,पश्यन्ति तथा वैखरी के रूप में ये ब्रह्माण्ड में प्रसारित भी हो जाती हैं, तब जो आपका अभीष्ट लक्ष्य है...ये वहाँ तक पंहुचती तो है किन्तु प्रभाव विहीन रूप में और बिना कोई प्रभाव डाले ये वापिस भी आ जाती है| तथा साधक को इससे कोई लाभ नहीं होता है|

अतः जब आप परिश्रम कर ही रहे हैं तो वो निश्चय ही पूर्ण सफलता प्राप्ति के लिए ही तो कर रहे होंगे ना, तब विषय का पूर्ण ज्ञान पाकर अपनी अभीष्ट साधना को कीजिये, सफलता आपको अवश्य मिलेगी ही | ये बहुत जटिल क्रिया नहीं है और ना ही बहुत दीर्घकालिक ही अतः इन्हें सरलता से साधना काल में ही संपन्न किया जा सकता है|

यक्षिणी/अप्सरा साधना के लिए साधक का चिंतन –

वस्तुतः सिर्फ यक्षिणी के लिए ही नहीं बल्कि प्रत्येक साधना के लिए साधक का चिंतन पूर्ण सात्विक होना ही चाहिए, जब एक सामान्य स्त्री भी आपको देखकर आपके मनोभाव का पता आपकी दृष्टि से लगा लेती है तो फिर अपार शक्ति संपन्न यक्षिणी भला क्यूँ कर आपके मनोभाव को नहीं समझ पाएंगी शायद तुम्हे पता नहीं है की जैसा चिंतन हमारे मन में होता है तदनुरूप ही साधक के चारो और रहने वाला ओरा भी होते जाता है .भले ही सामान्य मानव अपनी सामान्य दृष्टि से उस ओरा को नहीं देख पाता हो पर जिनकी आकाश दृष्टि और दिव्य दृष्टि जाग्रत होती है ,उनसे ये सूक्ष्म परिवर्तन नहीं छुपाया जा सकता है तामसिक भाव से युक्त होने पर साधक का ओरा गहरे धूसर वर्ण का ह जाता है और ये एक ऐसा रंग है जिससे निकलने वाली किरने दृश्य या अदृश्य रूप में मन को उच्चाटित ही करती हैं. और ये किरणे अन्य रंगों की प्रभावी किरणों के मुकाबले कही ज्यादा तीव्र गति से संवेदन शील प्राणियों में असुरक्षा को पनपाती हैं,जिसके कारण उस प्राणी, मानव या वर्ग को साधक से असुरक्षा का अहसास होता हैऐसे में वे कदापि उत्सुक नहीं होंगे साधक के समक्ष आने के लिए.और यक्षिणी तो साक्षात् शक्ति का ही पूर्नंश होती हैं अतः उनसे आपके मन के सुक्ष्मतिसुक्ष्म परिवर्तन भी नहीं छुप पाते अतः साधक को मन के विकारों को दूर करके ही साधना पथ पर बढ़ना चाहिए,साधना का मूल उद्देश्य ही अपने मन को व्यर्थ के भ्रम जाल से मुक्त कर विकार रहित हो अपनी समस्त न्यूनता पर विजय पाकर मानसिक और आत्मिक रूप से स्वतंत्र होना है

और बात सिर्फ यही नहीं है बल्कि आपका चिंतन एक प्रकार से मौन वार्ता ही है अर्थात शब्द जो की मुख से निकलते हैं और ईथर में परिवर्तित होकर सम्पूर्ण ब्रम्हांड के चक्कर लगाते हैं ठीक वैसे ही हमारे शरीर का प्रत्येक रोम छिद्र मुख ही हैऔर हमारे मष्तिष्क या हृदय का सम्पूर्ण मन. चिंतन अन्तः ब्रम्हांड के साथ बाह्य ब्रम्हांड को प्रभावित करता ही है. और ये शक्ति ब्रम्हांडीय ही

होती हैं, साधना के द्वारा हम अपनी कल्पना योग को साकार योग में परिवर्तित करता है, वो जिस रूप में अपने साधना इष्ट का ध्यान करता है उसी ध्यान का संगठित रूप भविष्य में हमारी साधना शक्ति से प्रत्यक्ष होता है

मंत्र मात्र किसी शब्द विशेष का समूह नहीं होता है. बल्कि सदगुरुदेवअपने स्वयं के प्राणों से घर्षित कर शिष्य या साधक को मंत्र प्रदान करते हैं तो वो अभीष्ट सिद्धि प्रदान करने वाला दिव्यास्त्र ही हो जाता है .हाँ ये सही है की साधक के प्रारब्ध के कारण उस पर एक प्रकार का आवरण आ जाता है जिससे साधक को मंत्र का प्रभाव कुछ समय तक दृष्टिगोचर नहीं हो पाता परन्तु जैसे जैसे साधक मंत्र जप में अपनी एकाग्रता और समय बढाता जाता है या उसका जप प्रगाढ़ होते जाता है वैसे वैसे वो आवरण शिथिल होते जाता है और अंत में पूरी तरह से नष्ट हो जाताऔर बाकी रह जाता है तो पूर्ण दैदीप्यमान मन्त्र जो साधक के मनोवांछित को प्रदान करने समर्थ होता है. इसीलिए कहा जाता है की जितना ज्यादा जप होगा उतना ज्यादा आप सफलता के नजदीक होते जाओगे |

पर जैसा मैंने कहा की चिंतन से तो ब्रम्हांड भी प्रभावित होता है तो भलासाधक मन्त्र क्यों नहीं होगा. इसीलिए जिस साधक को सफलता चाहिए होती है उसे अपना चिंतन आत्मविश्वास से लबालब और पूर्ण सात्विक रखना चाहिए याद रखें जरा सा भी नकारात्मक विचार आपके पूरे किये कराये पर पानी फेर देता है ठीक वैसे ही जैसे दूध से भरे हुए पात्र को फाड़नेके लिए मात्र एक बूँद नीबू ही बहुत होता है

आपके मन्त्र जो की ईथर के रूप में ब्रम्हांड के चक्कर लगाते हैं उन्ही के आकर्षण बल से ये शक्ति आबद्ध होकर खिची चली आती है, चिंतन की नकारात्मकता उस आकर्षण बल को भी कमजोर कर देती है.जिससे वो शक्ति प्रकट नहीं हो पाती.अतः चिंतन के प्रभाव से सफलता अछूती नहीं रह सकती.इसलिए सकारात्मक चिंतन और सफलता का दृण संकल्प लेकर जब साधक साधना के लिए तत्पर होता है और मन पर संयम रखते हुए साधना पथ पर आगे बढ़ता है तो उसको सफलता मिलती ही है

यक्षिणी/अप्सरा साधना के मूल यंत्र के साथ दो सामग्रियों की और अनिवार्यता होती ही है-

- **अप्सरा यक्षिणी मंडल**
- **निश्चित यक्षिणी सायुज्य पारद गुटिका(अभाव में पूर्ण सौंदर्य शक्ति रस कंकण)**

साधना में स्थिरता का क्या महत्व है ?

साधना के प्रारंभ में नए साधक उत्तेजित अवस्था में रहते हैं. जिससे उनकी श्वास-प्रश्वास की गति तीव्र होती है .और एक बात भली भांति समझ लेना आवश्यक है की श्वांस की ये तीव्रता मन को भी स्थिर नहीं होने देती है अतः मन की एकाग्रता के बगैरसाधना सही तरीके से न तो संभव हो सकती है और न ही उससे उचित परिणाम मिल सकते हैंक्योंकि विचलित मन साधना में व्यवधान उत्पन्न करता है और साधक साधना के लिए जिन ध्यान मन्त्रों की परिकल्पना कर अपने इष्ट की छवि की अपने मन में स्थापित करता है ,और यदि मन विचलित होगा तो वहाँ पर जिस छवि का निर्माण हम करते हैं वो टूटती और जुड़ती रहती हैजब ये ध्यान बिम्ब ही स्थिर नहीं होगा तो सफलता कैसे मिल सकती है.इसलिए साधना के प्रारंभ में प्राणायाम का विधान होता है और अतः साधना के लिए हम जिस भी आसन जैसे की सिद्धासन ,सुखासन या पद्मासन में बैठते हैं तो मन्त्र जप के पूर्व अपनी सुविधा अनुसार आसन पर सीधा बैठ कर अपने हाथ के अंगूठे को तर्जनी से मिला कर ध्यान मुद्रा बना ली जाये और ऐसा दोनों हाथों से करके अपने घुटने पर रख लो, ऐसा करने से साधना के द्वारा निर्मित ऊर्जा बाह्य गमन नहीं कर पाती और इस दौरान मूलबंध का अभ्यास करना चाहिए. इस क्रिया को करने से धीरे धीरे शरीर स्थिर होने लगता है तथा आसन में साधक अधिक लंबे समय तक

बैठ पाता है.और जब साधक स्थिर मन और आसन से मन्त्र जप की क्रिया करेगा तो उसकी प्रतिक्रिया में ये ब्रम्हांडीय शक्तिया सफलता का वरदान तो देंगी ही ना.

मन्त्र और उसकी कार्य प्रणाली-

मन्त्र का चयन कभी भी ग्रन्थ देखकर नहीं किया जाना चाहिए बल्कि मंत्र की अपने गुरु से विधिवत प्राप्ति कीजानी चाहिए अर्थात गुरु के चरणों में जाकर अपने अनुकूल मन्त्र प्राप्ति की याचना करनी चाहिएतब गुरु रिपु,सार्थक और और स्व प्राणों से घर्षित मंत्र साधक की सफलता के लिए अपने आशीर्वाद के साथ प्रदान करते हैं.अधिकांश साधक इस भय से की न जाने हम जो साधना कर रहे हैं उसे जानकर गुरुदेव हमारे बारे में क्या सोचेंगे अपने गुरु से साधना और मन्त्र के बारे में कोई बात नहीं करतेहैं ,पर आप खुद ही सोचो की उस परब्रम्ह गुरु सत्ता से भला क्या छुपाया जा सकता है ,और आपको सफलता प्रदान कौन करेगा ??? वही गुरु ना. तब सफलतादायक मन्त्र भी तो आप उन्ही से प्राप्त कर पाओगे ,उनके श्रीमुख से मन्त्र की मूल ध्वनि और उसका आरोह अवरोह भी आप को भली भांति समझ में आ जायेगा. यदि किसी मजबूरी वश उनके श्रीचरणों में न जा पाए तब उनके द्वारा निर्देशित या लिखित मन्त्र की साधना उनसे पूर्ण विनम्रभाव से मानसिक आज्ञा लेकर ही करना चाहिएऔर यदि इसी मध्य आपको गुरुधाम जाने का अवसर प्राप्त हो जाये तो उनसे मिलकर अपना जप मन्त्र बता दे ताकि यदि उच्चारण में या मन्त्र में कोई मात्र या वर्ण दोष हो या गलती से वो आपके शत्रुकुल का हो तोगुरु उसका परिहार कर सके.

मन्त्र पुरश्चरण -

गुरु के द्वारा निर्दिष्ट जप संख्या को क्रम विशेष से निर्धारित अवधि में पूर्ण करना ही पुरश्चरण कहलाता हैतथा इस अवधि में साधक को संयमित जीवन यापन करना पड़ता है .इन दिवसों में वो सामाजिक कार्यों से दूरी बनाये रखता है

पुरश्चरण के पांच अंग होते हैं

जप-इसमें मंत्र के देवी या देवता का विधिवत पंचोपचार या षोडशोपचार से पूजन किया जाता हैइन उपचारों के अतिरिक्त देवता पूजन का विशेष क्रम तांत्रिक साधना में किया जाता है

भूमि शोधन-साधना कक्ष के स्थान का पूजन भूमि शोधन कहलाता हैद्वार देवताओं का पूजन कर धरती को अर्घ्य प्रदान करेफिर आसान शोधन मंत्र से भूमिपर पुष्प,अक्षत आदि अर्पित कर आसन बिछाए और उस पर बैठे.

देह शोधन-साधक प्राणायाम संपन्न करता है,फिर भूत शुद्धिमातृकाओं से न्यास अपने इष्ट मन्त्र और ऋष्यादिन्यास,करन्यास आदि संपन्न करने से साधक का शरीर शुद्ध हो जाता है .

द्रव्यदिशोधन-साधक की साधना का अनिवार्य अस्त्र होती है उसकी साधना सामग्री,इसमें साधना में प्रायोजित सभी सामग्री जैसे, यन्त्र, माला,पुष्प,दीप,धुप,वस्त्र आदि सभी सामग्री आ जाती है.इनका पूर्ण रूपेण मन्त्रों केर द्वारा शोधन किया जाता है तत्पश्चात आगे की क्रिया की जनि चाहिए.(द्रव्यशोधन एक अनिवार्य और लंबी साधनात्मक क्रिया है जिसका पूर्ण साधनात्मक विवरण इसी पत्रिका में अन्यत्र दिया जा रहा है)

माला संस्कार- पूर्ण रूपेण संस्कारित होना चाहिए,असंस्कृत माला से जप करने पर सफलता तो मिलती नहीं उलटे मानसिक तनाव की अप देवताओं के द्वारा प्राप्ति होती है वो भी मुफ्त में.यदि जप काल में साधक अखंड दीपक प्रज्वलित कर ले तो कही ज्यादा अनुकूल रहता हैऔर यदि ऐसा न हो सके तो कम से कम जप काल में दीपक न बुझने पाए ऐसी व्यवस्था कर लेनी चाहिए

होम-नित्य प्रति के जप का दशांश हवन नित्य यदि कर दिया जाये तो उचित होता है ,कई व्यक्ति हवन के बदले दशांश जप कर लेते हैं , पर मेरे मतानुसार हवन करना कही ज्यादा अनुकूल और लाभदायक होता हैक्योंकि हवन करने से मंत्र दीप्त होता है और उसमे विशेष चैतन्यता आती है.

तर्पण-हवन करने के बाद बड़े से ताम्बे के बर्तन में या किसी सरोवर में हवन की मात्र का दशांश तर्पण करे. बर्तन को अष्टगंध,कपूर ,दूर्वा आदि मिश्रित जल से पूरित कर दे और जो भी देवता या देवी हो उसका नाम लेकर'तर्पयामि नमः' कह कर जल अर्पित करें.

मार्जन-तर्पण के बाद उसकी दशांश संख्या से सरोवर में खड़े होकर अपने सिर पर दूर्वा द्वारा कुम्भ मुद्रा से देवता का नाम लेकर **"अभिषिन्चामि नमः'** कहकर जल का अभिषेक करें.

उसी दिवस या अंतिम दिवस ब्राम्हण भोज और कुमारी भोज का आयोजन करे.

तत् पश्चात अपनी साधना की पूर्णता प्राप्ति के लिएगुरु के श्री चरणों में प्रार्थना ज्ञापित करे. यदि कोई इस प्रकार का क्रम साधना में अपनाता है तो उसे निश्चय ही अनुकूलता मिलती ही है

किन स्थानों पर साधना करने से यक्षिणी/अप्सरा साधना में शीघ्र सफलता मिलती है ?

सिद्धपीठों,गुरु गृहनदी तट,पर्वत शिखर,एकांत वन ,विल्व या पीपल वृक्ष के नीचे, साधना करने से सफलता शीघ्र ही मिलती है. इस साधना को यदि कामाख्या पीठ के सौभाग्य कुंड या प्रांगण में संपन्न किया जाये या फिर अलकापुरी में या पचमढ़ीमाउन्ट आबू ,हिडिम्बा मंदिर आदि स्थानों पर साधना करने से कही ज्यादा अनुकूलता मिलती है. यदि ऐसा संभव ना हो पाए तो घर में भी ये साधना की जा सकती है | पर साधना काल के मध्य कोई और उस कमरे में ना जाने पाए |

यक्षिणी/अप्सरा साधना में सौभाग्य कुण्ड की महत्ता –
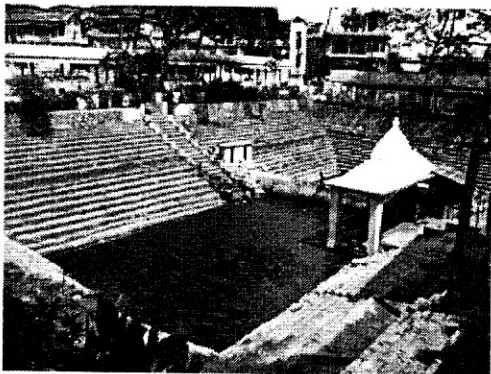
यदि साधक यक्षिणी साधना के प्रारंभ में **"ॐमम सर्व मनोरथान पूर्णार्थे अस्य सौभाग्य वारिः पूर्ण यक्षिणी/अप्सरा सिद्धये नमः"** बोलकर २१ बार जल का तर्पण का माँ कामाख्या से करता है तो उसे सफलता की प्राप्ति होती ही है.ये क्रिया सिर्फ सौभाग्य कुण्ड में ही हो सकती है.इस प्रकार की साधनाओं में उस स्थल की अपनी अलग महत्ता और प्रभाव है.

साधक का आहार -

साधक को यथा संभव अत्यधिक तिक्त या अत्यधिक मधुर भोजन ना करके शुद्ध सात्विक आहार का प्रयोग साधना काल में करना चाहिए यदि हविष्यान्न का प्रयोग किया जाये तो और बेहतर है. इसके अतिरिक्त भूमि शयन,पूर्ण मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य का पालन भी किया जाना चाहिए.

यक्षिणी कितने प्रकार की होती हैं,और इनके कितने प्रकार होते हैं ?

यक्षिणी के कई वर्ग होते हैं,ये अलग अलग पांच तत्वों से सम्बंधित होती हैं और इनमे उसी तत्व विशेष के अनुसार शक्ति होती हैं.जैसे कोई रसायन क्षेत्र का ज्ञान देती है तो कोई निधि दर्शन और प्राप्ति का सामर्थ्य प्रदान करती है,कोई अतीन्द्रिय लोक का ज्ञान देती है तो कोई पत्नी सुख देती है किसी के सहयोग से रससिद्धि की प्राप्ति होती है तो कोई प्रेम के साथ अतुलनिय संपदा प्रदान करती है. इसी प्रकार विभिन्न वनस्पतियों में भी इनका वास होता है,जैसे-

- **बिल्व यक्षिणी**
- **निर्गुण्डी यक्षिणी**
- **कुश यक्षिणी**
- **आम्र यक्षिणी**
- **सहदेवी यक्षिणी**
- **पिप्पल यक्षिणी**
- **तुलसी यक्षिणी**

आदि.....आदि

पर जब भी इन यक्षिणियों की साधना की जाये तो सम्बंधित वनस्पति के आस पास ही की जानी चाहिए , वैसे बसंत ऋतू और श्रावण मास से सम्पूर्ण भाद्रपद और अश्विन मास इनकी साधनाओं के लिए अधिक उपयुक्त होता हैक्योंकि इस काल में सम्पूर्ण प्रकृति में मानो आपकी सहयोगी हो जाती है. परन्तु **ये भी ध्यान रखने योग्य है की जो वनस्पति जिस काल में विकसित होती हैं उसी ऋतू विशेष में उस वनस्पति से सम्बंधित यक्षिणी की साधना करनी चाहिए** उपरोक्त वानस्पतिक यक्षिणियों की शक्ति भी भिन्न भिन्न होती है, जैसे कोई ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री होती है तो कोई अशुभ का निवारण करती है कोई विद्या प्रदान करती है तो कोई वाक् सिद्धि और राज्य सुख प्रदान करती हैपूर्ण सफलता के लिए प्रायः सभी यक्षिणियों/अप्सराओं की कम से कम एक माह तक तो साधना करनी ही चाहिए.

सर्व सामग्री को उत्कीलन करने का क्या विधान है ?

पूजा या साधना में प्रयुक्त सामग्री जैसेयंत्र,माला,पुष्प,फूल,फल आदि लगभग सभी सभी सामग्रियों का नितांत शुद्ध होना आवश्यक है.यदि इनमे से कोई भी सामग्री में जरा सी भी वैचारिक या स्पर्श की वजह से अशुद्धता आ गयी तो फिर इनके प्रयोग से साधना में कोई लाभ नहीं होता.हम साधना के निमित्त बाजार से पुष्प,फल इत्यादि लेते हैं,अब जिनसे आपने लिया है वो किस शारीरिक या मानसिक स्थिति में थे किसे पता,उन्होंने शंका निवारण के पश्चात हाथों को धोया था या नहीं और कैसी मनः स्थिति में उन्होंने आपको सामग्री दी है,इसी प्रकार पूजा स्थल में यन्त्र माला इत्यादि रखे हैं और उसे घर के बच्चो या अन्य सदस्य ने उठा लिया या स्पर्श कर लिया तब भी उनकी प्राणशक्ति और शारीरिक मानसिक शुचिता से वे साधना सामग्री प्रभावित होंगी ही. रसोई से नैवेद्य बनकर साधना कक्ष में आते आते न जाने किसकी दृष्टि पद जाये या जब भोजन तैयार हो रहा था उस समय बनाने वाले का चिंतन कैसा था.यन्त्र के ऊपर कीट,पतंगे,चूहे,छिपकली आदि के चलने से भी यन्त्र माला इत्यादि दोषपूर्ण हो जाते हैंअतः ऐसी स्थिति में उसका परिहार करने के लिए या उत्कीलन करने के लिए एक विशेष मंत्र का प्रयोग किया जाता है ,जिसे पहले सिद्ध करना अनिवार्य है.

निम्न मंत्र को पहले 51 माला मंत्रजप करके सिद्ध कर लेना चाहिए,बाद में जब भी आप साधना हेतु सामग्रियों का प्रयोग करें तो इस मन्त्र को 108 बार जप कर उससे जल को अभिमंत्रित कर सभी सामग्रियों पर छिड़क दे

मन्त्र- **ॐ ह्रीं त्रिपुटि त्रिपुटि कठ कठ आभिचारिकदोषं कीटपतंगादिस्पृष्टदोषं क्रियादिदूषितं हन हन नाशय नाशय शोषय शोषय हुं फट् स्वाहा.**

देह उत्थापन प्रायश्चित प्रयोग–

किसी भी प्रकार की तंत्र साधना में ये एक अत्याधिक महत्वपूर्ण क्रिया होती हैजिसके द्वारा समस्त,पाप,शाप और दोष का नाश किया जाता है और देह अणुओं को संचित मलों से मुक्त कर उत्थापित और जाग्रत किया जाता|हैम अपने जीवन में जिन त्रिकर्मों के परिणामस्वरुप बाधाओं का अनुभव करते हैंसाधना और कार्यों की सफलता में असफलता का सामना करते हैं,उन सभी की निवृत्ति कर ये **प्रायश्चित प्रयोग** आपको समग्रता और साधना युक्त देह निर्माण की क्षमता प्रदान करता है|

इस प्रयोग हेतु साधना सामग्रियों के साथ बाजोट पर सामने की और एक लोह निर्मित पात्र स्थापित किया जाता है| ये क्रिया साधना के प्रारंभ में नित्य संपन्न की जाती है| काले तिलों और सफ़ेद तिलों को मिलाकर एक पात्र में रख लेना चाहिए| आचमन और शुद्धिकरण के पश्चात सिद्धासन या वज्रासन में बैठकर एक चुटकी तिलों को दाहिने हाथ से उठाकर स्वयं के हृदय से स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र का1 बार उच्चारण करें और उन तिलों को लोह पात्र में डाल दें | इस प्रकार ये क्रिया 108 बार करें| ये क्रिया साधना काल के प्रथम दिवस से अंतिम दिवस तक नित्य साधना के पूर्वकरना चाहिए |

मंत्र–

क्लीं दोष निवृत्त्ये फट् ||

KLEEM DOSH NIVRITTYE PHAT ||

शिवशक्ति स्थापन–

सौंदर्य शक्ति साधना में सफलता के लिए **'लाकिनीश मृत्युंजय'** की उपासना व अभिषेक किया जाता है| यदि इसे पूर्णिमा से 11 दिनों के मध्य नित्य निम्न क्रम को संपन्न कर महामृत्युंजय मंत्र का कुल5000 जप कर लिया जाए तो पूर्ण सफलता प्राप्त होती ही है अन्यथा ये क्रिया साधना के पहले और अंतिम दिन प्रातःकाल संपन्न किया जाना ही चाहिए इन**'लाकिनीश मृत्युंजय'**का निवास मणिपूर चक्र में होता है और ये स्थान अग्नि और अमृत दोनों का ही होता है अतः इनका अभिषेक करने से अग्नि की आकर्षण शक्ति आप में तेज की वृद्धि कर देती है और निसृत अमृत आपको जरा रोगों से मुक्त कर कायाकल्प करता हैऔर यही तेज व पौरुष बल यक्षिणी व अप्सरा आदि अन्य सौंदर्य शक्तियों को बाह्य ब्रह्माण्ड से अन्तः ब्रह्माण्ड की और आकर्षित करता है,वस्तुतः ये एक सूत्र का कार्य करता है आपके और उस शक्ति के मध्य| इसके लिए **पारद शिवलिंग** या **रसेंद्र सौंदर्य कंकण**(जो शिव-शक्ति सायुज्य मन्त्रों और सपर्य विधान से सिद्ध हो) को अभिषेक पात्र में स्थापित कर उसके ऊपर निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पूर्ण विनम्र भाव से अक्षत अर्पित करे

ॐपरम कल्याणाय नमः

ॐविश्वभावनाय नमः

ॐ पार्वतीनाथाय नमः

ॐ उमाकान्ताय नमः

ॐ विश्वात्मनाय नमः

ॐ अविचिन्ताय नमः

ॐ गुणाय नमः

ॐ निर्गुणाय नमः

ॐ धर्माय नमः

ॐ ज्ञानमक्षाय नमः

ॐ सर्वयोगिनाय नमः

ॐ कालरुपाय नमः

ॐ त्रैलोक्य नमः

ॐ रक्षणाय नमः

ॐ गोलोकघातकाय नमः

ॐ चन्डेशाय नमः

ॐ सद्योजाताय नमः

ॐ देवाय नमः

ॐ शूलधारिणे नमः

ॐ कालान्ताय नमः

ॐ कान्ताय नमः

ॐ चैतन्याय नमः

ॐ कुलात्मकाय नमः

ॐ कौलाय नमः

ॐ चन्द्रशेखराय नमः

ॐ उमानाथाय नमः

ॐ योगीन्द्राय नमः

ॐ शर्वाय नमः

ॐ सर्वपूज्याय नमः

ॐ ध्यानस्थाय नमः

ॐ गुणात्मनाय नमः

ॐ पार्वतीप्राणनाथाय नमः

ॐ परमात्मनाय नमः

उपरोक्त मन्त्रों का उच्चारण करते हुए रसेश्वर या सौंदर्य कंकण पर अक्षत अर्पित करे,अर्थात एक मंत्र बोल कर एक अक्षत अर्पित करें इसके बाद मृत्युंजय मंत्र का जप करते हुए केसर मिश्रित कच्चे दूध और जल के मिश्रण से अभिषेक पात्र में अभिषेक के

मृत्युंजय मंत्र-

त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम

उर्वारुकमिव बंधनान मृत्युर्मुक्षीय मामृतात्|

इसके अतिरिक्त साधना की पूर्व रात्रि को इस **सौंदर्य कंकण** के सामने साधना मूल मंत्र की5 माला कर लेना चाहिए जिससे वो कंकण उस शक्ति विशेष से सम्बंधित हो जायेगीइस गुटिका पर आप अलग अलग कई यक्षिणियों और अप्सराओं की साधना कर सकते हैं|

काम शक्ति समावेश सायुज्य माला संस्कार–

सौंदर्य शक्ति से भरपूर सभी तीक्ष्ण और सौम्य साधनाओं के लिए एक विशिष्ट माला का निर्माण साधक स्वयं ही करता हैजिसे **पूर्ण कामाक्षी शक्ति माल्य**के नाम से जाना जाता है| विशिष्ट मन्त्रों और क्रियाओं के द्वारा इस माला का निर्माण किया जाता है| ये 108 दानों की माला होती है,जिसका प्रत्येक मनका विशिष्ट मंत्र से अभिमंत्रित रहता है| उसमे काम और सौंदर्य शक्ति के समग्र 108 रूपों की स्थापना की जाती है,तत्पश्चात सुमेरु में त्रयी शक्ति का आवाहन किया जाता है| इसके पश्चात ये माला अपने आपमें

विलक्षण क्षमता से युक्त हो जाती है,कैसी भी सौंदर्य शक्तियों की साधना,वशीकरण,आकर्षण साधना इससे फलीभूत होती ही है |जो भी साधक या साधिका इसे मात्र नित्य थोड़े समय के लिए भी धारण करते हैं,उनके व्यक्तित्व में इस माला के प्रभाव से तीव्र आकर्षण शक्ति का समावेश हो जाता है| जो भी उसके संपर्क में आता है वो बाध्य ही हो जाता है,उसके कार्यों में सहयोग करने के लिए | व्यक्तित्व की समस्त नकारात्मक शक्तियों का इस माला के प्रभाव से परिवर्तन सकारात्मक ऊर्जा में हो जाता है | सौंदर्य की अभिवृद्धि तो होती ही है,साथ ही आयु का प्रभाव भी क्षीण होने लगता है |

इस हेतु लाल हकीक,मूंगा,सफ़ेद हकीक या स्फटिक की प्राणप्रतिष्ठित माला का प्रयोग किया जाना उचित है | माला में 108 दाने होना चाहिए(सुमेरु को छोड़कर)| बेहतर होगा यदि माला को मजबूती से गाँठ वाली बनाकर स्वयं ही शास्त्रोक्त या तांत्रोक्त पद्धति से प्राणप्रतिष्ठित कर फिर प्रयोग किया जाये,तब इसके शीघ्र टूटने की या खंडित होने की संभावना क्षीण हो जाती है|

किसी भी शुक्रवार की रात्रि को लाल वस्त्र धारण कर,समस्त साधना पूर्व कृत्यों से निवृत होकर,बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा ले और उस के ऊपर एक ताम्र पात्र स्थापित कर दें | उस ताम्रपात्र में इस माला को गंगाजल या स्वच्छ जल से धोकर स्थापित कर दें | सामने त्रिगंध के लेप से भरा हुआ पात्र स्थापित कर लें और सदगुरुदेव और माँ आद्याशक्ति कामाख्या से इस माला का संस्कार कर दिव्यत्व प्रदान करने की प्रार्थना करें| दैनिक पूजन संपन्नकरने के बाद निम्न लिखित मन्त्रों में से पहले मंत्र का उच्चारण करें और 1 बिंदी माला के पहले मनके पर लगाये,इस प्रकार एक मंत्र का 7 बार उच्चारण कर 7 बिंदी लगानी है | फिर यही क्रम दूसरे मंत्र,तीसरे मंत्र,चौथे मंत्र से करते जाना है,अर्थात इसी क्रम में पूर्ण 108 शक्तियों का स्थापन करना है जब 108 शक्तियों का स्थापन हो जाये तब इसी माला से 9 माला "**ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं ह्रीं ऐं** की संपन्न करें और गुरु प्राणश्चेतना मंत्र का11 बार उच्चारण कर पुष्प से स्पर्श करते जाएँ और उस माल्य को विशिष्ट चेतना प्रदान करें |ये मंत्र और इससे जुडी क्रिया अपने आपमें अत्यंत गोपनीय रही हैं इस क्रिया को करते समय मात्र एक बात का ध्यान रखना है की जब आप शक्ति का स्थापन कर रहे हों तब आपको मंत्र उच्चारण करते समय बांया हाथ अपने ह्रदय पर रखकर **ह्रदय मुद्रा** का प्रदर्शन करते जाना है,और हर शक्ति स्थापन मन्त्र का सातवी बार उच्चारण कर बिंदी लगाने के बाद माला के सामने **योनिमुद्रा** का प्रदर्शन करना अनिवार्य है |

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं सूक्ष्मा स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं जया स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रींमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं माया स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं प्रभा स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं विजया स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं सुप्रभा स्त्रींब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं नंदिनी स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं विशुद्धि स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं कान्ति स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं उन्नति स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं कीर्ति स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं विभूति स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं हृष्टि स्त्रीं ब्लूँ ऐंक्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं व्युष्टि स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं संतति स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं उन्नति स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रींऋद्धि स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं उत्कृष्टि स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं अजिता स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं अपराजिता स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रींमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं नित्या स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं सरस्वती स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं श्री स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं स्मृतित्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं लक्ष्मी स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं उषा स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं धृति स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं बुद्धि स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं श्रृद्धा स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं मति स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं मेधा स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्ल्ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं विद्या स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं प्रज्ञा स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं इच्छा स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रींक्रिया स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं माया स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं दीप्ता स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं प्रीति स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं नीति स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं सृष्टि स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं स्थिति स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं संहति स्त्रीं ब्लूँएं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं चेतना स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं सत्या स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं शांति स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रींरति स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं भद्रा स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं रौद्री स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं ज्येष्ठा स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं विद्युता स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं परापरा स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं अनंग स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं कन्दर्प स्त्रींब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं रतिप्रिय स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं पंचशर स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं सुरतातुर स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं मनोभव स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं कुसुमायुध स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं चित्तर्जन स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं मन्मथ स्त्रीं ब्लूँऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं सम्मोहन स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं यौवनेश स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं मदन स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँस्त्रीं हृतक्षोभक स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं आकर्षक स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं केलिवल्लभ स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं चित्तविद्रावण स्त्रीं ब्लूँऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं दर्पक स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं भ्रामक स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं त्रिलोकीवशकारी स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐंब्लूँ स्त्रीं मकरध्वज स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं उन्मादक स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं अंधकारी स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं चंडवेग स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं मार स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं उच्चाटन स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं व्यामोहदायी स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रींपुष्पधन्व स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं स्मर स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं सन्तापन स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं मनःप्रमाथी स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं भगद स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं मीनकेतु स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं उपस्थग स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं योनिवासी स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं मनसिज स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं पुष्पचाप स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं यौवतेश स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं विश्वोपतापी स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं वसंतमित्र स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं मलयकेतु स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं चेतः प्रमोदन स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं क्रथन स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं चंडतेजा स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नमः

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं धर्माधर्मप्रवर्तक स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रींम:

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं कोमलायुध स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नम:

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं प्रमर्दन स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नम:

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं त्रिलोकीसुखद स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नम:

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँस्त्रीं पिकदुंदुभी स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नम:

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं अलिमाली स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नम:

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं जगज्जेता स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नम:

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं काम स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रींम:

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं काम यज्ञ सिद्धि करी स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नम:

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं काम मैथुन यामिनी स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नम:

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं काम यज्ञोपविता स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नम:

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं काम भितीहरा स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नम:

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं ई बीज रूपा स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नम:

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूँ स्त्रीं क्लीं रूपाय स्त्रीं ब्लूँ ऐं क्लीं ह्रीं नम:

सुमेरु शक्ति स्थापन क्रिया –

माल्य संस्कार हो जाने के बाद उस माला के सुमेरु के ऊपर रक्त चन्दन की बिंदी लगते हुए निम्न मंत्र का108 बार उच्चारण करना है,अर्थात एक बार मंत्र का उच्चारण करना है और एक बिंदी लगाना है| तत्पश्चात माला का पूर्ण पंचोपचार पूजन करना है और उसी माला से निम्न मंत्रकी 1 माला मंत्र जप करना है| और माला को वापिस पात्र में रख कर योनिमुद्रा का प्रदर्शन करना है|

सुमेरु आकर्षण विद्या सायुज्यीकरण–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौ कामेश्वर्यै सुभगरुपिण्यै कटाक्षप्रभया सर्व कम्पितं कुर्वन्त्यै नम: स्वाहा ||

इस प्रकार आपकी साधना की सबसे महत्वपूर्ण सामग्री**पूर्ण कामाक्षी शक्ति माल्य** का निर्माण पूरा होता है,और आप इसके बाद अपने जीवन में स्वयं ही अनुभव करेंगे की ये कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है आपको आकर्षण क्षमता से युक्त कनिरंतर सौंदर्य साहचर्य प्रदान करने में |

आसन संस्कार-

साधना काल में आसन का प्रयोग अति महत्पूर्ण होता है| अतः भूमि को भली भाँती शुद्ध कर भूमि पर कुमकुम के द्वार**मैथुन चक्र** का निर्माण करने के बाद उस पर आसन बिछा दें | **मैथुन चक्र** के मध्य में **बिंदु** का अंकन नहीं करना है| आसन के ऊपर "**ॐ श्रं श्रंगाटिकायै श्रं ॐ**"का २१ बार उच्चारण करते हुए जल के छींटे दें | उसके बाद आसन पर बैठकर दैनिक साधना विधि के अनुसार आसन पूजन कर लें|

वीर स्थापन -

१. **अप्सरा साधना हेतु –इन्द्र स्थापन**
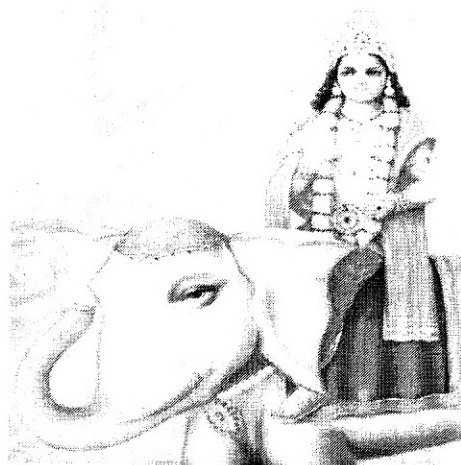
अप्सरा साधनाओं में सफलता प्राप्ति केक्रम में सर्वाधिक अनिवार्य क्रिया होती है **इन्द्र स्थापन** की वे समस्त 108 अप्सराओं के अधिपति होते हैं,वैसे तो मात्र यदि भूमि,भवन का अधिपति बनना हो या राजनीतिक सफलता की प्राप्ति करना हो तब मात्र इन्द्र साधना से ही ये सब पाया जा सकता है | और उन समस्त भोगों का निर्विघ्न भोग किया जा सकता है,जिनके अधिपति देवराज इन्द्र हैं....किन्तु वो अलग ही साधना है| इसके लिए तालाब या नदी की अथवा अभाव में किसी कुएं के पास की साफ़ मिटटी चाहिए होगी | अब उसमें गोरोचन, हल्दी और चन्दन का बुरादा मिलाकर "**ॐ ह्रीं इन्द्रायै ह्रीं ॐ**" का उच्चारण करते हुए एक छोटी कंचे के आकार की गोली का निर्माण कीजिये,याद रखिये मिटटी में रेत आदि के कण नहीं होना चाहिए | इसके बाद इस गोली को सफ़ेद तिल की ढेरी के ऊपर स्थापित कर दें और गुटिका के सामने "**ब्रह्मर्षि विश्वामित्र सिद्धि मंत्र**" की 3 माला जप करें | जप के पूर्व पूर्ण विनम्र भाव से पूर्ण श्रद्धा के साथ**ब्रह्मर्षि विश्वामित्र** का ध्यान और आवाहन आवाहन मुद्रा से करें और गुटिका पर पुष्प अर्पित करें| तब अनुमति और सफलता की प्राथना के साथ जप प्रारंभ करें,1माला जप करें और त्रिगंध की बिंदी गोली पर लगाएं,फिर दूसरीमाला और दूसरी बिंदी लगाएंइस प्रकार तीन माला जप करें

ब्रह्मर्षि विश्वामित्र सिद्धि मन्त्र –

ॐ ऐं ऐं क्लीं क्लीं हुं हुं नमः

OM AIM AIM KLEEM KLEEM HUM HUM NAMAH ||

इसके पश्चात दूर्वा की नोक हटाकर उस से उस गुटिका को स्पर्श कराते जाएँ निम्न मंत्र का एक बार उच्चारण करें और एक बार दूर्वा का स्पर्श करवाएइस प्रकार 108 बार इस क्रिया को करना है | ये क्रम 3 दिनों तक प्रातःकाल करना है,इसमें किसी भी रविवार या गुरूवार का चयन किया जा सकता है | अतः बेहतर यही होता है की पहले ही इस गुटिका का निर्माण कर लिया जाये | फिर जब मूल साधना करनी हो तब इसे यन्त्र के बायीं अर्थात अपने दायीं ओर सफ़ेद तिल की ढेरी पर स्थापित करें

ॐ ह्रीं शतअष्टोत्तर सुख प्राप्त्यर्थं इन्द्रायै ह्रीं ॐ नमः ||

OM HREEM SHATASHTOTTAR SUKH PRAPTYARTHAM INDRAAYAI HREEM OM NAMAH ||

२. **यक्षिणी साधना हेतु - कुबेर स्थापन**

साधना काल में नित्य प्रति कुबेर मंत्र की भी तीन माला **कुबेर यन्त्र** या **इन्द्र गुटिका** के सामने संपन्न करनी चाहिए| ये एक अनिवार्य कर्म है,अधिकांश साधक साधना को सिर्फ खानापूर्ति मानते हैंजितना जप बताया है,उतना कर लिया और गिनती गिनते गए और कह दिया की भाई मैंने तो मंत्र जप किया था,न तो शुचिता–अशुचिता का ध्यान रखा और न ही अपने मनोभावो को और अपने दृष्टिकोण को परखा,बस मुंह उठाकर कह दिया की भाई साधना-वाधना सब बकवास है यक्षिणियों के अधिपति कुबेर होते हैं और यदि आप अधिपति को ही प्रसन्न नहीं कर पाएंगे तो बगैर उनकी अनुमति के क्यूँकर कोई यक्षिणी आपका अभीष्ट साधने आएगी| इसी प्रकार भगवान मृत्युंजय की उपासना और मन्त्र से ही कुबेर सिद्धि का द्वार खुलता है और वे प्रसन्न होकर आपका मनोरथ पूर्ण करते हैं यक्षिणी साधना के काल में पूर्ण साधना अवधि के मध्य कुबेर मंत्र की 3 माला अनिवार्य होती है हाँ इसे प्रातः काल संपन्न किया जा सकता है और रात्रि में उस गुटिका या यन्त्र के सामने मात्र11 बार ही मंत्र का उच्चारण पर्याप्त है |

ॐयक्षराज नमस्तु शंकरप्रिय बांधव|

एकां मे वशगां नित्यं यक्षिणीम् कुरु ते नमः||

ठीक इसी प्रकार से पूर्ण रूप से कुबेर साधना में सफलता प्राप्त करने के लिए**कुबेर की शक्ति कुबेर यक्षिणी मंत्र** की भी एक माला नित्य करनी चाहिए ,वैसे कुबेर यक्षिणी को प्रत्यक्ष करने और उनका अनुग्रह प्राप्त करने का अपना एक विशेष विधान होता है परन्तु अन्य यक्षिणियों की साधना और कुबेर साधना में सफलता प्राप्ति के निमित्त भी इस साधना के मंत्र की **१ माला** कुबेर मन्त्र के

साथ होनी ही चाहिए.इसके प्रभाव स्वरुप जहाँ आर्थिक अनुकूलता प्राप्त होती है वही यक्षिणी के पूर्ण साहचर्य की प्राप्ति हेतु कुबेर देव की कृपा भी मिलती है-

ॐ कुबेर यक्षिण्यै धन धान्य स्वामिन्यै धन धान्य समृद्धि में देहि दापय स्वाहा

इसके बाद मूल यक्षिणी साधना प्रारंभ करना चाहिए,और हो सके तो **नित्य कुमारी पूजन** करना चाहिए.

भैरव स्थापन –

भैरव स्थापन के बिना तंत्र की क्रियाओं में सफलता प्राप्त हो ही नहीं सकती हैअतः समस्त उच्चकोटि के साधक अपनी साधना के प्रारंभ में ही **भैरव स्थापन** और **भैरव उत्थापन** जैसी क्रिया को संपन्न कर लेते हैं,जिससे उन्हें एक पूर्ण सुरक्षा चक्र की प्राप्ति होती है और तीक्ष्ण शक्तियों के मध्य वो सुरक्षित रहता हुआ पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेता है| यदि **अप्सरा/यक्षिणी साधना** के अतिरिक्त अन्य कोई तंत्र साधना कर रहे हों तो **तंत्र ब्रह्माण्ड मंडल** पर भी यही क्रिया करने के बाद मूल साधना की जनि चाहिए |

अप्सरा – यक्षिणी मंडल के ऊपर कुमकुम की बिंदी लगाते हुए निम्न मन्त्र का उच्चारण संस्थापिनी मुद्रा का प्रदर्शन करते हुए करें -

ॐ करालाय नमः – पूर्वे

फिर मंडल के दाहिने हिस्से में कुमकुम का तिलक लगाते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण संस्थापिनी मुद्रा का प्रदर्शन करतेहुए करें-

ॐ विकरालाय नमः – दक्षिणे

फिर मंडल के निचले हिस्से में कुमकुम का तिलक लगाते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण संस्थापिनी मुद्रा का प्रदर्शन करतेहुए करें-

ॐ अतिकरालाय नमः - पश्चिमे

फिर मंडल के बायें हिस्से में कुमकुम का तिलक लगाते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण संस्थापिनी मुद्रा का प्रदर्शन करते हुए करें-

ॐ महाकरालाय नमः - उत्तरे

तत्पश्चात दाहिने हाथ से लिंग मुद्रा का प्रदर्शन करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें और सिंदूर मिश्रित अक्षत का एक दा अर्पित करें, फिर दुबारा लिंग मुद्रा का प्रदर्शन करते हुए दूसरे मंत्र का उच्चारण करें और सिंदूर मिश्रित अक्षत का एक दाना अर्पित करें इस प्रकार आखिर मंत्र तक इसी क्रम को दोहराते जाएँ|

ॐ क्रोध भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ शमशान भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ कापाली भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ काल भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ कालान्तक भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ रुरु भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ महाघोर भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ घोरतर भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ संहार भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ चंड भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ हुंकार भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ अनादि भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ आनंद भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ भूताधिप भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ कृतान्त भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ असितांग नमः स्थापयामि

ॐ कालाग्नि भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ उग्रायुध भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ वज्रांग भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ कराल भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ विकराल भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ महाकाल भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ कल्पांत भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ विश्वान्तक भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ प्रचण्ड भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ भगमाली भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ उग्र भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ भूतनाथ भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ भद्र भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ संपतप्रद भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ मृत्यु भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ यम भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ अन्तक भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ उल्कामुख भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ एकपाद भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ प्रेत भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ मुंडमाली भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ बटुक भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ क्षेत्रपाल भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ दिगंबर भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ वज्रमुष्टि भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ घोरनाद भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ चंडोग्र भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ सन्तापन भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ क्षोभण भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ ज्वालासंवर्त्त भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ वीरभद्र भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ त्रिकालाग्नी भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ शोषण भैरवाय नमः स्थापयामि

ॐ त्रिपुरान्तक भैरवाय नमः स्थापयामि

भैरव उत्थापन –

भैरव स्थापन के बाद **त्रिशूल,खट्वांग और कपाली मुद्रा**का 2-2 मिनट प्रदर्शन करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें और **सम्मुखिकरण मुद्रा**का प्रदर्शन करते हुए 5 मिनट तक मंत्र का जप करें,इस क्रिया से स्थापित भैरव शक्ति पूर्ण रूपेण जाग्रत और चैतन्य हो जाती हैं,तथा आपकी साधना में स्वयं के वरदान से पूर्ण अनुकूलता देती हैं

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं महाकाल कराल वदन ग्रहण ग्रहण भिन्धि भिन्धि त्रिशूलेन हन हन ठं ठः||

OM HRAAM HREEM HROOM MAHAKAAL KARAAL VADAN GRAHAN GRAHAN BHINDHI BHINDHI TRISHOOLEN HAN HAN THAM THAH ||

मूलाधार इष्ट स्थापन –

साधक आसन पर बैठने के बाद संबंधित शक्ति को तीन प्रमुख नाड़ियों के माध्यम से कुण्डलिनी में स्थापित करना हैइसके लिए भगवान गणपति का ध्यान करते हुए **"ॐ लं अप्सरा/यक्षिणी देव्यै लं ॐ"** मंत्र के द्वारा 24 बार प्राणायाम क्रिया की जाती है| ताकि बाह्य ब्रह्माण्ड के माध्यम से उस शक्ति का साधक की आंतरिक कुंडली से योग हो और वो उन तीनों नाड़ियों में स्थापित होकर शरीर को दिव्यता प्रदान कर सकें

मणिपुर इष्ट स्थापन –

मूलाधार स्थापन के पश्चात **मणिपुर इष्ट स्थापन** की क्रिया की जाती है| जिससे इष्ट का प्रसारण प्राणाग्नि और प्राणवायु के माध्यम से सम्पूर्ण शरीरस्थ अणुओं से हो सकेकार्मिक मलों का दहन कर मंत्र प्राण उर्जा से स्वयं भी दीप्त होकर साधक को भी दीप्त कर सके| इस क्रिया के प्रभाव से साधक का ध्यान और एकाग्रता बढ़ जाती है और उसे जप करने में आनंद की अनुभूति होने लगती है,थकान और समय का उस पर साधना काल में कोई प्रभाव नहीं पड़ता है |

इस हेतु नाभि मंत्र संस्कार मंत्र क24 बार उच्चारण किया जाता है,दाहिने हाथ से मंडल को स्पर्श करते हुए बाएं हाथ से सौंदर्य कंकाल को स्वयं की नाभि में स्पर्श कराया जाता है और मंत्र का उच्चारण किया जाता है,फलस्वरूप साधक के प्राणों,मन्त्र उर्जा का योग मंडल और कंकण से हो जाता हैतथा साधक की साधना में ये सामग्रियां सहयोगी साबित होकर साधना काल में साधक की कुण्डलिनी को मणिपुर चक्र से पतित नहीं होने देती हैंजिसके कारण ब्रह्मचर्य भंग और स्वप्नदोष आदि होने की स्थिति ना के बराबर हो जाती है और साधक की साधना निष्कंटक संपन्न हो जाती है|

नाभि संस्कारमन्त्र-

ॐ रं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं रं ॐ

OM RAM DAM DHAM NAM TAM THAM DHAM NAM PAM PHAM RAM OM ||

अशुद्ध उच्चारण संस्कार

साधक यक्षिणी मंत्र के पहले **'स्त्रीं'** का जप अपने विशुद्ध चक्र पर ध्यान लगाकर और उसका स्पर्श करके 10 बार कर ले तो उचित है.तथामंत्र जप के पूर्व **'ॐ'** का १० बार उच्चारण भी कर लेना चाहिए

जिव्हा संस्कार –

अप्सरा साधना हेतु किसी पात्र में मधु(शहद) रख कर उस पात्र के सामने 5 माला **"ह्रीं क्लीं ह्रीं"** मंत्र की संपन्न कर लें,ये क्रिया किसी भी शुक्ल पक्ष के शुक्रवारक की मध्य रात्रि में संपन्न की जा सकती हैफिर किसी भी रविवार को सूर्योदय के पूर्व पुनः एक माला इसी मंत्र की संपन्न कर चांदी की शलाका से **"ह्रीं"** बीज अपनी जिव्हा पर अंकित कर लें|

यक्षिणी साधना हेतु किसी पात्र में केसर और रक्तचंदन का मिश्रण बनाकर उस पात्र के सामने **"क्लीं ह्रीं क्लीं"** मंत्र की 7 माला संपन्न कर लें| ये क्रिया किसी भी रविवार को मध्य रात्रि काल में संपन्न की जा सकती है,इसके बाद अगली रात्रि को द्वितीय प्रहर में अनार या चमेली की कलम से स्वयं की जीभ पर **"क्लीं"** बीज का अंकन कर लें|

अप्सरा/यक्षिणी की साधना काल में पूर्ण चित्त पर नियंत्रण स्थापित कर वाक शक्ति के आकर्षण में बाँध कर उन्हें प्रत्यक्ष कर देने वाली अनुभूत क्रिया है|

उत्थापन न्यास –

किसी भी साधना में उत्थापन न्यास एक महत्वपूर्ण क्रिया होती है,जिसके द्वारा शक्ति को शरीर के विभिन्न अंगों में समाहित किया जाता है,इस क्रिया में मात्रिका और उसकी कलाओं के साथ शक्ति का योग कर उस शक्ति का स्वयं के साथ एकात्मता स्थापित किया जाता है,तब साधक,साध्य और सिद्धि में कोई भेद नहीं रह जाता है| ध्यान के बाद न्यास की क्रिया जहाँ संपन्न की जाती है ,उसी समय **अप्सरा-यक्षिणी मंडल** को सामने स्थापित करते हुए ये क्रिया की जाती है इसमें ये क्रम दो बार करना होता है-

१.पूर्ण मन्त्र के साथ **स्थापयामि पूजयामि** का प्रयोग कर मंडल पर कुमकुम मिश्रित अक्षत अर्पित करना है|

२. पूर्ण मंत्र के साथ मात्र **स्थापयामि** शब्द का प्रयोग करना है.पूजयामि शब्द का नहीं और जिस मंत्र के सामने शरीर के जिस अंग का नाम लिखा है उसे स्पर्श करना है|

पहली क्रिया **अंगकला स्थापन व पूजन क्रिया** कहलाती है,जिसके माध्यम से शक्ति के सभी अंगों का यन्त्र में स्थापन और पूजन होता है,तथा दूसरी क्रिया **उत्थापन न्यास क्रिया** कहलाती है जिस के माध्यम से उन अंगों का स्वयं के शरीर में पूजन होता है| दूसरी क्रिया के माध्यम से साधक स्वयं और मंत्र देवता के मध्य का भेद समाप्त कर स्वयंही उस शक्ति के रूप में परिवर्तन कर लेता है

अंगकलापूजन मंत्र–

अं निवृत्ति कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि – शिरसि

आं प्रतिष्ठा कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि – मुखे

इं विद्या कला रूपेण अमुकंयक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –दक्षिण नेत्रे

ईं शांति कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि – वाम नेत्रे

उं इन्धिका कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि – दक्षिण कर्ण

ऊं दीपिका कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –वाम कर्ण

ऋम् रेचिका कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि – दक्षनासे

ॠम् मोचिका कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि – वाम नासे

लृं परा कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –दक्षिण कपोले

ॡम् सूक्ष्मा कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –वाम कपोले

एं सूक्ष्मामृता कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –अधरे

ऐं ज्ञानामृता कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –ओष्ठे

औं आप्यायिनी कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –अधोदंते

औं व्यापिनी कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –उर्ध्व दंते

अं व्योमरूपा कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –जिव्हे

अः अनंता कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –ग्रीवाये

कं सृष्टि कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –दक्षिण बाहुमूले

खं ऋद्धि कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –दक्षिण कूर्परे

गं स्मृति कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –दक्षिण मणिबंधे

घं मेधा कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –दक्षिण अन्गुलमूले

ङ कांति कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –दक्षिण अन्गुल्यग्र

चं लक्ष्मी कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –वाम बाहुमूले

छं धृति कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –वाम कूर्परे (कोहनी)

जं स्थिरा कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –वाम मणिबंधे

झं स्थिति कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –वाम अन्गुलमूले

ञ* सिद्धि कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –वाम अन्गुल्यग्र

टं जरा कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –दक्षिण उरुमूल

ठं पालिनी कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि – दक्षिण जानु(जंघा)

डं शांति कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –दक्षिण गुल्फ (घुटना)

ढं ऐश्वरी कला रूपेण अमुकंयक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि पूजयामि-दक्षिणपादंगुलिमूल

णं रति कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –दक्षिणपादंगुलिग्र

तं कामिका कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि पूजयामि-वाम उरु

थं वरदा कला रूपेण अमुकंयक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि पूजयामि-वाम जानु

दं आह्लादिनी कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि पूजयामि-वाम गुल्फ

धं प्रीति कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –वाम पादंगुलिमूल

नं दीर्घा कला रूपेण अमुकंयक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि – वाम पादंगुलिग्र

पं तीष्णा कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –दक्षिण कुक्षि

फं रौद्री कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –वाम कुक्षि

बं भया कला रूपेण अमुकंयक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –पृष्ठ

भं निद्रा कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –नाभि

मं तन्द्रा कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –उदर

यं क्षुत्कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –हृदय

रं क्रोधिनी कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –दक्षिण स्कंध(कंधा)

लं क्रिया कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –वाम स्कंध

वं उत्कारी कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –तालु

शं मृत्यु कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –हृदय तु दक्षिण हस्ते

षं पीता कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –हृदय तु वाम हस्ते

सं श्वेता कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –हृदय तु दक्षिण पादे

हं अरुणा कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि/पूजयामि –हृदय तु वाम पादे

क्षं अनंता कला रूपेण अमुकं यक्षिणी/अप्सरा देव्यै नमः स्थापयामि पूजयामि-ब्रह्मरन्ध्रे

यन्त्र अंकन –

तांत्रिक दृष्टि से यंत्रोंके रहस्य को समझ कर तदनुरूप ही उनका अंकन करना उचित होता है| यन्त्र मात्र आकृति ही नहीं होते हैं,बहुधा तथाकथित विद्वानों की दृष्टि में मनगढंत आकृतियों को ही तंत्र समझा जाता है हैजबकि सच्चाई इसे बिलकुल विपरीत है |

तंत्र एक विज्ञान है और इसमें प्रत्येक यन्त्र के निर्माण की अपनी पद्धति होती है | प्रत्येक देवता के आगम शास्त्र में तीन रूप बताये गए हैं –

मंत्र रूप

यन्त्र रूप

विग्रह रूप

इन तीन रूपों के आधार पर देवताओं या उन शक्तियों से संपर्क स्थापित करना ही साधना कहलाता हैऔर एक के अभाव में दूसरे की साधना संभव ही नहीं हो सकती है| मन्त्रों के स्वर में देव-शक्तियों का स्वरुप और मन्त्र वर्णों के कम्पन में उन देवता की स्वशक्ति विद्यमान होती हैं|

स्वर वर्णों का आधार है| और बिना आधार के शक्ति की साकारता और प्राकट्य संभव ही नहीं है| विग्रह और यन्त्र का आकार-प्रकार देवशक्ति के रूप का परिचायक है,जिसमें मन्त्रों के कंपन और उस कंपन के संयुग्मन से उस शक्ति विशेष का आविर्भाव होता है| प्रत्येक यंत्रों का आकार-प्रकार और आधार जिसे हम भूपुर के नाम से जानते हैंवो देवता के रूप का प्रतिनिधित्व करता है,और उसमे स्थापित अंक तथा बीजाक्षर उसकी शक्ति का प्रकटीकरण करते हैं| मंत्र,यन्त्र विग्रह या चित्र पर आधारित हैं| प्रत्येक शक्ति और मंत्र के लिए एक यन्त्र विशेष निर्दिष्ट होता है| बिना मन्त्र की सिद्धि के उन निर्दिष्ट यंत्रों से सहायता प्राप्त करना बिलकुल असंभव है| मंत्र की सिद्धि और यंत्रों की साधना मन की पूर्ण एकाग्रता और पूर्ण श्रद्धा पर ही निर्भर है| मन:शक्ति की साधना द्वारा मंत्र पर और प्राणशक्ति की साधना द्वारा यन्त्र की पूर्ण सिद्धि की जाती है|

सिद्ध मंत्र मानव शरीर या पिंड और ब्रह्माण्ड के मध्य ऐसा माध्यम बन जाता है,एक इसे सूत्र के रूप में परिवर्तित हो जाता है,जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य के विचारों,इच्छाओं और संकल्पों के नुसार देवीय शक्तियां उस साधक के कार्यों को सफल और पूर्ण करने में सहायक होने लगती हैं|

अप्सरा और यक्षिणी साधनाओं के लिए पंचदशी यन्त्र की सिद्धि का होना अति आवश्यक है| मात्र ग्रंथों को पढ़ कर इस क्रिया को नहीं समझा जा सकता था| वास्तव में अप्सरा और यक्षिणी साधना के लिए पंचदशी यंत्र के अंकन को समझना बहुत आवश्यक होता है| ये यंत्र उपरोक्त साधनाओं में सफलता प्राप्त करने हेतु साधक के लिए आधार काकार्य करता है| जब **सदगुरुदेव** ने **धनदा शिविर** का आयोजन किया था तो उन्होंने शिष्यों के सामने इस यंत्र की महत्ता को स्पष्ट करते हुए बताया था की कैसे **पंचदशीयन्त्र** और **सिद्धिप्रद मंत्र** यक्षिणी और अप्सरा साधना में सफलता प्राप्ति के लिए आवश्यक होता है और इसकी क्या भूमिका होती है| मूलतः **ये यन्त्र भगवान शिव से सम्बंधित है,और ये शिवत्व,सत्यता और सौंदर्य गुणों का प्रतिनिधित्व करता है,अर्थात जो साधक इस यंत्र की सिद्धि और क्रियात्मक पक्ष को समझ लेता है वो शिवत्व और सौंदर्य दोनों की ही एक साथ प्राप्ति कर सकता है**| और उस शिविर के पहले भी लोगो ने **धनदा रति साधना** की थी किन्तु उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हुयी थी| लेकिन जब इन सूत्रों का प्रयोग किया तो प्रथम बार में ही बहुत अनुकूलता का अनुभव उन्हें हुआ था और थोड़े ही प्रयत्न से उन्होंने साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त कर ली|

यन्त्र निर्माण के लिए जो भी नियम शास्त्रों में बताये गए हैं,**उन सभी नियमों का पालन करते हुए ही यन्त्र का निर्माण करना चाहिए**| वैसे तंत्र शास्त्र के नियमों के अनुसार पंचदशी यन्त्र के4 प्रकार होते हैं –

ब्राह्मण

क्षत्रिय

वैश्य

शूद्र

स्वजातीयगत मान्यता के आधार पर साधक को अपने लिए निर्धारित पंचदशी यन्त्र का अंकन और सिद्धिकरण करना चाहिए| किन्तु सदगुरुदेव ने इस भ्रान्ति का निवारण करते हुए बताया था की

"जन्म: अपि सर्वे शूद्र जायते|

और उसे जातिगत समझने से मानव मात्र में अंतर आ जाता है| जबकि उसकी अध्यात्मिक अर्थता को समझने पर ही उसका पूर्ण मर्म समझ में आता है | इसलिए शास्त्रों में आगे बढ़ कर ये कहा गया है की जैसे ही गुरु तुम्हे संस्कारित करेंअर्थात दीक्षा प्रदान करे,वैसे ही तुम्हारा दूसरा जन्म होता है जो की ब्राह्मण या द्विज के रूप में कहा गया है|

अतः जब एक दीक्षित साधक यन्त्र का अंकन करेंतो वो उसी यन्त्र का अंकन करें जो की ब्राह्मण के लिए निर्दिष्ट किया गया है अप्सरा/यक्षिणी साधना में सफलता हेतु साधक को दो यंत्रों का निर्माण या अंकन करना होता है|

१. पंचदशी यन्त्र

२. मूल अप्सरा/यक्षिणी यन्त्र

वर्णों और क्रम के अनुसार पंचदशी यन्त्र इस प्रकार होंगे–

८	१	६
३	५	७
४	९	२

उपरोक्त यन्त्र को ही आपको अप्सरा/यक्षिणी साधना हेतु सिद्ध करना है अंकन करने की विधि निम्नानुसार है–

इस यन्त्र का अंकन अप्सरा/यक्षिणी की साधना हेतु आपके जन्म नक्षत्र में किया जाता है,और यदि जन्म नक्षत्र का आपको ज्ञान ना हो तो पुष्य,मघा,आश्लेषा या आर्द्रा नक्षत्र को महत्त्व देना चाहिए किन्तु ज्यादा उचित यही होता है की साधक स्वयं के जन्म नक्षत्र का प्रयोग करें**साधना वाले दिन ब्रह्ममुहूर्त में इस विधान को उत्तर दिशा की ओर मुख करके किया जाता है** जन्म नक्षत्र के दिन जो वार पड रहा हो,उसी का प्रतिनिधित्व करने वाले वस्त्र को सामने बाजोट पर बिछाकर त्रिगंध का प्रयोग कर चमेली या अनार की 9 अंगुल की कलम से यन्त्र का अंकन भोजपत्र पर या सफ़ेद कागज़ पर करें(कागज़ या भोजपत्र इतना बड़ा होना चाहिए की उसमे चारों दिशाओं में चार यन्त्र का निर्माण किया जा सके और चारों यंत्र के मध्य मेंबीज मंत्र भली भांति अंकित किया जा सके|) अंकन करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखें की प्रधान पंचदशी यन्त्र सदैव कागज या भोज पत्र में ऊपर की ओर अंकित किया जाता है,9 खानों का निर्माण कर यन्त्र में पहले उस संख्या का अंकन करें जो आपका मूलांक हो अथवा यदि आपको आपकी अंग्रेजी तिथि ज्ञात ना हो तो आप अपनी हिंदू जन्म तिथि के कुल योग को मूलांक मानकर उसका अंकन करें| मूलांक हमेशा1से 9 के मध्य ही आयेंगे |

मान लीजिए आपकी जन्मतिथि 23 है,तब 2+3 =5 मूलांक आया,अब ऐसे में सबसे पहले 9 खानों का यन्त्र बनाकर उसमे ५ अंक पहले लिखा जायेगा | इस तथ्य का ध्यान सभी साधकों को रखना ही होगा त्रिगंध को ऐसे पात्र में रखना चाहिए,जिसे पहले जूठा नहीं किया हो| अर्थात पूजन के पात्र अलग ही होना चाहिए| केसर,लाल चन्दन और गोरोचन को मिलकर त्रिगंध का निर्माण करना चाहिए| तत्पश्चात त्रिगंध और अक्षत,पुष्प द्वारा उस अंक का पूजन कर माला से उतनी ही संख्या में माला

जप करनी चाहिए,जितना आपने अंकन किया हो| इसी क्रम में अब अगला अंक उस अंक के आगे का अंक होगा जो आपने पहले लिखा है| यदि आपने पहले 9 लिखा था तो उसका पूजन और 9 माला मंत्र जप के बाद अगली संख्या 1 होगी,जिसका आप अंक में अंकन करेंगे,और फिर उसका पूजन कर 1 माला ही आपको मंत्र जप करना है| इसी प्रकार पूरे 9 खानों में आपको अंक भरने हैं और पूजन तथा जप करना है|

जिस मंत्र का आपको जप करना है वो मंत्र है–

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा||

OM BHADRESHWAR BHADRAM POORAY POORAY SWAHA ||

इस मंत्र को आप रुद्राक्ष माला से जप कर सकते हैं| **ये मंत्र अपने आपमें अत्यंत प्रभावकारी है और असंख्य कार्यों की सिद्धि मात्र इसी मंत्र के द्वारा की जा सकती है**| किन्तु वो एक पृथक विषय है| जिसका विवरण भविष्य में कभी अवश्य करने का प्रयास करूँगा|

उपरोक्त क्रम को करने के पश्चात उस यन्त्र के नीचे **अप्सरा/यक्षिणी प्रतीक बीजाक्षर** अपने नाम को सम्पुटित करते हुए अंकित करें|

यदि आप अप्सरा साधना कर रहे हैं तो-

"ह्रीं क्लीं ह्रीं ......स्वयं का नाम.....ह्रीं क्लीं ह्रीं" अंकित करें|

HREEM KLEEM HREEM ......SELF NAME.... HREEM KLEEM HREEM |

और यदि आप यक्षिणी साधना करने जा रहे हैं तो पंचदशी यन्त्र के नीचे–

"क्लीं ह्रीं क्लीं......स्वयं का नाम.....क्लीं ह्रीं क्लीं" अंकित करें|

KLEEM HREEM KLEEM.....SELF NAME..... KLEEM HREEM KLEEM |

और इन बीजाक्षरों का त्रिगंध,पुष्प और अक्षत से पूजन कर निम्न मंत्र की 5 माला जप करें|

रति अनंग पञ्च बाण कामाक्षी मंत्र-

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं

HREEM KLEEM AIM BLOOM STREEM

अब इसके बाद बाएं हाथ की ओर अर्थात बीजाक्षर के बाएं ओर पंचदशी यन्त्र का निर्माण चित्रानुसार करे, इस बार भी अंकों का अंकन क्रम वही रहेगा किन्तु प्रत्येक अंक का अंकन करने के बाद मात्र 11-11 बार पंचदशी सिद्धि मन्त्र बोलकर उपरोक्तानुसार पूजन करें| जब ये वाला भी यन्त्र अंकित हो जाये तब इसके सामने ३ माला मंत्र पंचदशी सिद्धि मंत्र की करें| इसके बाद बीजाक्षर के नीचे की ओर पंचदशी यन्त्र का निर्माण चित्रानुसार करेंऔर उसमे भी वही विधान दोहराएँ जो दूसरे यन्त्र के

निर्माण के समय किये गए थे,तत्पश्चात बीजाक्षर के दाहिनी ओर भी चित्रानुसार यन्त्र का निर्माण कर उपरोक्त क्रम करें | और अब खीर का नैवेद्य भी अर्पित करना है |

प्रथम यन्त्र में तो ऊपर के चित्र के अनुसार अंक होंगे|

द्वितीय यंत्र में अंक वर्ण क्रम से निम्नानुसार हो जायेंगे अर्थात्पहली पंक्ति,दूसरी पंक्ति और तीसरी पंक्ति में अंकों का क्रम निम्नानुसार होगा|

४-९-२

३-५-७

८-१-६

तृतीय यंत्र में अंक वर्ण क्रम से निम्नानुसार हो जायेंगे अर्थात्पहली पंक्ति,दूसरी पंक्ति और तीसरी पंक्ति में अंकों का क्रम निम्नानुसार होगा|

२-९-४

७-५-३

६-१-८

चतुर्थ यंत्र में अंक वर्ण क्रम से निम्नानुसार हो जायेंगे अर्थात्पहली पंक्ति,दूसरी पंक्ति और तीसरी पंक्ति में अंकों का क्रम निम्नानुसार होगा|

६-१-८

७-५-३

२-९-४

अतः पूर्ण यन्त्र का निर्माण हो जाने परअब यन्त्र निम्नानुसार निर्मित होगा–

१ यन्त्र

२ यन्त्र बीजाक्षर ४ यन्त्र

३ यन्त्र

उपरोक्त प्रक्रिया यन्त्र अंकन के नाम से तंत्र विद्वानों के मध्य जानी जाती है ये साधना के प्रथम दिवस ही की जाने वाली क्रिया है और इस भोजपत्र को संभालकर रखना है,क्योंकि रात्रिकाल में इसी भोजपत्र या कागज के ऊपर आपका मूल साधना यन्त्र स्थापित होगा | मैंने मात्र अप्सरा/यक्षिणी साधन में सफलता हेतु कैसे अंकन किया जाता हैमात्र उसी का परिचय दिया है| अन्य प्रकार की तंत्र साधनाओं में की जाने वाली यन्त्र अंकन की क्रिया अलग अलग होती हैं|

यंत्र उत्थापन –

जब उपरोक्त यन्त्र का निर्माण हो जाये तब उसका उत्थापन क्रम संपन्न करना चाहिए| इस क्रिया से यन्त्र का पूर्ण रूप से उत्थापन हो जाता है और वो साधक के साथ आत्मेकाकार होकर साधक का प्रतिनिधित्व करने लगता है, तब जब आप उसके सामने मंत्र जप करते हैं तो वो मंत्र उस यन्त्र के अधिपति देव के सामने आपके प्रतिनिधित्व की क्रिया करते हुए आपके आत्मशक्ति और भाव शक्ति का योग भी उस अधिपति से करवाता है | तब मात्र आपका जप जप ना होकर चैतन्य क्रिया में परिवर्तित हो जाती है | प्रारब्ध कर्मों का मलावरण सतत जप से अतिशीघ्रता के साथ क्षीण होने लगता है और मंत्र ध्वनि में दिव्यता का संचार होने लग जाता है तथा अभीष्ट प्राप्ति की संभावनाएं बढ़ जाती है| आप मूल यन्त्र को उपरोक्त अंकित यन्त्र के ऊपर स्थापित कर108 अक्षत के दाने कुमकुम या केसर से रंजित कर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए1-1 दाना अर्पित करते जाएँ | ये क्रिया भी मात्र प्रथम दिवस ही की जाती है और ये उपरोक्त यन्त्र निर्माण के तुरंत बाद की जाती है|

मंत्र-

ॐ असुनीते पुनरस्यामु चक्षु पुनः प्राणमित नोधेहि भोगम्|

ज्योक्पश्येम सूर्य मुच्चरुतमनुमते मृडयान स्वस्ति ||

OM ASUNITE PUNARSYAMU CHAKSHUH PUNAH PRAANMIT NODHEHI BHOGAM |

JYOKPASHYEM SOORYA MUCHCHRUTMANUMATE MRIDYAANAH SWASTI ||

यन्त्र दीपन –

यन्त्र उत्थापन के बाद उस यन्त्र का दीपन किया जाता है,और दीपन की क्रिया से यन्त्र मात्र जाग्रत ना होकर पूर्ण दीप्त हो जाता है| तथा आपको पूर्ण सफलता देने में समर्थ हो जाता है | इस हेतु ताम्र पात्र में रखे हुए जल के सामने निम्न**तारिणी दीप्ति बीज मन्त्र** की एक माला संपन्न कर लेनी चाहिये और जब रात्रि में आप मूल साधना का प्रारंभ कर रहे हों तब इसी**तारिणी दीप्ति बीज मन्त्र**का दस बार उच्चारण करते हुए कुश या पुष्प के द्वारा मूल यन्त्रपर छींटा दें | ये एक महत्वपूर्ण क्रिया है और आप इस क्रिया के पूर्ण होते ही यन्त्र की उर्जा और उसके वर्ण में चमक की तीव्रता को अनुभव कर सकते हैं|

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रों ओम ह्रीं श्रीं हुं फट् हसों ह्रूं||

AIM HREEM SHREEM HROM OM HREEM SHREEM HUM PHAT HASOM HOOM ||

यन्त्र कीलन-

ये क्रिया दो चरण में संपन्न होती है–

१.अप्सरा/यक्षिणी ह्रदय कीलन क्रिया -

इस हेतु आप**पूर्ण कामाक्षी शक्ति माल्य**से उपरोक्त **रति-अनंग कामाक्षी शक्ति मंत्र**का यक्षिणी/अप्सरा के नाम को सम्पुट देकर 5 माला जप कर लें | ये विधान मूल साधना की पूर्व मध्य रात्रि को करना चाहिए,सामने तेल का दीपक प्रज्वलित हो,सामने **अप्सरा-यक्षिणी मंडल** स्थापित कर उसका पंचोपचार पूजन कर केसर मिश्रित खीर और पान का भोग लगाकर5 माला जप कर लें| अप्सरा/यक्षिणी ह्रदय कीलन का ये सबसे सरल विधान है,जो की उस विशिष्ट माल्य और मंडल की शक्ति

और सायुज्यता की वजह से बहुत ही आसानी से संपन्न हो जाता है| जप काल में जीभ तालू से चिपक सी जाती है,जिससे 1-1 मंत्र का उच्चारण अत्यंत कठिन हो जाता है| किन्तु ये स्थिति मात्र 1-4माला के मध्य ही होती है,अंतिम माला के प्रारंभ के साथ ही जिव्हा का कीलन खुल जाता है| जप के पश्चात मंडल और माल्य को लाल कपडे में बाँध कर पूजन स्थल पर ही रख दें|

रति-अनंग कामाक्षी शक्ति मंत्र-

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं अप्सरा/यक्षिणी नाम देव्यै स्त्रीं ब्लूं ऐं क्लीं ह्रीं||

HREEM KLEEM AIM BLOOM STREEM APSARA/YAKSHINI DEVYAI STEEM BLOOM AIM KLEEM HREEM||

२.शक्ति यन्त्र कीलन क्रिया -

इसके अतिरिक्त स्वयं के हाथो से या गुरु के द्वारा निर्मित अप्सरा/यक्षिणी का चित्र या विग्रह भी पास में होना चाहिए, इससे ध्यान में अनुकूलता मिलती हैअप्सरा/यक्षिणी साधना में इन शक्ति के कीलन की गोपनीय क्रिया भी की जाती है ,इस क्रिया में भोजपत्र या सफ़ेद कागज पर त्रिगंध से शक्ति का लघु चित्र या मूल यन्त्र बनाया जाता है और उस चित्र के मध्य में मूल मंत्र लिखा जाता है. यदि आपने यंत्र का अंकन किया है तो उसके मध्य में मंत्र नहीं लिखना हैअब उस चित्र के चारो और गोलाकार में मंत्र लिखना रहता है .उसका तरीका ये है की पहले मंत्र लिखा फिर मूल मंत्र का पहला अक्षर फिर मंत्र लिखा फिर दूसरा अक्षर इसी प्रकार मंत्र फिर अक्षर फिर मन्त्र फिर अक्षर और अंत में फिर मंत्र लिखा जाता है,circle वृत्त या गोलाकार रूप में और ये क्रिया साधना के प्रारंभ में की जाती है तथा मंत्र लिखते समय जब आप मंत्र के अक्षरों को लिखते हो तो उस अक्षर पर २१ बार मूल मंत्र को जप कर अनामिका अंगुली का स्पर्श करना चाहिए,ये क्रम अंतिम अक्षर तक रहता है .ये क्रिया **कीलन** कहलाती है तत्पश्चात उस यन्त्र पर त्राटक का अभ्यास करते हुए मूल साधना मंत्र का जप करना चाहिए| इस क्रिया के द्वारा अप्सरा/यक्षिणी को साधक अपने मन्त्रों से कीलित या बांध लेता हैऔर अप्सरा/यक्षिणी को प्रत्यक्ष होने और सिद्धि देने के लिए बाध्य होना पड़ता है. ये क्रिया और आगे का पूर्ण जप वीर भाव से ही होना चाहिए वो भी क्रोध मुद्रा में| इस क्रिया के द्वारा आकस्मिक धन प्राप्ति के उपाय साधक को स्वतः ही ज्ञात होते जाते हैं और उसे उस शक्ति का मूल गुण धर्म भी स्वतः ज्ञात होते जाता है जिससे उसे स्वयं के नियंत्रण में लेने की क्रिया सहज हो जातीहै | बहुतेरे साधकों ने प्रत्यक्षीकरण का भाव नहीं रखते हुए मात्र जीवन में ऐश्वर्य और धन प्राप्ति की चाह से भी मात्र इस कीलन विधान को संपन्न करके देखा है और अल्प प्रयासों में भी उन्हें प्रचुर धन की प्राप्ति तो हुयी ही साथ ही उस अप्सरा और यक्षिणी के साहचर्य का भी अनुभव होता रहा | वस्तुतः मात्र पढ़ने से क्रिया की सत्यता तो समझ में आएगी नहीं,उसके लिए तो आपको आगे बढ़कर इसे क्रियात्मक रूप से कर के परखना होगा |तभी आप इन सूत्रों की सत्यता को अनुभव कर पाओगे|

सम्मुखीकरण प्रयोग-

साधना के मध्य जब साधक विनियोग,न्यास ध्यान और आवाहन की क्रिया संपन्न कर चुका होता है,तब शक्ति के स्थापन और समीप बुलाकर स्थान देने हेतु सम्मुखिकरण प्रयोग किया जाता है| बहुधा साधक साधना तो संपन्न कर लेता है किन्तु वो शक्तियों का स्थापन और सम्मुखिकरण की क्रिया ही नहीं करता है,और इस क्रिया के अभाव में शक्ति आकार खड़ी तो हो जाती है,किन्तु जब उसे संगठित होने का स्थान ही नहीं दिया गया हो तो वो अणु विखंडन की अवस्था में ही बिना संलयित हुए वापस लौट जाती है,अर्थात उनका प्रत्यक्षीकरण हम देख ही नहीं पाते हैं और साधना को ही दूषण देते हैं|

अतः आवाहन के पश्चात दोनों हाथ जोड़कर उनके आगमन की प्रार्थना करें और सम्मुखिकरण मुद्रा का प्रदर्शन करते हुए निम्न मंत्र के प्रारंभ में मनोवांछित शक्ति का नाम लगाकर५ बार उच्चारण करें |

..........देवी इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण इह सन्निधेहि इह सन्निमुद्धयश्व इह सम्मुखि भव ||

.........DEVI IHAGACHCHH IH TISHTH MAM POOJAAM GRUHAAN IH SANNIDHEHI IH SANNIMUDDHYASHV IH SAMMUKHI BHAV ||

त्रिलोही मुद्रा

जिस प्रकार यक्षिणी साधना में कुछ विशिष्ट मुद्राओं का प्रयोग होता हैउसी प्रकार अप्सरा साधना में पूर्ण सफलता के लिए ६ **मुद्राओं** का प्रयोग होता है| जिनकाप्रदर्शन मूल मंत्र के जप के पूर्व तथा बाद में किया जाता है| ये अनिवार्य कर्म होता है,जिसके द्वारा साधक को सफलता प्राप्त होती है,मुद्रा साधक और अप्सरा के मध्य एक सांकेतिक भाषा का कार्य करती है जिसके द्वारा अप्सरा साधक की मनोकामना से परिचित होकर उसका अभीष्ट प्रदान करती है |

आवाहन मुद्रा

स्थापन मुद्रा

सन्निहितीकरण मुद्रा

सरोज मुद्रा

क्षोभण मुद्रा

आकर्षण सम्मोहन मुद्रा

सिद्ध मुद्रा -

जिस प्रकार अन्य तंत्र साधनाओं और अप्सरा साधनाओं में सफलता प्राप्ति हेतु**त्रिलोही मुद्रा** और उससे सम्बंधित क्रिया की अनिवार्यता होती है उसी प्रकार यक्षिणी साधना में ध्यान के बाद **साधना के पूर्व यक्षिणी का आवाहन करने, उन्हें आसन देने,उन्हें आसन पर बैठने और उनके सान्निध्य के लिए,उन्हें हृदय में स्थापित करने के लिए, उनका पूजन करने के लिए तथा जप के उपरांत उनका विसर्जन करने के लिए भी कुछ विशेष क्रिया की जाती है**,जिनका वर्णन नीचे किया जा रहा है|

इसी प्रकार कुछ मूल मंत्र के अतिरिक्त कुछ विशेष मन्त्रों और मुद्राओं की भी अनिवार्यता होती है

यक्षिणी मुद्रा-

क्रोधान्कुशी मुद्रा-जिसके द्वारा सम्पूर्ण विश्व को ही आकर्षित किया जा सकता है.

इस मुद्रा का प्रयोग करके निम्न मंत्र से यक्षिणी का आवाहन करे

ॐ ह्रीं आगच्छागच्छ अमुक यक्षिणी स्वाहा.

आवाहन के बाद **सम्मुखिकरण मुद्रा** का प्रदर्शन करते हुए निम्न मंत्र को उच्चारित करे-

ॐ महा यक्षिणी मैथुन प्रिये स्वाहा.

फिर **सान्निध्यकरण मुद्रा** कां प्रदर्शन करते हुए –

ॐ कामभोगेश्वरी स्वाहा

मंत्र का उच्चारण कर आसन प्रदान करे.इसके बाद **दोनों हाथ की मुट्ठी एक साथ बांध कर अपने वक्षस्थल पर रखे** और

ॐ ह्रीं हृदयाय नमः

का उच्चारण करें.फिर **प्रमुखी मुद्रा** अर्थात दोनों हाथ की मुट्ठी बांध कर तर्जनी और मध्यमा अंगुली को फैलाये तथा निम्न मंत्र से यक्षिणी का गंध,पुष्प,धुप,दीप,नैवेद्य आदि से पूजन करें-

ॐ सर्व मनोहारिणी स्वाहा.

सम्पूर्ण जप के पश्चात पुनः**आवाहन मुद्रा का ही प्रयोग करते हुए बाये को बाहर की और हिलाते हुए निम्न मंत्र का प्रयोग कर विसर्जन करे, याद रखे आवाहन में दाये अंगूठे को बाहर से अंदर हिलाते हैं और विसर्जन में बाये अंगूठे को अंदर से बाहर .**

ॐ ह्रीं गच्छ गच्छ अमुक यक्षिणी पुनरागमनाय स्वाहा

काम मुद्रा

यदि उपरोक्त क्रियाओं का प्रयोग करने पर भी इन यक्षिणियों/अप्सराओं का साहचर्य न प्राप्त हो तब यदि आपकोउपरोक्त मुद्राओं का ज्ञान न हो पा रहा हो तो भी**सदगुरुदेव** द्वारा **तंत्र रहस्यम** केसेट्स में बताई गयी पांच मुद्राओं का10-10 सेकेंड प्रदर्शन करने से भी अनुकूलता मिलती है.यथा **दंड,मत्स्य,शंख,अभय और हृदय मुद्रा**|

तथा **काम मुद्रा** का **रति संयोग** कर मंत्र जप के पूर्वप्रदर्शन करते हुए **ॐ बंध बंध हन हन अमुकी हुं** मंत्र का 8000 बार जप करें तथा २१ माला **ॐ सर्वसिद्धियोगेश्वरी हुं फट** मन्त्र की जप करें ,इससे निश्चय ही सफलता की प्राप्ति होगी ही. उपरोक्त सभी क्रियाएँ गोपनीय व दुर्लभ हैं इनका प्रयोग निश्चित ही कालानुसार करना चाहिए

सिद्ध प्रयोग –

साधना के पूर्व की गयी आपकी सात दिन की मेहनत भविष्य में आपके मंत्र इष्ट और मंत्र शक्तियों का प्रत्यक्षीकरण सहज कर देती है | स्थानदोष, नेत्र दोष या चिंतन दोष की वजह से बहुत बार ऐसा होता है की हमने सभी क्रियाएँ वैसी ही संपन्न की हो,जैसा शास्त्रों या गुरु ने निर्दिष्ट किया हो,तब भी शक्ति के अणु संलयित नहीं हो पाते हैं और हम यही सोचते हैं की शायद साधना में कोई त्रुटि रह गयी है,इसलिए प्रत्यक्षीकरण नहीं हो पाया और ऐसे में हमारा ह्रदय भग्न हो जाता है | इसका सबसे बड़ा कारण यही है की हम इतना ज्यादा नकारात्मक विचारों में भरे हुए हैं की हमने प्रत्यक्षीकरण को ही सिद्धि का आधार मान लिया है,जबकि ये सत्य नहीं है....खैर फिर भी यदि आपके मन में शक्तियों को प्रत्यक्ष देखने का भाव हो तो निम्न प्रयोग पहले से ही संपन्न कर लेना चाहिए | ये बहुत ही दुर्लभ और अनुभूत प्रयोग है,जिसे सदगुरुदेव ने स्वयं ही प्रदान किया था और जिससे आशातीत सफलता की प्राप्ति हुयी है | ये साधक के तरकश का अचूक बाण साबित होगा,यदि इसे पूरी तरह सिद्ध कर लिया जाये तो | वास्तव में **ये मंत्र और इसकी ध्वनि उन नाड़ियों और तंतुओं में स्पंदन कर उत्तेजित कर देते हैं जिसके द्वारा दिव्य नेत्र का जागरण होता ही है,** ऐसे में अदृश्य को दृश्यमान करना सहज ही हो जाता है |

किसी भी रविवार को ब्रह्ममुहूर्त में उठकर,स्नान और सूर्य को अर्घ्य प्रदान कर,पूर्व दिशा की ओर मुख कर श्वेत आसन पर बैठ जाएँ और गुरु पूजन,गणपति पूजन संपन्न कर सदगुरुदेव से प्रार्थना करे की **वो आपको इस साधना को संपन्न करने की अनुमति दे और सफलता प्राप्ति का आशीर्वाद दें** | तत्पश्चात गुरु माला से स्थिरासन में बैठकर निम्न गोपनीय मंत्र की ३१ माला जप संपन्न करें जप के पूर्व मन्त्र जप करते हुए २-२ मिनट तक **आवाहनी,शंख,गदा,पद्म मुद्रा** का प्रदर्शन करें | इस क्रिया को ७ दिनों तक संपन्न करना है,सात्विक आहार और साधना सम्बन्धी सभी नियमों का यदि पालन करते हुए यदि इस प्रयोग को कर लिया जाये तो निश्चय ही आपको अद्भुत अनुभव होगा| भविष्य में यदि कभी प्रत्यक्षीकरण की मनोकामना हो तो मूल साधना के साथ साथ इस मंत्र की ५ माला सम्बंधित शक्ति के यन्त्र,चित्र अथवा दीपक पर यथासंभव त्राटक करते हुए करें,और साथ ही साथ उपरोक्त चारों मुद्राओं का भी कुछह कुछ समय तक प्रदर्शनकरें विखण्डित अणुओं का संलयन होता है और शक्ति के दर्शन हो जाते हैं |

इष्ट प्रत्यक्षसिद्ध मन्त्र –

ॐ दिव्याय दिव्य नेत्रे इष्ट बिम्ब ह्रदय सिद्धिं स्थिर भव ॐ ||

OM DIVYAAY DIVY NETRE ISHT BIMB HRIDAY SIDDHIM STHIR BHAV OM ||

पूर्ण यक्षिणी अप्सरा सायुज्य षष्ठ मंडल

सौंदर्यवतां सा उर्ध्वोर्वतां पूर्ण तंत्रमेव सिन्धुं

दिव्योर्वतां सा साहचर्य प्राप्तुम ||

यक्षिणी अप्सरा वै सहचरी सदां सा |

रुद्रोमंडल स्थिरां च भवति वश्य वा ||

तंत्र जगत की अद्भुतता का वर्णन कर पाना असंभव ही है...तभी तो व्यंजना पद्धति के कूट भाष में रचित **"सौंदर्य कल्पलता सिंधु"** में ये कहा गया है की तंत्र के सागर में सौंदर्य और उर्ध्वरेतस गति की प्राप्ति सहज संभव नहीं हो पाती हैअपितु उसके लिए तंत्र रुपी सागर का मंथन करना अनिवार्य होता है,जो की इतना सहज कम से कम आज तो नहीं है,क्यूंकि चरित्र की शुद्धता और व्यक्तित्व की सुदृढता तंत्र सागर की गहराई को मापने का अनिवार्य गुण होना चाहिए साधक में और जिस साधक में ये गुण होता है वो सहज ही तीव्रता और सौंदर्य दोनों को ही हस्तगत कर लेता है | और जिसने सौंदर्य और तीव्रता को अपने वश में कर लिया,उसे दिव्यत्व तो सहज ही प्राप्त हो जाता है | और इस हेतु यक्षिणी और अप्सरा की साधना ही सर्वोपरि होती हैं नवीन तथ्यों और गूढ़ रहस्यों से साधक को सतत परिचित करवाना, उसका मार्गदर्शन करना और सच्चे मित्र की भाँति उसे साहचर्य और अपनी सलाह प्रदान करना ही इनका गुण होता है | शास्त्रों में विधियों की कमी नहीं है , मंत्र महार्णव,मंत्र सागरी,मंत्र सिंधु सौन्दर्याणव पद्धति, तंत्र रत्नाकर,भूत डामर तंत्र आदि ग्रन्थ इन साधनाओं से भरे हुए हैं किन्तु इनका सहयोग लेने पर भी इन सौंदर्य कृतियों का साहचर्य क्यूँ नहीं प्राप्त हो पाता है ?

क्या विधान गलत है ?

क्या मंत्र में त्रुटि है?

क्या पद्धति अधूरी है ?

नहीं .... ऐसा कदापि नहीं है | अपितु हम शायद ये भूल गए हैं की किसी भी साधना की कुछ गुप्त कुंजियाँ होतीहैं,जिनका अनुसरण और प्रयोग करते हुए यदि प्रामाणिक विधान किया जाए तो सफलता का प्रतिशत कई गुना बढ़ जाता है| हमारी कार्मिक गति के आधार पर भले ही सफलता मिलने में विलम्ब हो,किन्तु परिश्रम करने पर सफलता ना मिले ऐसा संभव नहीं है|

साधना के लिए विभिन्न सामग्रियों की अनिवार्यता होती ही है, काल, स्थान,वातावरण को अनुकूल करते हुए जो आपके चित्त को लगातार साधनोंमुख करते रहें| और इन सामग्रियों की अनिवार्यता को आप नकार भी नहीं सकते | प्रत्येक साधना में किसी खास द्रव्य या यन्त्र की अनिवार्यता तो बनी ही रहती है,जिसके अभाव में साधना से परिणाम की प्राप्ति दुष्कर ही होती है| साधना जगत में परिणाम प्राप्ति के लिए मंत्र,यन्त्र और तंत्र इन तीनों का ही सहयोग अनिवार्य होता है,तदुपरांत ही परिणाम संभव हो पाता है | और ऐसा मात्र महाविद्या साधनाओं में ही नहीं होता है अपितु प्रत्येक साधना के लिए ऐसा ही विधान है |

जबलपुर में १२ अगस्त को जो यक्षिणी अप्सरा साधना पर हम गोष्ठी आयोजित कर रहे हैं, उसमे इन साधनाओं की आधारभूत सामग्री के रूप में जिस सामग्री को हम गोष्ठी में भाग लेने वाले भाई-बहनों को प्रदान करने वाले हैं वो है,यक्षिणी अप्सरा सायुज्य षष्ठ मंडल| और इस मंडल की विशेषता क्या है,इसका वर्णन मैं नीचे की पंक्तियों में कर रहा हूँ| हमने पूर्ण मनोयोग से मात्र गोष्ठी में सहभागी होने वाले भाइयों और बहनों को ही इसे देने का निश्चय किया है,ताकि उपरोक्त साधनाओं से सम्बंधित सर्वाधिक महत्वपूर्णसामग्री सम्पूर्ण जीवन के लिए उनके पास हो और वे उसका प्रयोग कर पूर्ण लाभ उठा सके| यन्त्र के प्रयोग का पूर्ण विधान गोष्ठी में ही बताया जायेगा|

जिन भी भाइयों और बहनों ने सदगुरुदेव के सानिध्य में साधना शिविरों में भाग लिया है वे ये तथ्य भली भांति जानतेहैं की यंत्रों और सामग्रियों की अनिवार्यता का क्या महत्त्व होता है | यदि आपको महाविद्या साधना करनी हो तब भी उस हेतु आपको तीन मंडलों का निर्माण करना ही होता है, तभी उनका शरीर स्थापन,आत्म स्थापन,सायुज्यीकरण, आकर्षण,सफलता प्राप्ति और पूर्ण साहचर्य प्राप्त किया जा सकता है | **यदि माँ वल्गामुखी का कोई साधक हो और उसने मूल उत्स जागरण और अपने अथर्वासूत्र का पूर्ण जागरण और निर्मलीकरण ना किया हो तो उसे इस महाविद्या का पूर्ण साहचर्य नहीं मिल पाता है** हाँ उसके कार्यों को अनुकूलता मिल जाये ये एक अलग बात है| क्यूंकि साधना का प्रभाव तो आपको प्राप्त होता ही है....ऐसा हो ही नहीं सकता है की हम कर्म करें और उसका अल्प परिणाम भी प्राप्त ना हो |

और इस हेतु यदि हम ऊपर लिखी हुयी श्लोक की पंक्तियों के भावार्थ को समझे तो उसमे स्पष्ट लिखा हुआ है की-

यक्षिणी अप्सरा वै सहचरी सदां सा|

रुद्रोमेंडल स्थिरां च भवति वश्य वा||

यक्षिणी और अप्सरा का साहचर्य तो सदैव प्राप्त हो सकता है किन्तु इस हेतु उसका कीलन और स्थापन**रूद्र मंडल** में करना होता है |

वस्तुतः ये समझना अति आवश्यक है की ये मंडल क्या है???

अप्सरा और यक्षिणी साधना में पूर्ण सफलता प्राप्ति हेतु तीन मंडलों का संयोग कर**पूर्ण यक्षिणी अप्सरा सायुज्य षष्ठ मंडल**का निर्माण आवश्यक कर्म होता है | इस मंडल की निर्माण प्रक्रिया ही इतनी जटिल है की इसे सामान्य साधक नहीं कर सकता है सम्पूर्ण मंडलों को ३ भागों में विभक्त किया गया है |

१. रूद्र मंडल

२.अप्सरा सिद्धि मंडल

३.यक्षिणी सिद्धि मंडल

और इन तीनों मंडल में से प्रत्येक मंडल में 2-2 उपमंडल होते हैं जिनके योग से एक पूर्ण मंडल का निर्माण होता है |और इस प्रकार ३ पूर्ण मंडलों के मिलने से१ परिपूर्ण मंडल का निर्माण होता है और इस प्रकार इस पूर्ण सिद्धि मंडल में एक साथ6 यंत्रों का योग होता है,तभी पूर्ण सफलता के दर्शन साधक को संभव हो पाते हैं यदि हम इसे समझे तो क्रम इस प्रकार होगा -

रूद्र मंडल में प्रथम मंडल या यन्त्र **सिद्ध शिव कुबेर मंडल** होता है, जिसमे **भगवान महाकाल** का जो तीव्रता और सौंदर्य के अधिपति हैं और जिनकी कृपा से साधक को पूर्ण काम भावऔर काम भाव पर विजय प्राप्ति का वरदान मिलता है,इन सौंदर्य साधना में सफलता के लिए इनका स्थापन पूर्ण तांत्रोक्त रूप से किया जाता है जिसकी कुछ विशिष्ट क्रियाएँ हैं जिनके प्रयोगसे अंग स्थापन,पूजन,ज्यामितीय अंकन,ब्रह्माण्ड चेतना प्राप्ति आदि संभव हो पाती है और साधना में जो पौरुष भाव और अधिपत्य का भाव अनिवार्य है ये उसे ही प्रदान करने वाले हैं जिससे साधना के समय संयम भाव के वो पूर्ण नियंत्रण में होता हैजिससे कामोद्वेग से वो पीड़ित नहीं होगा |ना ही उसे स्वप्नदोष जैसी बाधा का सामना करना पड़ेगा और ना ही कामुकता की तीव्र लहर उसकी साधना को ही भंग कर पायेगी | साथ ही भगवान महाकाल के साथ उनके ही शिष्य **यक्षराज कुबेर** और **उनकी शक्ति** का अंकन भी इस एक यन्त्र में ही संयुक्त रूप से होता हैक्यूंकि इस तथ्य से हम सभी अवगत हैंही की कुबेर यक्षिणियों के स्वामी हैं और इनकी कृपा के बगैर यक्षिणी का साहचर्य तो दूर साधक को अनुभूति का अनुभव भी दूर दूर तक नहीं हो सकता|है

इस रूद्र मंडल का दूसरा यन्त्र**कामाक्षी ब्रह्माण्ड आकर्षण यन्त्र** होता है,जिसमे**भगवती काम कला काली** की **कलाओं** का स्थापन किया जाता है और जिसके द्वारा साधक और अप्सरा तथा यक्षिणी के बीच एक सूत्र का निर्माण होता है और वे सुगमता से साधक से संपर्क स्थापित कर सकती हैंअपनी सम्पूर्ण कलाओं और विद्याओं के साथ वे साधक को अपना साहचर्य प्रदान करती हैं और उसे प्रतिकूलता से मुक्त रखतीहैं | **रूद्र मंडल** के दोनों यन्त्र साधक को **यक्षिणी और अप्सरा** दोनों ही साधनाओं में सफलता प्रदायक होते हैं, अब चाहे आप किसी भी एक वर्ग की साधना करें **तब भी ये एक मंडल तो आपको चाहिए ही** |

अब बारी आती है द्वितीय मंडल की जो की **अप्सरा सिद्धि मंडल** होता है | इस मंडल में भी दो मंडल होते हैं **१.अप्सरा मंडल** – जो साधक को अप्सरा साधन के योग्य बनाता है और उसकी नकारात्मक उर्जा को साधना काल में दूर रखता हैसाधक का शोधन कर उसे साधना के योग्य बनाना तथा सौंदर्य को आत्मसात करने की क्षमता देना,इस मंडल का प्रमुख कार्य है | सम्पूर्ण अप्सराओं

की इस मंडल में सांकेतिक उपस्थिति होती है| जिसके कारण उनका अंकन इसमें सहज हो जाता है और इस प्रकार ये उनका ब्रह्मांडीय आवास ही हो जाता है | सदगुरुदेव ने 1993 में इस यन्त्र को **अप्सरा साधना और तंत्र साधना के लिए अनिवार्य ही बताया था**,और बहुतेरे साधकों ने उस समय इसका प्रयोग कर सफलता पायी थी |

इसी मंडल का दूसरा उपमंडल या यन्त्र **सौंदर्य भाग्य लेखन मंडल** होता है,इसके सहयोग से साधक सौंदर्य साधनाओं के द्वारा जिन शक्तियों की प्राप्ति करता है,उसे सहेज कर रखता है और ये सौंदर्य सिर्फ बाह्यागत नहीं होता है अपितु,जीवन के प्रत्येक पक्ष और साधनाओं में इसका प्रभाव वो स्वयं देख सकता है,जब साधक से इस मंडल का पूर्ण आत्म चैतन्यीकरण हो जाता है तो बरबस ही इन सौंदर्य बालाओं को अपने लोक से इसके पास तक आना पड़ता है|

अब तीसरा मंडल **यक्षिणी सिद्धि मंडल** होता है,इसमें भी २ उपमंडल या यन्त्र होते हैं १. **षोडशी मंडल** इस मंडल का मुख्य कार्य साधक को उन 16 मुख्य यक्षिणियों का अगोचर साहचर्य प्रदान करना होता है जिनके अधिकार में 4-4 यक्षिणी होती है | इस प्रकार प्रत्येक यक्षिणी के अधिकार में 4 विद्याएं होती है,जिसकी प्राप्ति वो साधक को साधना के परिणामस्वरूप करावा सकती है |वैसे शास्त्रों में प्रत्येक यक्षिणी को एक विद्या या कला प्रदान करने वाला कहा गया है,किन्तु चार चार के समूह की एक स्वामिनी होती हैं तो अपरोक्ष रूप से 4 विद्याओं पर उनका अधिपत्य सहज होता है| इस प्रकार 16 गुणित 4=64 तंत्र या विद्याओं की ये अधिस्वामिनी होती हैं | साधक के निर्माण तत्व के आधार पर कौन सा वर्ग उसे फलीभूत होगा,इसका संकेत ये 16 यक्षिणी साधना काल में ही साधक को स्वप्न के माध्यम से दे देती हैं तथा साधक को और क्या प्रयत्न करना चाहिए इसके सूक्ष्म संकेत भी साधक को वे प्रदान करती हैं | इसी मंडल का दूसरा उपमंडल या यन्त्र होता है **पूर्ण सम्मोहन वशीकरण मंडल**– साधना काल में बात मात्र आकर्षण की ही नहीं होती है अपितु वे पूरी तरह साधक के वशीभूत होकर पूर्ण अनुकूलता भी प्रदान करें,ये भी अनिवार्य तथ्य होते हैं | साधक का व्यक्तित्व पूर्ण चुम्बकीय हो और वो इन शक्तियों के साहचर्य से स्वयं भी देव वर्ग की और अग्रसर हो,मात्र मानव वर्ग ही नहीं अपितु उसकी सम्मोहन शक्ति से अन्य वर्ग भी उससे संपर्क करने के लिए आतुर हो,ये क्षमता प्रदान करना इसी मंडल के अंतर्गत आता है|

इस प्रकार इन तीन मंडलों का योग करने से **यक्षिणी अप्सरा सायुज्य षष्ट मंडल** का निर्माण होता है| इस एक यन्त्र में 6 यंत्रों का समावेश होता है,जो इन्ही क्रमों से इस महामंडल में अंकित होते हैं प्रत्येक उपमंडल की प्राणप्रतिष्ठा,अभिषेक,चैतन्यीकरण और दिप्तिकरण अलग अलग सामग्री,वनस्पतियों और मंत्र से होती हैं,किसी की प्राण-प्रतिष्ठा वज्रमार्ग से होती है,तो किसी की शाक्त पद्धति से,किसी की मध्य रात्रि में तो किसी के लिए ब्रह्ममुहूर्त का विधान है| और जब छहों यन्त्र पर क्रिया पूर्ण हो जाती है तब इनका योग करवाकर सायुज्यीकरण करवाया जाता है,तभी ये फलदायक होते हैं | किसी भी यन्त्र को चेतना देना इतना सहज नहीं होता है,क्यूंकि साधक को ये भली भांति ज्ञात होना चाहिए की इस यन्त्र का अंकन सृष्टि क्रम से हो रहा है या संहार क्रम से,किस पद्धति से इसका आवरण पूजन इत्यादि होगा आदि आदि|

इस मंडल की प्राप्ति के बाद साधना काल में आवश्यक सामग्रियों में आपको आपकी अभीष्ट यक्षिणी अप्सरा का मूल यन्त्र,माला और विधान ही लगता है,बाकी की गोपनीय क्रियाएँ तो उसका संयोग इस यन्त्र से करने से ही संपन्न होती है... तदुपरांत किन मुद्राओं का प्रदर्शन होना चाहिए,किन बातों का ध्यान आवश्यक है...क्या दिनचर्या होनी चाहिए आदि बाते ही आवश्यक होती हैं |

इस एक यन्त्र के निर्माण पर लागत मूल्य ही बहुत आ जाता है,और जो भी भाई बहन इसका निर्माण विधान समझना चाहे और स्वयं इसकी निर्माण विधि को प्रमाणिकता से आत्मसात करना चाहे वो अपने बहुमूल्य समयमें से मात्र १४ दिन और उन दिनों के ७-७ घंटे देकर स्वयं ही इस यन्त्र का निर्माण कर सकते हैं..इस की प्राण प्रतिष्ठा विधि और मन्त्रों तथा मुद्राओं को समझ सकते हैं तथा हेतु इसकी जो भी सामग्री लगेगी,वो आपको ही जुटानी है,उससे हमारा कोई लेना देना नहीं है,क्यूंकि निर्माण काल में आप स्वयं ही इस कार्य को सम्पादित करेंगे |

हम इस कार्य में सौभाग्यशाली रहे हैं की हमें अपने कई भाई बहनों का आर्थिक सहयोग मिला है और उस सहयोग की वजह से हमारी कई योजनाओं को गति भी मिली हैउनकी निस्वार्थता हमें निरंतर कर करने की और प्रेरित करती है और इसी कारण एक साथ इनकी प्राण प्रतिष्ठा आदि करने के कारण इनके निर्माण मूल्य में बहुत अंतर आ गया हैं उन सभी सहयोगियों के कारण ही आज पुनः इस कल कवलित विधान को मैं सबके सामने रखने का साहस कर रहा हूँ जब आप सभी से जबलपुर में मिलने का सौभाग्य मिलेगा तो इस महा मंडल का कैसे प्रयोग किया जाता है,उस हेतु हम विधान भी स्पष्ठ करेंगे| उपरोक्त यंत्रों का अलग अलग समय पर **सदगुरुदेव** ने प्रयोग कराया है,और ये उसी महान परंपरा से प्राप्त हुए हैं,इनमे से प्रत्येक यन्त्र को भिन्न भिन्न साधनाओं में भी प्रयोग किया गया हैऔर प्रत्येक प्रयोग प्रभावी रहे है | उन्होंने स्पष्ट करते हुए कहा था की सिद्धों के मध्य ये यन्त्र अलग अलग नामों से भी प्रचलित रहे हैं|

मैंने तो अपने दिल की बात कह दी..... अब वो आप तक पहुँचती है या नहीं......ये तो आपके भावों और कालगति पर ही निर्भर है.....

“निखिल प्रणाम”

“जय सदगुरुदेव”

धनदा रति साधना रहस्य

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि धनदां सर्वसिद्धिदाम्|

यामाराध्य महादेवि कुबेरोधननायकः ||

अर्थात भगवान शिव पार्वती जी से कहते हैं की मैं अब मैं आपको उन धनदा देवी की साधना का विधान स्पष्ट करता हूँ,जिनकी कृपा से साधक को सभी प्रकार की सिद्धियाँ स्वतः ही हस्तगत हो जाती हैं| तथा जिनकी कृपा से यक्षराज कुबेर को धनाध्यक्ष होने का गौरव मिला है |

उपरोक्त पंक्तियाँ ही धनदा साधना की महत्ता को समझाने के लिए सहज प्रयाप्त हैं जीवन में दु र्भाग्य से जब भी पिंड छुड़ाना हो और ऐश्वर्य की चरम पराकाष्ठा को प्राप्त करना हो,तब कलियुग में सहज रूप से प्रसन्न होने वाली धनदा साधना का ही सहयोग साधक को लेना चाहिए गौर वर्णीय और निर्मल कांटी से युक्त लाल वस्त्रोंको धारण करने वाली धनदा सदैव ही साधक को सभी प्रकार के इच्छानुसार फल देती हैं| साथ ही सभी प्रकार के पापों का हरण कर ये साधक को भी निर्मल कर देती हैं

शास्त्रों में धनदा देवी की साधना के विविध मंत्र प्रचलित हैं क्योंकी निश्चय ही इनसे ज्यादा सहजता और सरलता से कलियुग में किसी का साक्षात्कार नहीं होता है,किन्तु इसी कारण शास्त्रों में विधि तो प्रदान की गयी पर उन सूत्रों को गुप्त कर दिया गया,जिनकी मदद से साधक इन्हें सिद्ध कर सकता है| सदगुरुदेव ने धनदा शिविर का आयोजन किया था,जिसमे उन्होंने यक्षिणी और अप्सरा

वर्ग की सिद्धि के सरलतम विधान बताये थे | उन्ही विधानों को मैंने आपके सामने अपने इस लघु संकलन में रखा है| कुछ महत्वपूर्ण तथ्य जो धनदा सिद्धि के लिए अनिवार्य हैं,उन्हें मैं नीचे की पंक्तियों में संक्षेप में दे रहा हूँजिनके प्रयोग से आपको साधना में निश्चय ही अनुकूलता प्राप्त होगी|

"गुरुपूजां विनादेविनहि सिद्धि प्रजायते"

अर्थात बिना गुरु पूजंन और गुरु की कृपा के इस साधना में सिद्धि प्राप्त नहीं होती हैअतः गुरु का पूर्ण समर्थायानुसार पूजन और प्रत्यक्ष या मानसिक अनुमति लेकर ही इस साधना को करना चाहिए|

इसमें दो प्रकार के न्यास का प्रयोग किया जाता है,किन्तु साधक के लिए ज्यादा उचित यही होता है की वो गुरु द्वारा वर्णित न्यास का ही प्रयोग करे|

यदि पंचदशी सिद्धि मंत्र का इस मंत्र के न्यास बीजों के स्थान पर योग कर दिया जाए तो सफलता प्राप्त होती ही है|

साधक भले ही लाल वस्त्र पहन कर साधना करे किन्तु आसन के रूप में प्रतिदिवस अलग अलग रंग के वस्त्र का प्रयोग होता है| वैसे इस साधना को होली के सात दिन पूर्व या अपने जन्मनक्षत्र पर संपन्न करना चाहिए| और उस दिन जो वार पड़ रहा हो,उसी वार के रंग का रेशम या ऊनी कपडे का टुकड़ा अपने मूल आसन पर बिछाना चाहिए|

रविवार – गुलाबी

सोमवार - सफ़ेद

मंगलवार – लाल

बुधवार – हरा

गुरूवार – पीला

शुक्रवार – सफ़ेद

शनिवार – काला

अंतिम दिवस अग्नि प्रज्वलित कर मूल मंत्र से88 कमलगट्टे की आहुति दी जाती है,जिससे साधना पूर्ण रूपेण संपन्न होती है|

विधि – ये साधना मध्यरात्रि में संपन्न की जाती है अतः साधना 10.30 बजे से प्रारंभ कर देना चाहिए| बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर जो भी महत्वपूर्ण सूत्र इस ग्रन्थ में आपको बताये गए हैंउनमे से अपने सामर्थ्यानुसार सूत्रों को संपन्न कर लेना चाहिए गुरु पूजन और गणपति पूजन के बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करना चाहिए की**'मैं अमुक गुरु का शिष्य जो अमुक गोत्र से सम्बंधित हूँ और अमुक मेरा नाम है.....देवि की साधना संपन्न कर रहा हूँ मैं अमुक दिनों तक नित्य अमुक संख्या में माला जप करुना,हे गुरुदेव आप मुझे इस साधना को संपन्नकरने की अनुमति और साधना में सफलता प्राप्ति का आशीर्वाद दें और मेरा संकल्प सिद्ध हो यही आशीर्वाद दें"** फिर सामने बाजोट पर सम्पूर्ण मंडल का स्थापन कर उस पर रक्तचंदन अथवा केसर मिश्रित सफ़ेद चन्दन का लेप कर देना चाहिए और मंडल के सामने धनदा यन्त्र जो ताम्रपत्रपर निर्मित हो अथवा भोजपत्र पर रक्त चन्दन से बना हुआ तथा प्राण प्रतिष्ठित हो का स्थापन कर देना चाहिए| अब शिवशक्ति संस्कार संपन्न करने के बाद भैरव स्थापन,उत्थापन और कुबेर स्थापन व पूजन संपन्न कर लेना चाहिए|

शिवशक्ति संस्कार करते समय **मंडल** में अंकित **सिद्ध शिव कुबेर मंडल** से चन्दन ग्रहण करें और **सौंदर्य कंकण** पर तिलक करते हुए शिव का स्थापन करें|

यही क्रिया **कुबेर पूजन** के समय भी करें |

जब आप देवी का **अंगपूजन**उनके **विशिष्ट मातृका कला मंत्र से**करें तब **कामाक्षी ब्रह्माण्ड आकर्षण मंडल** से चन्दन ग्रहण करके मूल यन्त्र पर बिंदी लगाएं |

जब आप **उत्थापन न्यास** कर रहे हों तब भी आप मंत्र का उच्चारण करते हुए**षोडशी मंडल** से चन्दन लेकर अपने अंगों में लगाएं

आपने जिस मंडल की स्थापना की है वो विशिष्ट मन्त्रों और शक्ति से अनुप्राणित हैजब हम उस पर लेपित रक्तचंदन लेकर यन्त्र या स्वयं पर क्रिया करते हैं तो दोनों यंत्रों और साधक तथा साध्य के मध्य ऊर्जा सूत्र का निर्माण होता हैजो की साधना में सफलता के लिए अनिवार्य है |

अब हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्रों से विनियोग करें –

विनियोग –

ॐ अस्य श्री धनदा यक्षिणी मन्त्रस्य कुबेर ऋषिः पंक्तिश्छंदः श्री धनदा देवता | रं बीजं |श्री शक्तिः | ह्रीं कीलकं | श्रीधनदेश्वरी प्रसाद सिद्धये मे सम्पूर्ण दुर्भाग्यदारिद्रयनाशायश्री धनदा मन्त्र जपे विनियोग : ||

ऋष्यादिन्यास –

ॐ ह्रां कुबेर ऋषये नमः शिरसि||

ॐ ह्रीं पंक्तिश्छंदसे नमः मुखे ||

ॐ ह्रूं श्रीधनदा देवतायै नमः हृदये ||

ॐ ह्रैं रं बीजाय नमः गुह्ये||

ॐ ह्रौं श्री शक्तये नमः पादयो : ||

ॐ ह्रः ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ ||

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः विनियोगाय नमः सर्वांगे| → 0 तिथि से work on in forest

करन्यास –

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः||

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः॥

ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः॥

ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः॥

ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥

ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥

अंगन्यास–

ॐ ह्रां हृदयाय नमः॥

ॐ ह्रीं शिरसि स्वाहा॥

ॐ ह्रूं शिखायै वषट्॥

ॐ ह्रैं कवचाय हुं॥

ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्॥

ॐ ह्रः अस्त्राय फट्॥

सिद्धिप्रद न्यास बिंदु–

ऋष्यादिन्यास –

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा कुबेर ऋषये नमः शिरसि॥ –

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा पंक्तिश्छंदसे नमः मुखे॥

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा श्रीधनदा देवतायै नमः हृदये॥

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरयपूरय स्वाहा रं बीजाय नमः गुह्ये॥

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा श्री शक्तये नमः पादयोः॥

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ॥

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः विनियोगाय नमः सर्वांगे॥

करन्यास –

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः॥

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा तर्जनीभ्यां नमः॥

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः॥

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा अनामिकाभ्यां नमः॥

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥

अंगन्यास –

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा हृदयाय नमः॥

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा शिरसि स्वाहा॥

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा शिखायै वषट्॥

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा कवचाय हुं॥

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्॥

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा अस्त्राय फट्॥

ऊपर दो प्रकार के न्यास दिए गए हैं,पहले वाले तीन न्यास शास्त्रीय न्यास हैं जिनका प्रयोग करके देखने पर कोई विशेष अनुकूलता प्राप्त नहीं हुयी है,किन्तु सिद्धिप्रद न्यास बिंदु का प्रयोग करके देखने पर पूर्ण सफलता की प्राप्ति हुयी है,ये बहुत ही गोपनीय विधान रहा है जिसका सदगुरुदेव ने क्रियात्मक ज्ञान देकर साधकों को पूर्ण सफलता प्रदान की अतः साधक इसी न्यास क्रम को संपन्न करे

तत्पश्चात हाथ जोड़कर देवी का ध्यान करे-

ध्यान –

कुंकुमोदरगर्भाभां किन्चित्यौवन शालिनीम्|

मृणालकोमलभुजां केयुरां गद्धूषितां||

नीलोत्पल दृशम् किन्चिदुद्यत्कुच विराजिताम्|

भजेऽहं भ्राम्यकमलवराभय समंविताम्||

रक्तवस्त्र परिधानाम् ताम्बूलाधर पल्लवाम |

हेम प्राकारमध्यस्थां रत्नसिंहासनोपरि ||

तत्पश्चात देवी का अंगपूजनकी क्रिया विशिष्ट उत्थापन न्यास मन्त्रों से संपन्न करें तत्पश्चात देवी को अभिषेक पात्र में अर्घ्य प्रदान करें और धेनु तथा योनि मुद्रा का प्रदर्शन करें इसके बाद निम्न मन्त्रों से मूल यन्त्र पर देवी का पूजन करें|

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरयधं ह्रीं श्रीं रतिप्रिये स्वाहा आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरयधं ह्रीं श्रीं रतिप्रिये स्वाहा अक्षत समर्पयामि

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरयधं ह्रीं श्रीं रतिप्रिये स्वाहापुष्पं समर्पयामि

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरयधं ह्रीं श्रीं रतिप्रिये स्वाहा धूपं दीपम दर्शयामि

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरयधं ह्रीं श्रीं रतिप्रिये स्वाहा केशर मिश्रित पायसान्नम(खीर) निवेदयामि

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरयधं ह्रीं श्रीं रतिप्रिये स्वाहाताम्बूलं समर्पयामि

इसके बाद निम्न मन्त्रों से मूल यन्त्र पर मंडल पर लेपित चन्दन की बिंदी लगाएं-

ॐ महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ पद्मायै नमः पद्माश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ श्रियै नमः श्रीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ हरिप्रियायै नमः हरिप्रियाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ हरायै नमः हराश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ पद्मप्रियायै नमः पद्मप्रियाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ कमलायै नमः कमलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ अब्जायै नमः अब्जाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ चंचलायै नमः चंचलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ लोलायै नमः लोलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

तत्पश्चात **कामाक्षी माल्य** सेसर्वप्रथम "**ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरयस्वाहा**" मंत्र की 1माला मंत्र जप करे,इसी मंत्र को **मूल साधना मंत्र** के बाद भी 1 माला करना है | इसके बाद निम्न मूल मंत्र की51 माला मंत्र जप करें|

मंत्र-

ॐ धं ह्रीं श्रीं रतिप्रिये स्वाहा||

नित्य जप के बाद यदि हो सके तो धनदा कवच का 1 बार पाठ कर लिया करे और **योनि मुद्रा** के माध्यम से मन्त्र जप देवी के चरणों में समर्पित कर दिया करें | सातवें दिन मंत्र जप के बाद किसी ताम्र या मिटटी के हवं पात्र में लकड़ी प्रज्वलित कर88 कमलगट्टे के द्वारा मूल मंत्र से आहुति दे दें

यदि आप गोपनीय सूत्रों का प्रयोग करते हैं तो आप स्वयं ही इस साधना के द्वारा अपने जीवन में होने वले परिवर्तन को देखेंगे ही,साथ ही शक्ति का प्रत्यक्ष साहचर्य प्राप्त कर जीवन को पूर्णत्व पथ पर भी अग्रसर कर सकते हैं| प्रत्यक्षीकरण हेतु आप**शक्ति कीलन विधान** का प्रयोग अवश्य करें|

मनोवांछित अप्सरा सिद्धि प्रयोग

सौंदर्य एक ऐसा शब्द है,जिसे सुनते ही पूर्णत्व का बोध होने लगता है| हाँ हाँ पूर्णत्व का बोध...पूर्णत्व का अर्थ ही होता है....सम्पूर्णता प्रत्येक दृष्टि से..फिर वो चाहे भौतिक हो,मानसिक हो,आर्थिक हो,शारीरिक हो अथवा आध्यात्मिक हो | परन्तु जैसे सौंदर्य का पर्याय पूर्णत्व है,वैसे ही पूर्णत्व का पर्याय सौंदर्य ही है... और पूर्णत्व के लक्ष्य को सौंदर्य के पथ पर चले बगैर प्राप्त भी नहीं किया जा सकता है |

मैंने जो लिखा है वो कही से भी अतिशियोक्ति नहीं है,क्यूंकि क्या आपने कभी देखा है की जो पूर्ण होता है..उसकी पूर्णता से प्रस्फुटित संतुष्टी में कितना सौंदर्य समाया होता है| या ये कहा जाए की कभी आपने सौंदर्य को पूरी तरह निहारा है,बारीकी से उसका अवलोकन किया है....नहीं किया है......अजी तो ज़रा अवलोकन करके देखिये....निहारिए... और तब देखिये आपको पता चलेगा की वो सौंदर्य कैसे पूर्ण होने के अहसास से भरा हुआ है|तब ऐसे में ये समझना कठिन हो जाता है की सौंदर्य से पूर्णता उपज रही है या पूर्णता से सौंदर्य बिखर रहा है|

खैर कुछ भी हो जीवन का प्रत्येक पक्ष सौंदर्य से ही निखर कर पूर्णता पाता है...सौंदर्य का प्रधान गुण होता है आकर्षण....और जो आकर्षण क्षमता से युक्त होता है,वो बरबस ही किसी को भी अपनी ओर खींच सकता है...अपनी सफलता को भी | किन्तु सौंदर्य की परिभाषा स्त्री आर पुरुष के लिए भिन्न-भिन्न होती है | पुरुष के लिए सौंदर्य का अर्थ होता है ज्ञान,ऐश्वर्य,आच्छादित होने का गुण,आत्मविश्वास की प्रचुरता,परिस्थितियों को स्वानुकूल करने की कला,पूरी ऊँचाई,बलिष्ट स्कंध,चौड़ा वक्षस्थल,सिंहवत चाल और तीक्ष्ण दृष्टि,वाणी ऐसी की जो सुने वो बस उसके प्रभाव से बाहर ना निकल पाए|

और स्त्री के लिए आंतरिक सौंदर्य के साथ साथ बाह्य सौंदर्य का भी उतना ही महत्त्व है | गुलाब जैसा सुन्दर चेहरा,तीखी नजर,गुलाब की पंखुड़ी जैसे होंठ,कोमल त्वचा,उन्नत उभार,पतली कमर और भरे हुए नितंब,पतली उंगलियां,मधुर आवाज अर्थात

रूपवती होने की दृष्टि से जिसे पूर्ण कहा जाये बस वैसे ही सौंदर्य की मनोकामना स्त्री को होती है | और इन दोनों की प्राप्ति का मूल स्त्रोत अप्सरा साधना ही हो सकती है |

वैसे यक्षिणी साधना से भी सौंदर्य की प्राप्ति होती है किन्तु यक्षिणी साधना जहाँ पर एक सलोनापन देता है,वहीँ देव वर्ग से सम्बंधित होने के कारण अप्सराएँ अपने सतत साहचर्य से साधक के व्यक्तित्व में देवत्व के गुणों का समावेश करती रहती है| और साधना जगत का ये अनिवार्य नियम है की स्वयं के जीवन को बोझिलता से निकाल कर नवनिर्माण करने के लिए सौंदर्य साधना अनिवार्य ही होती हैं | मात्र शारीरिक तृप्ति के लिए इतनी उच्च साधनाओं को संपन्न करना जघन्यता ही कहा जा सकता है| सौंदर्य साधनाओं से भावनाओं की तीव्रता और प्रेम तत्व की प्राप्ति होती हैजिसके फलस्वरूप साधक का स्वयं की साधनाओं और अपने गुरु और मंत्र इष्ट के प्रति समर्पण बढ़ता चला जाता है| साधना करना तब ठूंठ की तरह बैठना ना होकर आनंद प्राप्ति का साधन हो जाता है| अप्सरा साधना साधक को लगातार आनंद भाव से युक्त कर देती है और इनका साहचर्य पुरुषों को पौरोषोचित सौंदर्य और स्त्रियों को सौंदर्य की परिभाषा से पूर्ण सौंदर्य युक्त कर देता है|

वैसे तो १०८ प्रकार की अप्सराओं काविवरण सिद्धाश्रम साधनाओं में आता हैऔर आप शायद इस तथ्य से अनभिज्ञ होंगे की सिद्धाश्रम प्राप्ति की साधनाओं में अप्सरा साधना का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है | उर्वशी,नाभिदर्शना,मेनका,रम्भा,तिलोत्तमा,शशिप्रभा आदि साधनाओं से साधक समाज परिचित ही है हमारे सामने दो विकल्प थे –

या तो हम इस लघु ग्रन्थ में कई अप्सराओं की प्रथक साधनाएं दें या फिर साधक को जो भी पसंद हो उस अप्सरा को सिद्ध करने की ही अति विशिष्ट साधना दे दी जाए | और बहुत विचार करने पर हमारा मत दूसरे विकल्प पर जाकर स्थिर हुआ| मनोवांछित अप्सरा की साधना सदगुरुदेव प्रदत्त अद्वितीय वरदान है साधक समाज के लिये | और अप्सरा साधना के लिए तत्पर साधकों को इसका प्रयोग अवश्य करना चाहिए,मात्र एक ही मंत्र और विधि...किन्तु अनेको अप्सराओं की सिद्धि के लिए गुप्त कुंजी युक्त

इस साधना के लिए **अप्सरा सिद्धि यन्त्र**,जो की या तो ताम्रपत्र पर अंकित हो या फिर रक्तचंदन से भोजपत्र पर अंकित यन्त्र(जिसकी प्राण-प्रतिष्ठा कर ली गयी हो),**अप्सरा यक्षिणी मंडल,सौंदर्य कंकण,इन्द्र गोलक** (जिसके निर्माण की विधि इसी ग्रन्थ में दी हुयी है)|

घृत दीप जिसमे गुलाब का इत्र डाल दिया जाए|

गुलाब अगरबत्ती|

गुलाब या मोगरा इत्र|

गुलाब की माला

विधि – ये साधना किसी भी शुक्रवार की मध्यरात्रि से प्रारंभ की जाती हैअतः साधना १०.३० बजे से प्रारंभ कर देना चाहिए|ये ११ दिन की साधना है | बाजोट पर गुलाबी वस्त्र बिछाकर जो भी महत्वपूर्ण सूत्र इस ग्रन्थ में आपको बतायेगए हैं,उनमे से अपने सामर्थ्यानुसार सूत्रों को संपन्न कर लेना चाहिए| गुरु पूजन और गणपति पूजन के बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करना चाहिए की **'मैं अमुक गुरु का शिष्य जो अमुक गोत्र से सम्बंधित हूँ और मेरा नाम अमुक है अमुक अप्सरा की साधना(जिस भी अप्सरा की आप साधना करना चाहते हैं अमुक की जगह उसका नाम लें) संपन्न कर रहा हूँ मैं अमुक दिनों तक नित्य अमुक संख्या में माला जप करूंगा,हे गुरुदेव आप मुझे इस साधना को संपन्न करने की अनुमति और साधना में सफलता प्राप्ति का आशीर्वाद दें और मेरा संकल्प सिद्ध हो यही आशीर्वाद दें"** फिर सामने बाजोट पर सम्पूर्ण मंडल का स्थापन कर उस पर रक्तचंदन अथवा केसर मिश्रित सफ़ेद चन्दन का लेप कर देना चाहिए और मंडल के सामने **अप्सरा यन्त्र**जो

ताम्रपत्र पर निर्मित हो अथवा भोजपत्र पर रक्त चन्दन से बना हुआ तथा प्राण प्रतिष्ठित हो का स्थापन कर देना चाहिए | अब शिवशक्ति संस्कार संपन्न करने के बाद भैरव स्थापनउत्थापन और इन्द्र स्थापन व पूजन संपन्न कर लेना चाहिए|

शिवशक्ति संस्कार करते समय मंडल में अंकित **सिद्ध शिव कुबेर मंडल** से चन्दन ग्रहण करें और **सौंदर्य कंकण** पर तिलक करते हुए शिव का स्थापन करें|

यही क्रिया **इन्द्र पूजन** के समय भी करें |

जब आप अप्सरा का **अंगपूजन**उनके **विशिष्ट मातृका कला मंत्र से**करें तब **अप्सरा तंत्र प्रतीक** से चन्दन ग्रहण करके मूल यन्त्र पर बिंदी लगाएं|

जब आप **उत्थापन न्यास** कर रहे हों तब भी आप मंत्र का उच्चारण करते हुए**सौंदर्य मंडल** से चन्दन लेकर अपने अंगों में लगाएं |

आपने जिस मंडल की स्थापना की है वो विशिष्ट मन्त्रों और शक्ति से अनुप्राणित हैजब हम उस पर लेपित रक्तचंदन लेकर यन्त्र या स्वयं पर क्रिया करते हैं तो दोनों यंत्रों और साधक तथा साध्य के मध्य ऊर्जा सूत्र का निर्माण होता हैजो की साधना में सफलता के लिए अनिवार्य है

अब आप रक्तचंदन मिश्रित अक्षत को **अप्सरा यन्त्र** पर चढाते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें,अर्थात एक बार मंत्र बोले एक बार अक्षत डालें,दूसरा मंत्र बोल कर दूसरी बार अक्षत डालें

ॐ सौंदर्यशक्तयै नम:

ॐ यौवनदात्रयै नम:

ॐऐश्वर्यप्रदायिने नम:

ॐदिव्य देहाय नम:

ॐ अप्सरायै नम:

ॐ सुगंधमोदिन्यै नम:

ॐ उर्वशी देव्यै नम:

ॐ अप्सरा शक्त्यै नम:

इसके बाद गुलाब पुष्पगुलाब इत्र,अगरबत्ती,दीपक,पान,खीर से अप्सरा का पूजन करें | गुलाब की माला समीप ही रखे रहिये साधना काल में जब भी अप्सरा का प्रत्यक्षीकरण होता है,तब अपनी माला पूर्ण करके उस अप्सरा को गुलाब की माला गले पहना दीजिए,वो आपको माला उतार कर आपके गलें में पहना देगी|जो इस बात का प्रतीक है की उसने आपका वरण कर लिया है,अब वो सदैव अप्रत्यक्ष रूप से आपके साथ रहेगी और जब भी आप चाहेंगे या उसका आवाहन करेंगे तब वो अपना प्रत्यक्ष साहचर्य आपको प्रदान करेगी | इस साधना में नित्य 51 माला मंत्र जप उस माला से किया जाता हैजो आपने स्वयं के लिए तैयार की है |इस मंत्र में **अप्सरा** के पहले आपको उस **अप्सरा का नाम** लेना है,जिसकी आप साधना करना चाहते हैं |

मनोवांछित अप्सरा सिद्धि मंत्र-

ॐ ह्रीं ह्रीं मम् मनोवांछितं....... अप्सरा सिद्धिं दर्शय प्रत्यक्षं भव ह्रीं फट्||

OM HREENG HREENG MAM MANOVAANCHHITAM....... APSARA SIDDHIM DARSHAY PRATYAKSHAM BHAV HREENG PHAT ||

यदि आप गोपनीय सूत्रों का प्रयोग करते हैं तो आप स्वयं ही इस साधना के द्वारा अपने जीवन में होने वाले परिवर्तन को देखेंगे ही,साथ ही अप्सरा का प्रत्यक्ष साहचर्य प्राप्त कर जीवन को पूर्णत्व पथ पर भी अग्रसर कर सकते हैं| यदि कभी साधना काल में अप्सरा का प्रत्यक्षीकरण ना हो पाए तो प्रत्यक्षीकरण हेतु आप **शक्ति कीलन विधान**और **इष्ट प्रत्यक्ष सिद्धि मंत्र** का प्रयोग अवश्य करें|

यन्त्र चित्र
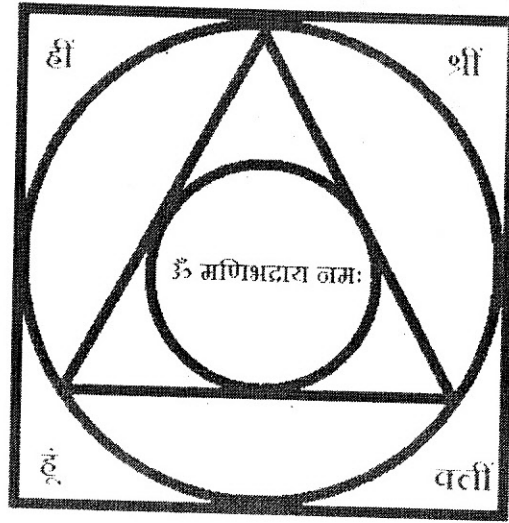
Fig no 1::मणि भद्र प्रसन्न यन्त्र
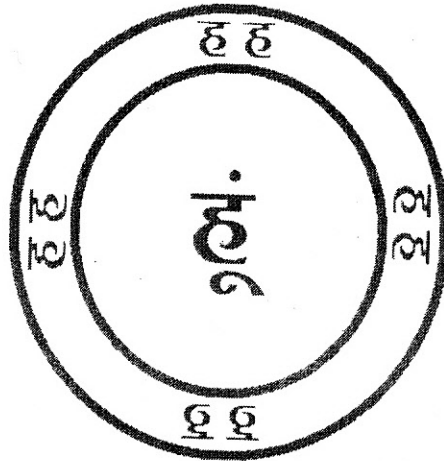
Fig no 2:: क्रोध बीज युक्त आकाश मंडल यन्त्र

अप्सरा यन्त्र
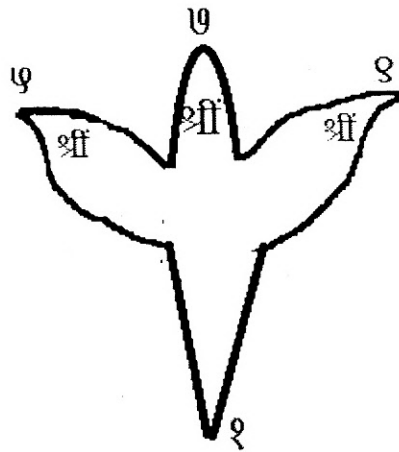
Fig no -3 Apsara yantra

रतिप्रिया धनदा यक्षिणी यन्त्र
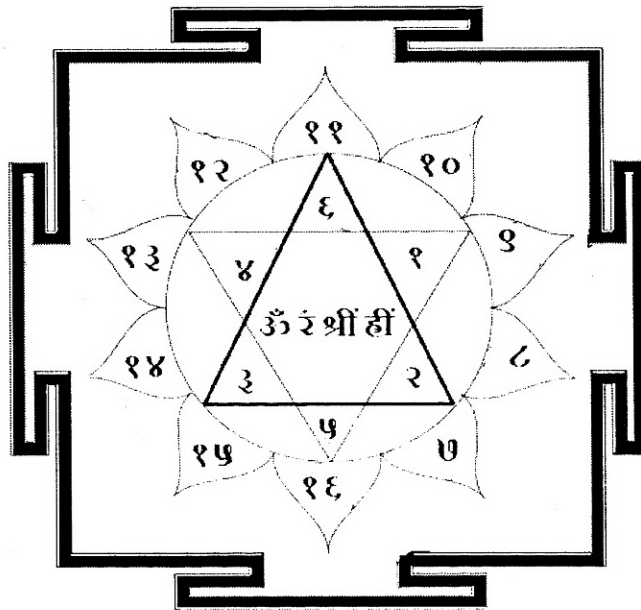
Fig no -4 Ratipriyaa dhanda ykshini yantra

अप्सरा/यक्षिणी यन्त्र,चित्र
अथवा मूल मंत्र
जैसे यहाँ पर धनदा मंत्र द्वारा
कीलन किया है मतलब इस
जगह पर बीच में धनदा मंत्र
लिखा गया था
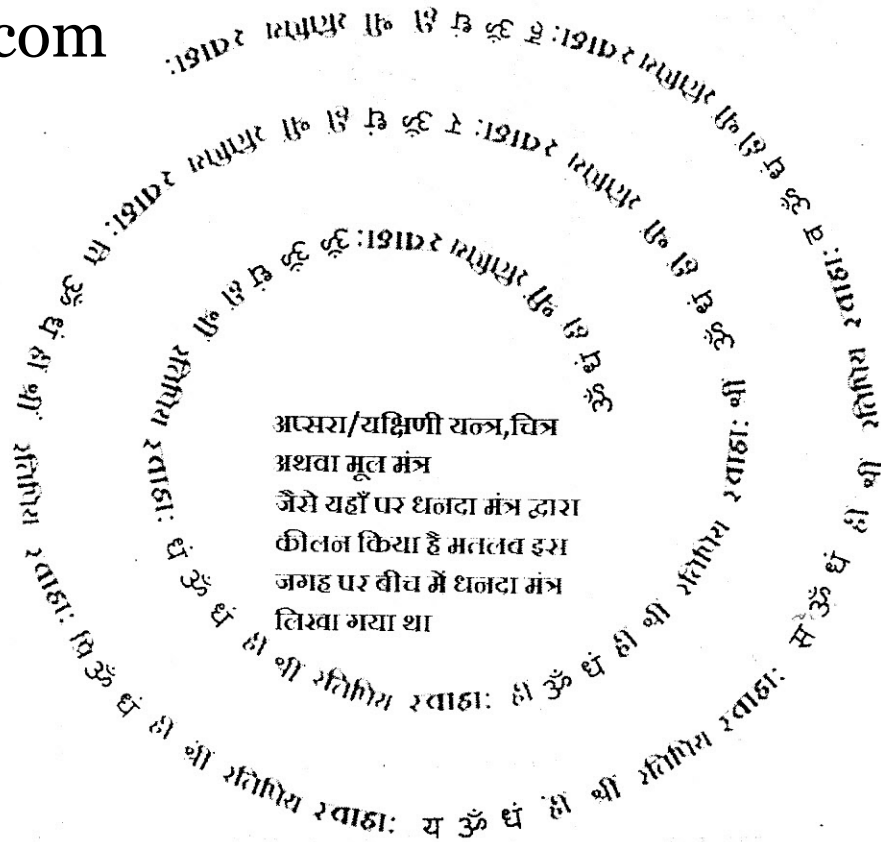
Fig no 5..shakti keelan yantra

साधना काल मे साधक के सामने साधना सामग्री को प्रदर्शित करता यह चित्र की किस सामग्री को कहाँ पर होना चाहिए .
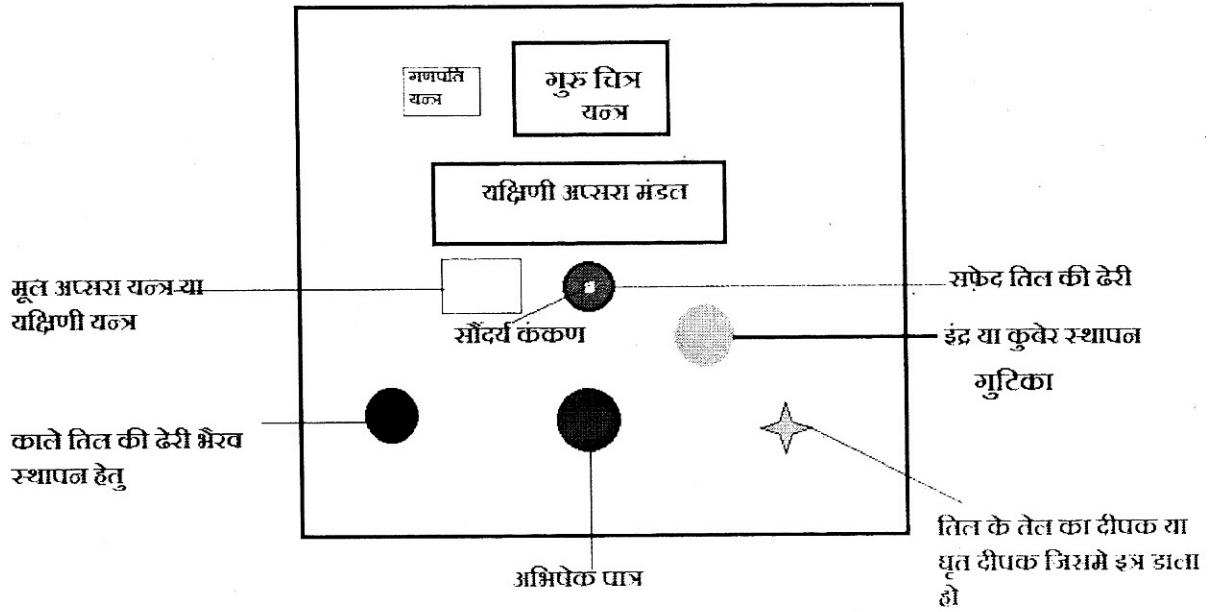
Fig no 6 – position of al l the sadhana article while doing sadhana

कठिन शब्द अर्थ

अप्सरा – देव वर्ग से सबंधित एक अति सौन्दर्यशाली सूक्ष्म देह धारी नारी

यक्षिणी – यक्ष वर्ग की सौंदर्य शाली एक सूक्ष्म देह धारी नारी

साधना – एक निश्चित क्रम पद्धिति अनुसार निश्चित दिन तक एक निश्चित नियमों का पालन करते हुये मंत्र जप

सदगुरुदेव – यह शब्द इस पुस्तक मे परमहंस स्वामी श्री निखिलेश्वरानंद जी (डा श्री नारायण दत्त श्रीमाली जी)के लिए उपयोगित हुआ हैं

मन्त्र – विशिष्ट अक्षरों से संयुक्त एक वाक्य जिसका अर्थ बहुत ही गहन और रहस्यमय तथा सूक्ष्म जगत से संपर्क मे सहायक

तंत्र – एक सुव्यवस्थित प्रणाली ,सामन्यतः मंत्र का एक निश्चित नियमनुसार और निश्चित पद्धिति के अनुसार जप की एक विधा जो तीव्रतम और निश्चित परिणाम देने मे समर्थ हैं .पर यह सावधानी भी अपेक्षित करती हैं .

यन्त्र – देव शक्तियां और उसके समस्त सहयोगी देव वर्गऔर उपवर्ग का प्रदर्शित करने वाला एक ज्यामितीय रेखांकन जो अपने आप मे उन सभी प्रतिनिधित्व ही नही बल्कि उन्ही का जीवित स्वरुप सा होता हैं .

मांत्रोक्त प्रक्रिया – मंत्रात्मक प्रक्रिया जो एक निश्चित परिणाम दें मे समर्थ तो हैं पर कितना समय लगेगा यह कह पाना और की इच्छित परिणाम ही प्राप्त होगा .थोडा संशय की स्थिति होती हैं .

तांत्रोक्त प्रक्रिया -यह प्रक्रिया निश्चित परिणाम वह भी पूरी निश्चितता के साथ देने मे समर्थ हैं पर अत्यधिक सावधानी और बल साहस और आत्मबल की अपेक्षा करती हैं .इसमें साधक का आत्म बल और सदगुरुदेव पर उसकी श्रद्धा और समर्पण मुख्य मूमिका निभाता हैं.

दक्षिण मार्ग-.साधना फिर वह चाहे सौम्य हो या उग्र पर उसके विधान आज की नैतिक और सामाजिक स्थिति के परिपेक्ष मे शुद्धता और सात्विकता से युक्त जहाँ शुचिताऔर शुद्धता का अपना ही स्थान होता हैं .

वाम मार्ग -मुख्यता अत्यंत ही खतरों से भरा औरअत्यंत तीव्रगति से गतिशील पर जहाँ पग पग पर पतन और हानि की सम्भावनाये कहीं आधिक और पञ्च मकरो का सेवन युक्त मार्ग .जो केबल इस मार्ग के अति योग्य आधिकारियों के लिए ही उचित हैं .

पञ्च मकार – मद्य , मांस मत्स्य ,मैथुन, मुद्रा साधारणतः रूप मे प्रतीक रूप मे वर्णित किये गए हैं .पर कुछ सम्प्रदाय मे ठीक उसी रूप मे उपयोगित होते हैं जो लिखा हैं पर हर पदार्थ का विधिवत शोधन होता हैं यह तथ्य बहुत कम को ज्ञात हैं.

मुद्राये -देव वर्ग से वार्तालाप करने की एक अद्भुत् प्रणाली.जिसको जानकर और साधना मे उचित जगह पर उपयोग करने से सफलता मानो सुनिश्चित सी हो जाती हैं .सारा पूजन विधान और सारी तांत्रिक क्रियाए केबल इसके माध्यम से भी पूर्ण हो सकती हैं एक अत्यंत ही रहस्यमय विधान

पंच भुतात्मकपांच महाभूत जिनसे यह सारा विश्व निर्मित हैं अग्नि ,जल ,वायु ,आकाश ,भू

चतुर्थ भुतात्मक- अग्नि, जल, वायु , आकाश ...इनमे भू तत्व नही होता हैं.

माला –जप माला जिसके माध्यम से किये गए जप का गिनना संभव हो पाता हैं साधरणतः 108 दाने की होती हैं पर गिनते समय इसे मात्र सौ दानो की ही माना जाता हैं शेष 8 दानो भूल चूक आदि के लिए होते हैं.अर्थात लगभग १०० दाने कम से कम तो होना ही चाहिए .

दिशा – यूँ तो चार ही दिशाओ का ज्ञान होता हैं पर इन चारो दिशाओ को विभाजित कर चार और दिशाए तथा ऊपर और नीचे की दिशा गिनने पर दस दिशाए मानी गयी हैं . और एक निश्चित दिशा मे एक निश्चित ऊर्जा का प्रवाह होता हैं अतः साधक का साधना मे निर्देशित दिशा की ओर मुख करने पर साधना मे सफलता कई कई गुण और बढ़ जाती हैं.

आसन –साधारणत: उनी कम्बल का आसन जो साधक को सीधे जमीन से बैठने को रोके और उनके मेरुदंड का निचला हिस्सा सीधे पृथ्वी के संपर्क मे आने से रोके.इस पर बैठ कर साधना करना एक अनिवार्य तत्व हैं जब तक कुछ ओर विशेष निर्देशित न किया गया हो .

रंग- रंग का साधना सफलता मे बहुत योगदान रहता हैं पुरुष को बिना सिले वस्त्र जिस रंग के किसी साधना मे निर्देशित किये गए हैं उसको पहिनना चहिये इसमें एक बिना सिली धोती और ऊपर एक उसी रंग की चादर का होना एक आवश्यकअंग हैं पर महिला साधिका अपने पुरे वस्त्र पहिन सकती हैं उसके लिए ये नियम नही हैं पर उन्हें सारे वस्त्र उसी रंग साधना मे निर्देशित रंग के ही होना चहिये .

वर्जित समय –महिला साधिकाओ को हर मास मे आने वाले विशेष दिन जैसे ही चालू हो ,अगर वह अपनी साधना मे हैं तो तत्काल अपनी साधना रोक दे और जितने भी दिन उनके यहाँ आवश्यक माने जाते हैं उतने दिन होने के बाद अपने सिर के बाल धोकर स्नान कर पुनः साधना को आगे करें ऐसे मानो की कोई व्यवधान आया ही नही .मतलब इन दिनों का कोई प्रभाव नही माना जायेगा .या यूँ कहूँ पहले वह दस दिन की साधना कर चुकी थी और यह विशेष दिन चालू हो गए तो मानलो पांच दिन बाद शुद्धता मानी जाती हैं तो छठवे दिन सिर के बाल खोल कर स्नान कर जब वह साधना करेंगी तो वह 11 वान दिन माना जायेगा .

दीक्षा – तन्त्र या मंत्र दोनों मे ही सदगुरुदेव तत्व का स्थान सर्वोपरि हैं . उनके विधिवत दीक्षा लेकर ही इस मे प्रवेश करना चाहिये .आप जहां भी योग्य व्यक्तित्व जिन पर आपको पूर्ण विश्वास और जो आपको मान्यताओ पर खरे उतर रहे हो , दीक्षा प्राप्त करें या तंत्र कौमुदी के अष्टम अंक मे एक साधना दी हुयी हैं उसके अनुसार साधना करके आप सदगुरुदेव जी से दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं , हालाकि यह स्वप्न या भावावस्था मे ही संभव हो पायेगी .

सिद्धाश्रम -हिमालय मे स्थित अति गोपनीय स्थान पर निर्मित यह अदृश्य आश्रम जहाँ पर जाना संभव नही हैं न ही जिसे साधारण चर्म चक्षुओ से देखा जाना संभव हैं,जहां पर आज भी महाभारत कालीन योगी और हज़ारो वर्ष आयु प्राप्त योगी निवासरत/साधना रत हैं ,जिनका उल्लेख कई कई बार आया हैं.इस आश्रम का उल्लेख तो ऋग्वेद और वाल्मीकि रामायण तक मे आया हुआ

संकल्प -प्रत्येक साधना के प्रारंभ मे किया जाना वाला एक अति आवश्यक विधान .जिससे साधक की सारी साधना काल मे की जाने वाली मंत्र जाप की ऊर्जा किस कार्य हेतु लगना हैं उसका स्पस्ट उल्लेख इसमें रखता हैं.इसमें जहाँ अमुक लिखा रहता हैं वह अपना या अन्य किसी का या अन्य निर्देशित बात का उल्लेख करना आवश्यक होता हैं.

जप समर्पण -हर साधना मे मंत्र जप के बाद की जाने वाली आवश्यक प्रक्रिया,,जिसके न किये जाने पर व्यर्थ मे साधक का अहम भाव बढ़ता हैं .और सफलता प्राप्ति मे देरी होती हैं.

रस युक्तता, प्रसन्नता, उत्साह, उमंग, स्नेह का समावेश एक पूर्ण संतुलित जीवन का अनिवार्य अंग है पर आज के आधुनिक जीवन में ये शब्द अर्थहीन से हो गए हैं, नीरस जीवन और सूखे हुये पेड़ में कोई अंतर नहीं, सौंदर्य साधना जिन्हें अप्सरा और यक्षिणी साधना भी कहा जाता है. उनको सिद्ध करना तो जीवन का गौरव है, जीवन की श्रेष्ठता है, जीवन का एक अर्थ है, आध्यात्म और साधना मार्ग में उन्नति के द्वार खोलना है, अपने भाग्य का मानो स्वयम निर्माण कर, जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर लेना, जो कि जीवन का हेतु है, लक्ष्य है. जीवन के चार आवश्यक पुरुषार्थों में से मर्यादित काम और अर्थ की पूर्णता तो सिर्फ अप्सरा और यक्षिणी साधना के माध्यम से ही संभव है, यद्यपि आज एक सामान्य व्यक्ति का मानस इन साधनाओं को हेय दृष्टि से, काम भाव प्रवर्धन की दृष्टि से देखता है, और आशंका ग्रस्त होता है कि कहीं ये उसको अपने वश में कर लेगी और उसका जीवन को निस्तेज बना कर, नष्ट करके ही छोड़ेगी. पर यह सब निराधार है सदगुरुदेव जी ने अनेकों बार यह समझाया कि जिस तरह जगदम्बा साधना है, महाविद्या साधना है, ये भी ठीक उसी तरह की, एक उच्चस्तरीय साधना है अगर साधक इन साधना के प्रति एक स्वस्थ चिंतन और भाव रख कर साधना करता है, पर इन साधनाओं के सूत्र और गोपनीय मंत्रात्मक, तंत्रात्मक विधान कहीं उल्लेखित नहीं है, न कोई इन गुप्त सूत्रों, अत्यंत आवश्यक विधानों, दुर्लभ तंत्र मुद्रायें पर कुछ भी कहने को तैयार होता है, इसके पीछे अनेक ज्ञात और अज्ञात कारण हो सकते हैं, इन सब अत्यंत दुर्लभ विधान के ज्ञात न होने के कारण साधकों को इन साधना में सफलता नहीं मिल पाती है ।

NPRU और तंत्र कौमुदी की ओर से प्रस्तुत ग्रन्थ इसी कमी को पूरा करने का एक ठोस प्रयास है।

प्रकाशक : NPRU Publication

****** Nikhil Para Science Research Unit ******

Yashika Offset # : 9755537042